भारत सरकार द्वारा नियुक्त हिन्दुस्तानी शार्ट हैन्ड व टाइपराइटिंग कमेटी द्वारा स्वीकृति

ऋषि-प्रणाली

हिन्दी-संकेत-लिपि

(हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, उत्तर प्रदेशीय उच्चतर माध्यमिक शिक्षा परिषद्, मध्य प्रदेशीय हाई स्कूल एजूकेशन बोर्ड, अ० भा० विद्वत्परिषद्, इन्दौर, चीफ इन्सपेक्टर आफ कार्मार्शियल स्कूल्स, बम्बई राज्य द्वारा स्वीकृति है ।)

—○—

(संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण)

आविष्कर्ता—
ऋषिलाल अग्रवाल
भूतपूर्व-प्रिंसपल, शीघ्र-लिपि-वर्ग
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन: प्रयाग ।

मुद्रक तथा प्रकाशक—
श्री विष्णु आर्ट प्रेस, इलाहाबाद ३.
१९५५

सप्तम् संस्करण के प्रति

ऋषि-प्रणाली हिन्दी संकेत लिपि पुस्तक के षष्ठम् संस्करण समाप्त होने के उपरान्त यह नवीनतम् संस्करण पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है। इस संस्करण के विलम्ब से प्रकाशित होने के कारण पाठकों को जिस कठिनाई का सामना करना पड़ा है उसके लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।

पाठकों की पिछली कठिनाइयों को ध्यान मे रखते हुये इस संस्करण के प्रकाशित करने से बड़ी सावधानी बरती गई है। पिछली लगभग समस्त त्रुटियाँ शुद्ध करके तथा उनके नवीन संकेत चित्र (ब्लाक) बना कर उन्हें भली भाँति सुधार दिया गया है। जितने शब्द-चिन्ह, संक्षिप्त चिन्ह तथा अन्य चिन्ह अशुद्ध, अपूर्ण एवं भ्रमात्मक रह गये थे उन्हें भी नवीन रेखा चित्र द्वारा बदल दिया गया है। छपाई की ओर विशेष ध्यान दिया गया है।

इसकी कुन्जी के इस संस्करण से पहिले ही प्रकाशित हो जाने के कारण उसमे आवश्यक सुधार नही किया जा सका है। कृपया पाठकगण स्वयं सुधार लेवें या आवश्यकता पड़ने पर हमसे लिखकर पूछ सकते हैं।

यद्यपि इस संस्करण को सर्वांगपूर्ण बनाने मे कोई बात उठा नहीं रखी गई है लेकिन फिर भी त्रुटियो का रह जाना सम्भव ही है। इसके लिये पाठकों से क्षमा प्रार्थी हूँ। उनसे हमारा यह नम्र निवेदन भी है कि यदि उन्हें इस पुस्तक के किसी भी अङ्क मे कोई त्रुटि जँचे तो वे हमें अपनी आलोचना तुरन्त ही लिख कर भेजने का कष्ट करें। हम उनके बहुत ही अनुग्रहीत होंगे। आधुनिकतम सुधार एवं सुझाव भी भेजने के लिये हम पाठकों के आभारी होंगे तथा अगले संस्करण को प्रकाशित करते समय उनका पूर्ण विचार रखा जायगा।

अन्त में हम अपने पाठकों को धन्यवाद दिये बगैर नहीं रह सकते तथा आशा भी करते है कि इसी भाँति पाठकगण हमेशा अपना सहयोग प्रदान करके अपनी उदारता का परिचय अवश्य देते रहेंगे।

ऋषिकुटी,
इलाहाबाद ३
रक्षा बन्धन १९५५

शेष कृपा
—प्रकाशक

प्रस्तावना

यदि कोई सम्भव को असम्भव और असम्भव को सम्भव कर सकता है तो वह परमात्मा ही है। बगैर उनकी अनुग्रह या कृपा के किसी कार्य का सुचारु-रूप से पूरा होना तो दूर रहा उसका आरम्भ भी नहीं हो सकता। इसलिये कोटानिकोट धन्यवाद है उस परमपिता परमात्मा को जिसकी ही असीम कृपा से आज मुझे इस "प्रस्तावना" को लिखने का अवसर मिला है।

एक अच्छी हिन्दी-शार्ट-हैंड प्रणाली का आविष्कार कर प्रचलित करने का विचार मेरे हृदय मे पहले-पहल सन् १६२२ ई० मे उठा था जब कि मै "लीगल-रीमेम्बरेंसर" के दफ्तर मे हेड-कलर्क के पद पर काम कर रहा था। उस समय अँग्रेजी शार्ट-हैंड मे मेरी अच्छी गति थी और निजी तौर पर कौंसिल में बैठकर कौंसिल के सदस्यो की स्पीचे भी लिखता था। मैं यह अकसर सोचता था कि आखिर जब विदेशी भाषा मे दी हुई वक्तृता कुछ नियमो के आधार पर सरलतापूर्वक लिखी जा सकती है तो कोई वजह नही कि भरपूर प्रयत्न किये जाने पर हिन्दी तथा हिन्दुस्तानी भाषा मे भी कोई ऐसी प्रणाली का आविष्कार न हो सके जिसके द्वारा हिन्दुस्तान की मुख्य-मुख्य भाषाओं में दी गई वक्तृताओं को लिखा अथवा पढ़ा जा सके। पर उस समय इस विचार को इस वजह से कार्य-रूप में परिणित न कर सका था कि पहले तो मुझे समय कम था और दूसरे इसकी माँग भी न थी।

उस समय मैं सरकारी नौकरी में था और यद्यपि उससे मुझे आमदनी भी अच्छी थी परन्तु फिर भी व्यापार की तरफ अधिक झुकाव होने के कारण मैं अक्सर यही सोचता था कि ऐसा कौन सा काम किया जाय जिससे नौकरी से पीछा छूटे। इसी समय हमारा दफ्तर इलाहाबाद से उठकर लखनऊ चला गया। लखनऊ मेरी वृद्धा माता जी को जरा भी पसंद न आया। उन्हे पुण्य सलिला गंगा का तट छोड़कर लखनऊ मे रहना बहुत ही कष्टकर प्रतीत हुआ। वह अक्सर कहती थी कि भगवान ने अन्त में कहा से कहा लाकर पटका। इन सब बातो ने हमारे विचार को और भी बदल दिया और हम ८ महीने की छुट्टी लेकर इलाहाबाद लौट आये यह सन् १९२४ की बात है।

अब हम सोचने लगे कि क्या करना चाहिए जिससे लखनऊ न लौटना पड़े। आखिर मुख्तारशिप और रेविन्यु-एजेन्टी की परीक्षा देने का निश्चय किया और ईश्वर की कृपा से उसमे सफलता भी मिली परन्तु उस समय असहयोग आन्दोलन जोरो पर था और लोग अदालत का बहिष्कार कर रहे थे, इसलिए उधर भी जाना उचित न समझा।

व्यवसाय की तरफ लड़कपन से ही झुकाव था, उसने फिर जोर मारा और इसी समय एक घनिष्ट सम्बन्धी के कहने-सुनने से मैंने एक प्रेस की स्थापना की और ईश्वर की कृपा से कुछ ही दिनों मे यह प्रेस प्रान्त के अच्छे प्रेसो मे गिना जाने लगा परन्तु अभाग्य या भाग्यवश यहां से भी हटना पड़ा।

इसी समय हिन्दी-शीघ्र-लिपि की पुकार सुनाई पड़ी, फिर क्या था, एक सरल-सुबोध तथा सर्वाङ्ग-पूर्ण प्रणाली में आविष्कार मे लग गया और उसके फलस्वरूप यह पुस्तक आपके सामने प्रस्तुत है।

काम प्रारम्भ करने के पूर्व कुछ समय इस बात के विचार करने मे व्यतीत हुआ कि पुस्तक किस ढङ्ग से लिखी जाय। एक बिलकुल नई प्रणाली चालू की जाय या जो अँग्रेजी की चालू प्रणालियाँ हैं उनमे से किसी एक को आधार मान कर आगे बढ़ा जाय। अन्त मे यही निश्चय किया कि जो १०० वर्ष का समय अँग्रेजी शार्ट-हैंड की प्रणाली को एक निश्चित स्थान पर लाने मे लगा है उसे व्यर्थ फेंकना कोई बुद्धिमानी न होगी और इसलिये अँग्रेजी की किसी प्रणाली को ही आधार मान कर काम किया जाय।

इस समय अँग्रेजी मे प्रस्तुत चार प्रणालियाँ अधिक चल भी रही हैं —१. पिटमैनस् २. स्लोन डुप्लायन ३. ग्रेग और ४ डटन। इसमे पिटमैनस् की ही ऐसी प्रणाली है जिसके जानने वाले अधिकाधिक संख्या मे मिलेगे और मेरे विचार से भी यह प्रणाली अधिक सरल तथा सम्पूर्ण है। इसके वर्णाक्षर भी हिन्दी के वर्णाक्षरो से अधिक मिलते-जुलते हैं। अत मैंने यही निश्चय किया कि पिटमैनस् प्रणाली के ही आधार पर पुस्तक तैयार की जाय परन्तु स्लोन डुप्लायन की मात्रा-प्रणाली कुछ सुगम मालूम पड़ी, इसलिए वर्णों के साथ ही मात्रा लगाने की प्रणाली को भी अपने नियमो मे सुविधानुसार समावेश करते गये। इस तरह पिटमैनस् और स्लोन डुप्लायन की सभी अच्छी बातो को ध्यान मे रखते हुए बिलकुल ही एक नई प्रणाली का आविष्कार करने मे सफल हुआ हूँ जिसके द्वारा हिन्दी-भाषा तथा उसकी व्याकरण के सभी आवश्यक अंगों की पूर्ति की गई है।

जो कुछ भी सहायता हमने अँग्रेजी प्रणालियो से ली है उसके लिये हमे स्वर्गीय सर आइजक पिटमैन और स्लोनडुप्लायन साहब के हृदय से कृतज्ञ है।

पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हमारी प्रणाली से हिन्दी शार्ट-हैंड सीखने वाला उर्दू, हिन्दी या हिन्दुस्तानी भाषा में बोली हुई वक्तृताओं को तो अच्छे तौर पर लिख ही लेगा पर यदि वह अँग्रेजी शार्ट-हैंड को सीखना चाहे तो उसे पिटमैनस् या ग्लोन डुप्लायन की पुस्तकों में दिये हुए केवल शब्द-चिन्ह, वाक्यांश, संक्षिप्त तथा विशेष चिन्ह को सीखना पड़ेगा। इनके सीखने से वह हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी के अलावा अँग्रेजी का भी एक कुशल शीघ्र-लिपि लेखक हो सकता है। उसे अँग्रेजी के शार्ट-हैंड सीखने समझने या याद रखने में कोई भी असुविधा या उलझन न होगी।

इसी तरह अँग्रेजी शार्ट-हैंड जानने वाले छात्र हमारी प्रणाली से हिन्दी, हिन्दुस्तानी या उर्दू शार्ट हैंड को बहुत ही शीघ्र सीख कर एक कुशल शीघ्र-लिपि-लेखक हो सकता है। हमारा अनुभव है कि इसके लिए अधिक से अधिक चार-पांच महीने का समय पर्याप्त होगा।

हमारा उद्देश्य यह रहा कि हमारी प्रणाली से सीखने वाला छात्र हिन्दी, उर्दू तथा हिन्दुस्तानी के अलावा अँग्रेजी भी कम-से कम १५० शब्द प्रति मिनट की गति से लिख सके।

इस प्रणाली का आविष्कार करते समय इस बात का भी पूरा ध्यान रक्खा गया है कि इन्हीं वर्णाक्षरों में थोड़ा बहुत परिवर्तन करने से भारत की अधिक से अधिक भाषाओं के लिए भी पुस्तकें तैयार हो सकें।

प्रणाली सर्वाङ्ग-पूर्ण है और सकेत-लिपि का कोई भी अंग छोड़ा नहीं गया। शब्द चिन्ह (Logograms), वाक्यांश (Phraseography), संक्षिप्त-संकेत (Contractions) हर एक विभाग में अधिकतर काम आने वाले शब्दो के विशेष संकेत, (Departmental Special out-lines), एक ही वर्णाक्षरो से उच्चारण किये जाने वाले शब्दो के लिये विभिन्न सकेत (Distinguishing out-lines) आदि यथा-स्थान दिये गये हैं।

अभ्यास भी विभिन्न विषयो पर इतने अधिक दिये गये हैं कि कोई भी छात्र इन दिये हुए अभ्यासो को ही पूर्ण-रूप से मनन तथा अभ्यास करने पर एक सिद्धस्थ-शीघ्र-लिपि लेखक हो सकता है।

यदि जनता ने इस प्रणाली को अपनाया तो मैंने यह दृढ़-निश्चय कर लिया है कि अब जीवन का शेष समय इस अंग को पूरा करने मे बिताऊँगा और इसी निश्चय के अनुसार उर्दू-मराठी गुजराती आदि संस्करण के अलावा हिन्दी मे संकेत-लिपि का एक वृहत् कोष भी तैयार कर रहा हू। यही नहीं अपना विचार तो इस विषय पर एक मासिक-पत्र भी निकालने का है पर यह सब उसी समय हो सकेगा जब कि जनता और उन महानुभावो का सहयोग प्राप्त होगा जो कि इस विषय को सर्वाङ्ग पूर्ण देखना चाहते है।

कृतज्ञता-प्रकाशन

इस वक्तव्य को समाप्त करने के पहिले हम उन श्रीमानो के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट किए बिना नहीं रह सकते जिनकी सहायता तथा सहानुभूति के कारण ही मै सफल हुआ हूँ। इनमे सर्व प्रथम हैं हमारे देश के पूज्य नेता स्वनाम-धन्य

श्रीमान बाबू पुरुषोत्तम दास जी टंडन । जिस समय मैंने अपने इस आविष्कार के बारे में आपसे चरचा की तो आपने बड़े ही उत्साह-वर्द्धक शब्दों मे इससे सहानुभूति प्रगट की और यह कहा कि यदि यह प्रणाली अच्छी जँची तो मै इसे "सम्मेलन" मे भी स्थान दूँगा। इसलिए मुझे आज्ञा मिली कि मैं अपनी यह प्रणाली उनके नियत किये हुये विशेषज्ञों को दिखाऊँ। उन विशेषज्ञों मे से एक थे श्रीमान् प्रोफेसर व्रजराज जी, एम० ए०। यह स्वयं भी शार्टहैंड की एक पुस्तक लिख रहे थे परन्तु फिर भी मेरी प्रणाली को जाँचने और समझने पर इन्होंने बड़ी दृढता से अपनी राय दी कि यह प्रणाली हिन्दी साहित्य-सम्मेलन ऐसी भारत मे प्रतिष्ठित संस्था के लिये सर्वथा योग्य ही है और फिर इसी निर्णय के अनुसार श्रीमान टंडन जी ने हिन्दी-साहित्य—सम्मेलन मे एक शीघ्र-लिपि-वर्ग खोलकर मुझे पढ़ाने की आज्ञा दी। इसके लिये मैं इन दोनों महानुभावो का हृदय से कृतज्ञ हूँ।

इसके पाश्चात् ही जब मै श्रीमान डाक्टर बाबूराम जी सक्सेना से मिला तो उन्होंने भी इस प्रणाली के बारे मे मेरे वक्तव्य को बड़े ध्यान से सुना और कुछ पुस्तक दी जिससे मुझे आगे अपने कार्य मे बड़ी ही सहायता मिली। इसके लिये मैं आपका बड़ा ही कृतज्ञ हूँ।

अब रही हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के हमारे परीक्षा-मन्त्री श्रीमान् दयाशंकर जी दूबे, एम० ए०, एल० एल० बी० की बात। इन्ही की देख-रेख मे इस कालेज का कार्य चल रहा है। ये समय २ पर जिन मृदु पथा सहानुभूति-पूर्ण शब्दों द्वारा मुझे उत्साहित करते रहे है और जिस तत्परता के साथ मेरी कठिनाइयो को दूर करते रहे है उससे तो मुझे यही

मालूम हुआ है कि किसी से कार्य लेने किसी संस्था को सुचारु तथा सुव्यवस्थित रूप से चलाने तथा संगठित करने की आप मे अद्वितीय प्रतिभा है। आपने मेरे कार्य मे बडी ही रुचि दिखाई है और इसके लिए मैं आपका हृदय से आभारी हूँ।

यहाँ पर मै श्रीमान् पं० लक्ष्मीनारायण जी नागर, बी० ए०, एल० एल० बी० का नाम लिये बिना नहीं रह सकता। आप समय-सयम—यहाँ तक की मेरे घर पर आ-आकर भी—मुझे अपने मीठे तथा सहानुभूति पूर्ण शब्दो से इस काम मे दृढ़तापूर्वक लगे रहने के लिये उत्साहित करते रहे और हर एक प्रकार की सहायता देने या दिलाने का आश्वासन देते रहे। इसके लिये मै आपका हृदय से कृतज्ञ हूँ।

अब रही डिजाइनिङ्ग और छपाई आदि की बात। पुस्तक के लिये जाने के बाद यह हमारे लिए एक समस्या सी हो गई थी कि आखिर इसकी छपाई किस तरह से कि जाय पर इस समस्या को हमारे सुहृद श्री रामकृष्ण जी जौहरी, मैनेजिग डाइरेक्टर, दी इलाहाबाद ब्लाक वर्क्स लिमिटेड और मित्र मि० मोहम्मद इस्माइल ने बड़ी ही कुशलता के साथ हल किया।

डिजाइनिङ्ग का खास श्रेय तो इस्माइल साहब को है। आप एक बडे ही कुशल चित्रकार और डिजाइनर है और आपने जिस धैर्य तथा सब्र के साथ इस काम को पूरा किया है इसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाय कम होगी। कभी २ मै जब ऊब कर किसी संकेत को पूर्ण-रूप से ठीक न बनने पर चालू करने को कहता था तो आप उसका तीव्र प्रतिवाद कर ऐसा न करने की सलाह देते थे।

इस पुस्तक की सारी छपाई ब्लाकों द्वारा की गई है। इन ब्लाकों के बनाने और पुस्तक के छापने का सारा श्रेय पूर्वकथित हमारे सुहृद जौहरी जी ही को है। मुझे यह आशा न थी कि यह ब्लाक कलकत्ते के एकाध कारखाने को छोड़कर कहीं और बन सकेंगे परन्तु जिस तत्परता, सुचारुता तथा शीघ्रता के साथ आपने इस काम को किया है उसे देख कर तो मुझे कभी कभी आश्चर्य होता था। इससे मालूम हुआ कि आपका इस विषय में बहुत ही अच्छा ज्ञान है और प्रबन्धक भी सर्वोत्तम है।

अन्त में मैं अपने मित्र पं० जयनारायण तथा शिष्य श्री हुकुमचंद्र जी जैन को भी बगैर धन्यवाद दिये नहीं रह सकता क्योंकि आप लोगों ने भी मेरा पुस्तकों, लेखों तथा अभ्यासों के गढ़ने आदि में बड़ी सहायता दी है। इति—

ऋषि कुटी
२५६—चक प्रयाग,
५ फरवरी, १९३८

—ऋषिलाल अग्रवाल

विषय-सूची

दूसरा भाग

तीसरा भाग

विद्यार्थियों से निवेदन

आवश्यक सामान —

लिखने के लिये एक बहा-नुमा लम्बा नोट-बुक होना चाहिये। जिसकी लाइने कम-से-कम $\frac{3}{8}$ इंच की दूरी पर हों। इसका कागज न ज्यादा चिकना और न खुरदुरा ही होना चाहिये। लिखने के लिये एक अच्छा लचीले निब वाला फाउन्टैन पेन होना चाहिये अन्यथा किसी अच्छी पेंसिल से भी लिखा जा सकता है। पेंसिल न कडी और न अधिक नरम ही होना चाहिए।

दूसरी बात है इन चीजों को विशेष-विधि से काम मे लाने की। लेखक को नोट-बुक को सामने लम्बाकार रख कर बैठना चाहिये जिससे शरीर का बोझ दोनों हाथों पर न पड़े। दाहिने हाथ से पेंसिल या कलम को पकड कर इस तरीके से कापी पर रखना चाहिये जिससे कि केवल नीचे की दो अंगुलियाँ मात्र कापी से छूती रहे और कलाई या हाथ कापी से बराबर ऊपर रहे जिसमे लिखने मे सरलता हो और थकावट न मालूम हो। बाएँ हाथ के अंगूठे और पहिली अंगुलियों से पृष्ठ का निचला-बांया हिस्सा पकडे रहे जिससे लिखते-लिखते ज्योंही समय मिले और पेज का अन्त सा हो चले त्योंही पन्ने को उलटने मे सुविधा हो। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पेंसिल या कलम को जोर से दबा कर न पकड़ा जाय क्योंकि ऐसा करने से हाथ जल्दी-जल्दी नहीं चलता और लिखने मे थकावट सी मालूम होती है।

अभ्यास

अच्छे सामान शीघ्र-लिपि लेखक को केवल सहायता मात्र दे सकते है पर उनके अभ्यास की कमी को पूरा नही कर सकते। संकेत लिपि के वर्णाक्षर ही ऐसे सरल ढङ्ग पर निर-धारित किये गये हैं कि जितने समय मे आप नागरी लिपि के 'क' अक्षर को लिखेंगे उतने ही समय मे संकेत-लिपि के 'क' अक्षर को कम से कम चार बार लिख सकते है। आवश्यकता केवल अभ्यास की है। अभ्यास इतना पक्का होना चाहिये कि वक्ता के मुँह से शब्द के निकलते ही आप उसको लिख लें, जरा भी सोचना न पड़े। इसके लिये पहले-पहल आपको केवल वर्णाक्षरों का अच्छा अभ्यास करना चाहिये, उलट पलट कर, चाहे जिस तरह बोला जाय आप उसे आसानी से लिख सकें। इसके पश्चात् आप पाठ के अंत मे दिये हुये अभ्यासो को लिखें, पहिले अलग अलग कठिन शब्दो को और फिर मिलाकर इतनी बार लिखें कि बोले जाने पर सरलता से लिख लें। दो-तीन बार तो धीरे-धीरे बोले जाने पर लिखे फिर चौथे या पाँचवे बार इस तरह बोले जाने पर लिखें कि वक्ता से आप तीन चार शब्द बराबर पीछे रहे जिससे आपको हाथ बढ़ाकर लिखने और वक्ता को पकड़ने का अभ्यास हो। अन्त मे बोलने वाले की गति आपके लिखने की गति से आठ-दस शब्द प्रति मिनट अधिक होनी चाहिये जिससे आप को और भी तेज हाथ बढ़ाने का अभ्यास हो यदि ऐसा करने मे कुछ शब्द छूट जाय तो कुछ हर्ज नहीं, आप लिखते जॉय और वक्ता को पकड़ने का प्रयत्न करते जॉय। नया पाठ लिखने पर जो नये शब्द या वाक्यांश आदि आवें उन्हे कई बार लिखकर ऐसा अभ्यास कर लें कि वह

लिखते समय आप ही आप हाथ से निकलने लगे, सोचना न पड़े।

दूसरी बात यह है कि आप कुछ न कुछ अभ्यास प्रतिदिन जहाँ तक हो सके एक निश्चित समय पर करें। ऐसा अभ्यास उस अभ्यास से अधिक लाभप्रद होता है जो बीच-बीच में अन्तर देकर किया जाता है चाहे वह अभ्यास अधिक ही समय तक क्यों न किया जाय।

इस संकेत लिपि के लिए यह परमावश्यक है कि अभ्यास एकाध बार तो स्वयं लिखकर किया जाय पर अधिकतर किसी अच्छे जानकार के बोले जाने पर ही नोट लिखा जाय, साथ ही साथ सभाओं, परिषदों और मीटिंगों में जा-जा कर बैठ जाय और वक्ताओं की वक्तृताएँ सुनी तथा समझी जाएँ क्योंकि लिखने के साथ ही साथ कानों का साधना भी बहुत ही आवश्यक है जिससे सुनी हुई बात फौरन ही समझ में आ सके।

इसके पश्चात् ही सभाओं में बैठकर निधड़क लिखने की योग्यता आ सकती है। घबड़ाना जरा भी न चाहिए क्योंकि घबड़ाने से सब काम बिगड़ जाता है और आप में लिखने की शक्ति रहते हुए भी आप कुछ न लिख सकेंगे।

हिंदी संकेत लिपि

ऋषि-प्रणाली

वर्णमाला

क ख ग घ

च छ ज झ

ट ठ ड ढ

त थ द ध

प फ ब भ

य ऊ ऊ नी र ऊ नी ल व

स नी ऊ नी ह म न

ऊ नी ड ऊ नी ढ़ ङ

वर्णाक्षरों की पहिचान

नोट —तीर का निशान लगाकर यह बताया गया है कि कौन रेखा कहाँ से आरंभ होती है और किस ओर जाती है।

जो रेखाये नीचे और ऊपर दोनों तरफ आती जाती हैं, उनमे जो रेखायें नीचे आती है उनमे नीचे (नी) और जो नीचे से ऊपर जाती हैं उनके नीचे (ऊ) लिख दिया गया है।

१ चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग, र (नी), ल (नी), म, ह (नी), ड (नी) और ढ (नी)—ये नीचे आने वाली रेखाएँ है।

२ य, र (ऊ), ल (ऊ) व, ह (ऊ), ड़ (ऊ) और ढ़ (ऊ)—ये ऊपर जानेवाली रेखाएँ हैं।

३. कवर्ग, म, न और ङ—ये आड़ी रेखायें है।

४. ल नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे दोनो तरफ एक ही प्रकार से लिखा जाता है।

५. कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग और पवर्ग के अक्षर, य, र (ऊ), व, ह, ड़ (ऊ) और ढ़—ये सरल रेखाये हैं।

६. तवर्ग, र (नी), ल, स, म, न, ड (नी) और ङ—ये वक्र रेखाये हैं।

७ कवर्ग के अक्षर - ये सरल और आड़ी रेखाएँ है।

८. म न और ङ ये वक्र और आड़ी रेखाएँ हैं।

९. बाये तरफ लिखे जाने वाला तवर्ग और स, तवर्ग और स का बायाँ समूह कहा जाता है।

१०. दाये तरफ से लिखे जाने वाला तवर्ग और म, तवर्ग और स का दायाँ समूह कहा जाता है।

वर्णमाला के चित्र मे तवर्ग और स के संकेतों को देखो।

(अ) तवर्ग समूह मे पहला संकेत 'त' बाये समूह का है और दूसरा संकेत दाएँ समूह का है। इसी तरह थ, द, और ध भी है।

(ब) 'स' का पहला अक्षर दाये समूह का है और दूसरा अक्षर बाये समूह का है।

संकेत-लिपि

जिन ध्वनि संकेतों द्वारा हम अपने विचार प्रगट करते हैं उसे भाषा कहते है। इनको सुनने के पश्चात् जिन संकेतो द्वारा हम इनको लिखते है उसे लिपि कहते है। सुनकर समझने और उसे लिखने मे बडा अन्तर होता है। जितनी जल्दी हम सुन सकते हैं उतनी जल्दी उन्हे हम अपने वर्तमान लिपि मे लिख नही सकते। इसी लिये यह आवश्यकता प्रतीत हुई कि कोई ऐसा उपाय ढूँढना चाहिए जिससे जितनी जल्दी हम सुनते है उतनी ही जल्दी हम लिख भी सके। इस नई लिपि को **"हिन्दी की संकेत लिपि"** कहते हैं।

वर्णमाला

भाषा वाक्य और शब्दो के समूह से बनी है जो अपना विशेष अर्थ रखती है। शब्द सुविधानुसार स्वर और व्यञ्जनो मे विभक्त किए गए हैं। हिन्दी की इस संकेत-लिपि की रचना भी इन्ही स्वर और व्यञ्जनो की ध्वनि के सहारे की गई है और विशेष चिह्नो से सूचित की गई है। पर जो सज्जन हिन्दी भाषा और उसके व्याकरण के अच्छे ज्ञाता नही हैं, उनके लिए इस लिपि का सीखना यदि असंभव नही तो कठिन अवश्य है।

व्यंजन

इस संक्षिप्त लिपि के व्यंजनो की रचना अधिकतर ज्योमित की सरल रेखाओ को लेकर ही की गई है पर जब सरल रेखा से काम नही चला तब वक्र रेखाओं का सहारा लिया गया।

याद करने के लिए नीचे से चलना चाहिए। प्रथम चित्र मे पहली रेखा से कवर्ग दूसरी रेखा से चवर्ग, तीसरी रेखा से टवर्ग और चौथी रेखा से पवर्ग सूचित किया गया है। तवर्ग सरल रेखा से न मानकर वक्र रेखा मे माना गया है। इसका कारण यह है कि हम अंग्रेजी शार्ट हैंड (पिट्स प्रणाली) के ध्वनि संकेतो को भी जहाँ तक हो सका है साथ साथ लेकर चले हैं जिससे कि अंग्रेजी के पिट्समन प्रणाली का जानने वाला यदि हिन्दी-शार्ट-हैंड सीखना चाहे तो उलझन मे न पड़े। अंग्रेजी मे P को 'प' की रेखा से सूचित किया है, इसलिए हमने इस 'प' को क, च, त, म या न मानना उचित नहीं समझा यद्यपि ऐसा करना बहुत ही सरल था।

तवर्ग और स के लिए दाएँ और बाएँ दोनो तरफ से एक ही प्रकार की वक्र रेखा ली गई है जैसे—नीचे चित्र १ और २ मे दिए गए हैं।

( ) / \

१ २

श और स में इसलिए भेद नही किया गया कि मुहावरे से पता लग जाता है कि कहाँ पर स की आवश्यकता है और कहाँ पर श की। पर यदि कहीं पर विशेष भेद करना हो तो स के चिन्ह को काटने से श पढ़ा जायगा।

आज की हिन्दुस्तानी भाषा में उर्दू की बहुलता अर्थात् उर्दू और फ़ारसी शब्दों के प्रयोगाधिक्य के कारण ज़ का उपयोग भी अधिक होता है जैसे सज़ा, मर्ज़ी आदि शब्दो मे। वहाँ पर इसी बाये और दाये 'स' के संकेत को सुविधानुसार मोटा कर लेना चाहिए।

'ष' का उच्चारण या तो 'ख' होता है या 'श' और इन दोनों अक्षरों के लिए संकेत निर्धारित किये जा चुके है इसलिये 'ष' के लिए स्वतंत्र रूप से कोई दूसरा संकेत निर्धारित नहीं किया गया।

'ण' का काम भी 'न' से लिया गया है। शब्द को उच्चारण करते ही यह पता लग जाता है कि शब्द को 'ण' मे लिखना चाहिए कि 'न' मे। इसलिए 'ण' के लिए भी कोई दूसरा संकेत निर्धारित नहीं किया गया है।

शेष फुटकर वर्णाक्षर अलग अलग रेखाओ मे निर्धारित किए गये हैं। पाठकों को इनका पहले भली-भाँति अभ्यास कर लेना चाहिए ताकि संकेत सुचारू रूप मे बनने लगे।

बाँये और दाहिने संकेत सुचारुता के विचार से किए गये है। कहाँ किसको लिखना चाहिये वह आगे समझाया जागया।

रेखाओं के बारीक और मोटे होने पर, उनके ऊपर मे नीचे और नीचे से ऊपर लिखे जाने पर या उनके सरल और कटे होने पर खूब ध्यान रखना चाहिए और इनका इतना अच्छा अभ्यास करना चाहिए जिससे लिखते समय ध्वनि संकेत सुचारु रूप से आप ही आप लिखे जा सके।

तीन का निशान लगाकर यह पहले ही बताया जा चुका है कि कौन रेखा कहाँ से आरम्भ होती है और किस ओर जाती है। लिखते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि जो रेखा जहाँ से आरम्भ होती है वहीं से आरम्भ की जाय और फिर ऊपर, नीचे या आड़ी जिस तरफ लिखी है उसी तरफ लिखी जाय।

इस लिपि को बड़ी सावधानी से खूब बनाकर लिखना चाहिए यहाँ तक कि एक एक वर्ण इतना लिखा जाय कि वह पुस्तक मे दिये हुये वर्णा से मिलते जुलते मालूम हो। इसमे जल्दी करने से लिपि कभी भी आगे चलकर फिर न सुधरेगी और परिणाम यह होगा कि इस तरह जल्दी २ लिखने वाले लेखक महाशय कभी भी कुशल हिन्दी-संकेत-लिपी के ज्ञाता न हो सकेगे।

विचार से देखिये तो वर्णमाला के पंचवर्गों के जितने अक्षर हैं, उनका प्रथम अक्षर तो मूल-अक्षर है पर उसके बाद का दूसरा अक्षर उसी मूल अक्षर मे 'ह' लगा देने से बना है। इसी तरह तीसरा अक्षर मूल अक्षर है और चौथा अक्षर उसी मे 'ह' लगा देने मे बना है। जैसे क वर्ग का 'क' प्रथम अक्षर है और इसके बाद का अक्षर 'ख' क मे ह लगाकर बना है। च के बाद छ=च+ह, ज के बाद झ=ज+ह। इसलिए इनके लिए एक

ही संकेत रखे गये हैं लेकिन भिन्नता प्रकट करने के लिए मूल अक्षर काट दिये गये है जैसे—क के संकेत को काटकर ख और प के संकेत को काट कर फ आदि बनाया गया है।

तवर्ग और म, दाएँ तथा बाएँ और कुछ ध्वनि संकेत ऊपर नीचे दोनों तरफ से लिखे गए हैं। उनको दोनो तरफ लिखने का अभ्यास करना चाहिये। यह इसलिये किया गया है कि वर्णों के मिलाने मे असुविधा न हो और लिपि के प्रवाह मे अड़चन न पड़े जैसे (चित्र नीचे) — न ल पहले तरीके से लिखना सुविधा-जनक है, दूसरी तरह से लिखने मे प्रवाह मे रुकावट पड़ती है और संकेत भी शुद्ध और साफ नही बनते।

१ २
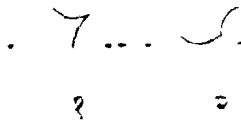
अभ्यास करते समय संकेतो की लंबाई और मुटाई पर भी विशेष ध्यान रखना चाहिये। पाठको को संकेतो की एक नियमित लम्बाई मान ही कर लिखना चाहिये क्योंकि वह आगे चलकर देखेगे कि किसी संकेत के नियमित रूप मे छोटे या बड़े होने पर भी दूसरा अर्थ हो जायगा। संकेतो की नियमित लम्बाई करीब .३ इंच की होनी चाहिये पर पाठकगण अपनी सुविधानुसार कुछ छोटी-बड़ी कर सकते है लेकिन संकेतो के रूप और बनावट मे समानता होनी आवश्यक है।

च और र के सकेतो को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। च ऊपर से नीचे और र नीचे से ऊपर को लिखा जाता है। झुकाव विचार मे च लम्ब से ३५ अंश की दूरी पर नीचे की

तरफ और र आधार की सरल रेखा से ३५ अंश ऊपर की तरफ लिखा जाता है। जैसे चित्र नीचे
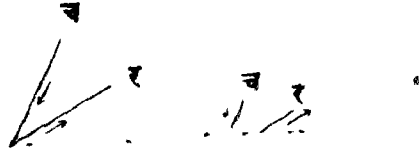
—०—

अभ्यास—१
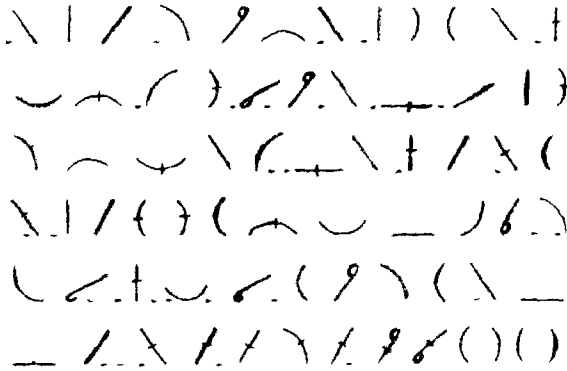
अभ्यास—२

[जो अक्षर दाएँ बाएँ दोनों तरफ से लिखे जाते हैं, वे दोनों तरफ लिखे जायँ]

१.	प	क	म	न	म	र	स	ह
२	ल	ख	ट	द	श	ग	म	ज
३.	ख	ह	र	न	म	फ	त	ह

४, य र म ल स त ब ध
५, ग ड़ च घ ज झ ठ छ
म न य र
६ ड थ ध फ भ व श ढ

अभ्यास—३

[नोट—जो अक्षर दाएँ या बाएँ से लिखे जाते हैं उनको दोनों तरफ से लिखो]

केवल पहला अक्षर लिखो —

१ कल, खल, घर, गरम, शरम, पर, तर
२ खटक, मटक, चटक, टपक, तड़प, भड़क, लपक, ड
३ ठठक, छत, जमघट, झटपट, तट, थरथर, नमक, करन
४ दमक, धमक, नमक, पकड़, फरस, वट, मन
५ बरतन, भरम, मन, रट, लम्प, शरम, धरम,
६ सरपट, हम, वह, ट, ड, ट,

अभ्यास—४

केवल अंत के अक्षर लिखो :—

१ कलक, मख, पग, जड, करघ, रह
२ पढ, मच्छर, गाय, रट, उलझ, जप, पत
३ नभ, मचमच, जगत, नभ, रटन, लव, जतन
४ कुश, सहज, कल, कलम, कब, कुछ, अड
५ नथ, काठ, पद, बोझ, कलम, नम, नव
६ लाभ, परब, तरह, रहम, यव, पट, पत

व्यंजनों का मिलाना

१. व्यंजनो को मिलाते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कलम कागज से न उठे और जहाँ पर पहिले व्यंजन का अंत हो वहाँ से दूसरा व्यंजन आरम्भ हो। जैसे—चित्र नीचे
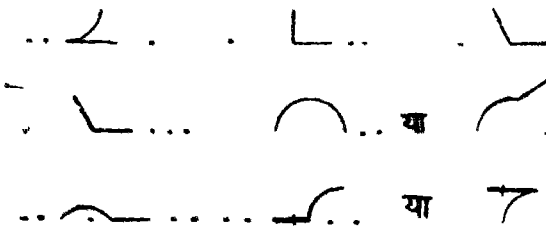
२. जब दो व्यंजन मिलते हैं तो इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि नीचे आने वाला या ऊपर जाने वाला पहला अक्षर कापी की रेखा पर हो। दूसरे अक्षर लाइन से कहीं भी आ सकते हैं। जैसे—चित्र पृष्ठ २८
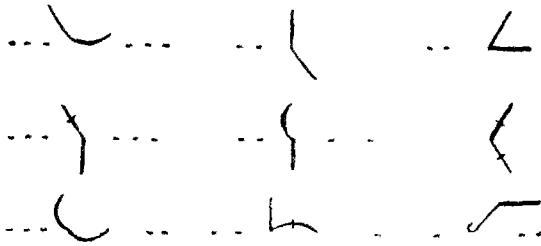
३. कवर्ग के अक्षर, म, न और ङ नीचे या ऊपर आनेवाले अक्षर नहीं हैं बल्कि आड़े अक्षर हैं। इसलिए यदि ये अक्षर पहले आते हैं और इनके बाद नीचे आनेवाले अक्षर आते हैं तो ये रेखा के ऊपर लिखे जाते हैं। जैसे—चित्र नीचे

४. कवर्ग के अक्षर, म, न और ङ के बाद ऊपर जानेवाले अक्षर आवे तो ये अक्षर कापी की रेखा पर से आरम्भ होते। जैसे—चित्र पृष्ठ २९
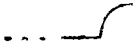
कल　　　　कव　　　　नव

५. अगर इन अक्षरो के बाद नीचे आने वाले अक्षर या ऊपर जानेवाले अक्षर नही आते बल्कि दूसरे आड़े अक्षर आते हैं तो भी ये अक्षर रेखा ही पर से आरम्भ होते हैं। जैसे—चित्र नीचे

मन　　　　नक　　　　कन
गन　　　　नम　　　　मक

६. परन्तु जब दो या दो से अधिक आड़ी रेखाएँ एक साथ आवे और उनके पश्चात् नीचे आनेवाली रेखा आवे तो आड़ी रेखाएँ कापी की रेखा के ऊपर लिखी जाती है। जैसे—चित्र नीचे
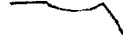
म न प　　　　क न प

७. पहले अक्षर का स्थान निर्धारित होने के पश्चात् दूसरे अक्षर उससे मिलाकर लिखे जाते हैं। उनके स्थान का विचार नही किया जाता है। जैसे—चित्र पृष्ठ ३०
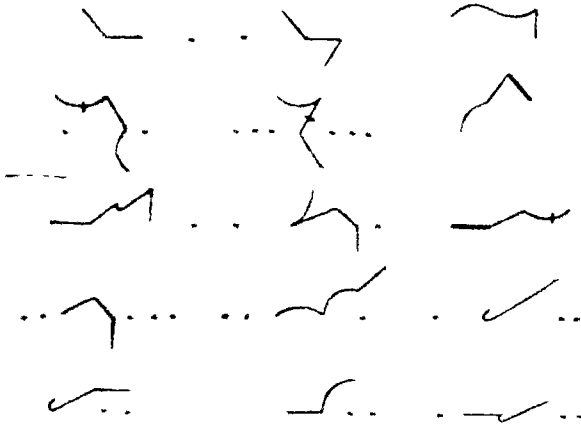
पक	पकज	मनट
मपत	नभब	लरब
करवट	सरपट	गरम
रपट	मलर	वर
वक	कल	कव

८, वक्र अक्षर इस तरह मिलाकर दोहराए जाते हैं। जैसे—
चित्र नीचे
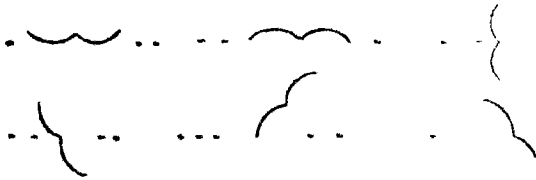
नन	मम	तन
सस	लल	रर

९, सरल अक्षर इस तरह दोहराए जाते हैं। जैसे—चित्र नीचे
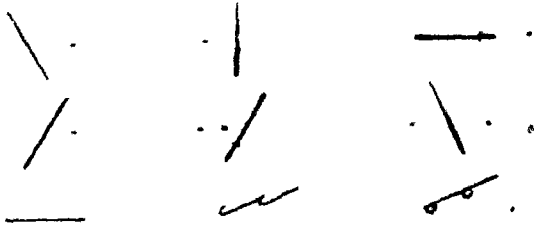
१०, चवर्ग के अक्षर और र (ऊ), ड़ (ऊ) जब दूसरे अक्षर से मिलते है तो ऊपर और नीचे की लिखावट से पहचाने जाते है। च और र के कोण का विचार नहीं रह जाता। चवर्ग के अक्षर नीचे को और र (ऊ) और ड (ऊ) ऊपर को लिखे जाते है जैसे—चित्र नीचे
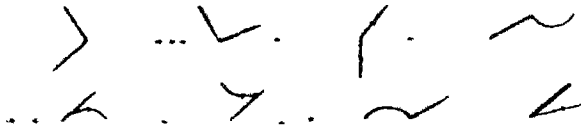
११. स दायाँ-बायाँ और ल, र नीचे-ऊपर नियमानुसार लिखे जाते है । नियम आगे मिलेगा ।

अभ्यास—५

[नोट—नीचे लिखे जानेवाली र, ह, ल और दाएँ तरफ लिखे जानेवाले तवर्ग और स तथा कटे हुये म, न मोटे अक्षरों मे लिखे गये हैं,

१	मम,	गम,	जग,	गज,	छक,	चट
२	ढक,	कट,	डक,	झट,	डग,	ठग,
३	थन,	नन,	नग,	तन,	छन,	फन,
४.	जब,	तब,	कब,	कम,	मन,	बन
५	घर,	चल,	हल,	रख,	जल,	यह
६.	मटर,	शहर,	टहल,	जलन,	भजन,	पटक
७	रपट,	झपट,	रटन,	पहन,	महक,	नट

८	कटहल,	मलमल,	हलचल,	खटमल,
९.	बरतन,	टमटम,	पनघट,	रहपट

१०. घर पर चल। बक बक मत कर। जल भर।

च और र का विचार कर अक्षरों को मिलाओ—

११. रच, मर, पर, चरन, मरन, परच,

१२ जहर, मगर, हर हर कर, चरन पर सर धर।

—०—

स्वर

स्वर-ध्वनि का उच्चारण बिना किसी दूसरे ध्वनि की सहायता के आप ही आप हो सकता है। यहाँ स्वर दो प्रकार से लिखे गये हैं। एक मोटे बिन्दु और मोटे डैश से और दूसरा हल्की बिन्दु और हल्के डैश।

मोटे बिन्दु और मोटे डैश से लिखे जाने वाले स्वर

अ	. .	|	आ	– –	(१)
ए	. ⁝ .	|	ओ	– ⁚ –	(२)
ई	. ⁚ .	|	ऊ	– . –	(३)

उपरोक्त स्वरो को याद करने के लिये निम्न वाक्य याद कर ले। इसमे सहायता मिलेगी।

अ	रे	री	।	मा	चोर	कूद	(गया)
अ	ए	ई	।	आ	ओ	ऊ	×
१	२	३	।	१	२	३	

उपरोक्त चिन्हों को ध्यान से देखने पर प्रतीत होगा कि एक ही एक चिन्ह मे तीन २ स्वर या मात्राएँ नियत की गई है परन्तु इस विचार से फिर वे अलग अलग स्वरो का बोध करे उनके लिये अलग अलग स्थान नियत किये गए है। एक ही चिन्ह एक स्थान पर एक स्वर को, दूसरे स्थान पर दूसरे को और तीसरे स्थान पर तीसरे स्वर को सूचित करता है। इन्हे स्वर के स्थान कहते है। यह प्रथम, द्वितीय और तृतीय तीन स्थान होते हैं। किसी रेखा के प्रारंभिक स्थान को प्रथम, बीच के स्थान को द्वितीय और अंत के स्थान को तृतीत स्थान करते है। यह स्थान जिस जगह से अक्षर लिखे जाते हैं प्रारंभ होते है। इसलिए ऊपर से नीचे लिखे जाने वाले अक्षरो मे ऊपर से आरंभ होते है। जैसे—नं० १ चित्र नीचे
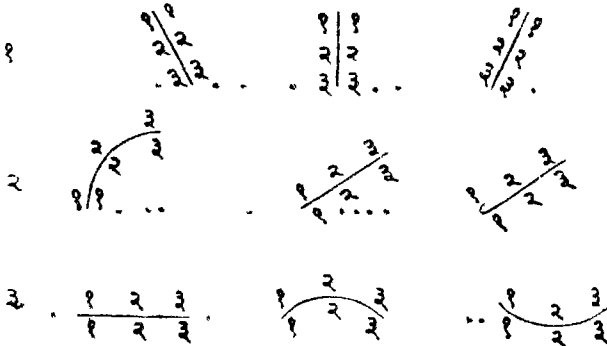
नीचे से ऊपर लिखे जाने वाले अक्षरों मे नीचे से आरम्भ होते है। जैसे—नं० २ चित्र ऊपर

आडे अक्षरो मे बाएँ से दाएँ तरफ पढ़े जाते हैं। जैसे नं०—३ चित्र ऊपर

इन स्वरों को व्यञ्जनाक्षर के पास लिखना चाहिए लेकिन इतना पास न लिखे कि अक्षरों से मिल जाय।

ऊपर के छः स्वर मोटे विन्दु और मोटे डैस से सूचित किए गए हैं। डेश व्यञ्जन के पास किसी भी कोण में रखा जा सकता है पर लम्बाकार अधिक सुविधाजनक और भला मालूम होता है। जैसे—चित्र नीचे

या   या

या   या

जब स्वर ऊपर या नीचे आनेवाले व्यञ्जन के पहले रखा जाता है तो पहले पढा जाता है। जैसे—चित्र नीचे

आज	आठ	आप	ईंट
आशा	अथ	आर	ला

जब स्वर ऊपर जानेवाले या नीचे आनेवाले व्यञ्जन के बाद रखा जाता है तो व्यञ्जन के पश्चात् पढ़ा जाता है। जैसे—चित्र नीचे

जब स्वर व्यञ्जन की आड़ी रेखा के ऊपर रखा जाता है तो पहले और नीचे रखा जाता है तो बाद मे पढा जाता है। जैसे—चित्र नीचे

मोटा बिन्दु प्रथम स्थान मे अ द्वितीय स्थान मे ए और तृतीय स्थान मे ई की ध्वनि देता है। जैसे—चित्र नीचे

[नोट—अ की मोटी बिन्दु व्यञ्जन के बाद प्रथम स्थान मे नही रखी जाती क्योंकि 'अ' की मात्रा व्यञ्जन मे मिली रहती है।]

इसी तरह मोटा डैश प्रथम स्थान मे आ द्वितीय स्थान मे ओ और तृतीय स्थान में ऊ की ध्वनि देता है। जैसे—

आप	ओप	ऊप
आज	ओज	ऊज
बा	बो	बू
आत	ओत	ऊत

हल्की बिन्दु और हल्के डैश से लिखे जाने वाले स्वर

तुम छ स्वर ऊपर पढ़ चुके हो । अब यहाँ छ स्वर और दिये जाते है। पहले के स्वर मोटी बिन्दु और मोटे डैस से बने थे। यह छ स्वर हल्की बिन्दु हल्के डैस से बने है।

ऐ	: .	आइ या आई	- - -	(१)
औ		अं	- : -	(२)
इ		उ	- • -	(३)

याद करने के लिये नीचे के वाक्य याद कर लो—

ऐ	औरत	इस	।	आइत	अंचल	उलट
ऐ	औ	इ	।	आइ	अं	उ
१	२	३	।	१	२	३

इन स्वरों का प्रयोग पहले छः स्वरों के अनुसार ही होता है और इनके स्थान भी उन्हीं के अनुसार नियत किये गए हैं।

ऊपर के स्वरों को देखने से प्रतीत होगा कि ऋ, अः और लृ को कोई स्थान नहीं दिया गया। इनकी कोई आवश्यकता न पड़ेगी। बीच में अ की मात्रा को जहाँ विद्यार्थीगण आवश्यक समझे अपने मन से लगा लें। जैसे दुख। यह 'दुख' लिखा है। यदि विद्यार्थीगण चाहें तो इसे 'दु ख' पढ़ें या लिखें। यदि विसर्ग अंत में आवे तो शब्द-संकेत के अंत में एक हल्का डैश लगाने से विसर्ग पढ़ा जायगा। ऋ का काम 'र' से और लृ का काम 'ल' में 'र' लगाने से निकल जाता है।

अनुस्वर 'अं' यदि व्यंजन के पहले या बाद में अकेला आवे तो यथा-विधि अपने द्वितीय स्थान पर रखा जायेगा।

जैसे—चित्र नीचे
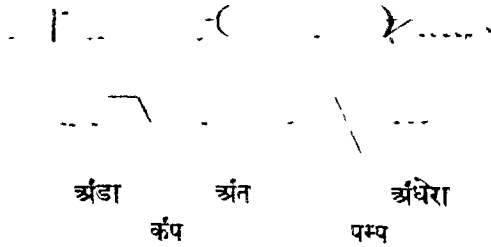
[चन्द्र बिन्दु और अनुस्वार विद्यार्थीगण अपनी समझ से लगा लें।]

यदि अनुस्वार व्यंजन के पहले या बाद किसी स्वर के पश्चात् आवे तो उसी स्वर के स्थान पर एक हल्का शून्य रख देना चाहिए। जैसे--चित्र नीचे

ऑच ऑत ओंठ

इससे यह मालूम होगा कि जहाँ पर यह शून्य रखा गया है उस स्थान का स्वर सानुनासिक है। स्थान के विचार से स्वर को मालूम कर लेना चाहिये। जैसे-ऑत(ऊपर के चित्र मे नं० २ से सूचित शब्द) मे चूँकि शून्य प्रथम स्थान मे रखा है, इसलिये इससे पता चलता है कि यहाँ कोई प्रथम स्थान का स्वर है। प्रथम स्थान के स्वर अ, आ ए और आइ होते है सब स्वरो मे अनुस्वार मिलाकर पढो, किससे शब्द ठीक बनता है। ॲत, एंत, आइंत ठीक शब्द नहीं बनते है। इसलिए ऑत शब्द ठीक है।

पर यदि आरंभ मे और स्पष्टता चाहो तो शून्य के नीचे उस स्थान की मात्रा भी लगा दो। जैसे—चित्र नीचे

सॉप चोंच सींच पूँछ

सींच और पूँछ अगले नियम 'दो व्यंजन के बीच स्वर के स्थान' के अनुसार दिया गया है।

——o——

[मोटी बिन्दु और मोटे डैम के प्रयोग के अभ्यास]

अभ्यास—६
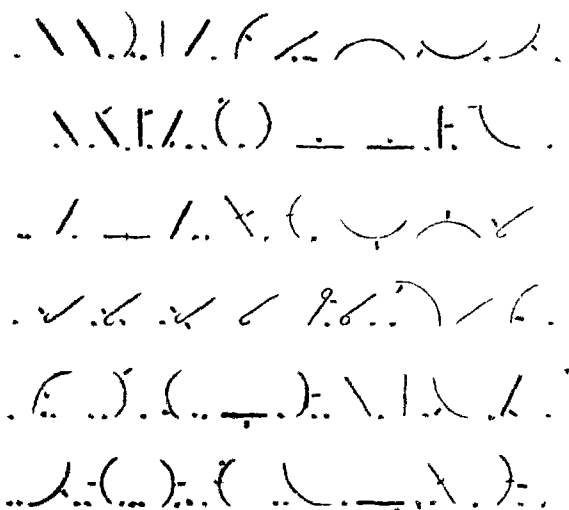
अभ्यास ७

१ पा, फी, ला, लो, ने, से, का, को, जी
२ आम, ओम, आज, ईश, ओस, ईख, ऊख, खा
३ राम शाम, राम, काम, बाप, साख, रात
४ रमेश, साधक, कामा, लेता, लोटा, मोटा, आराम
५. बटेर, पालतू, मेला, देखा, आग, पानी, रानी
६ छोटा, गरमी, रोशनी, अनाज, आदमी,
७ गाय. घास, बाली, आराम, आजादी, रेत

———

दो व्यञ्जनों के बीच स्वर का स्थान

स्वर जब दो व्यञ्जनो के बीच मे आता है तो प्रथम और द्वितीय स्थान पर तो यथा नियम पहले व्यञ्जन के पश्चात् रखा जाता है पर जब तीसरे स्थान पर आता है तो पहले व्यञ्जन के तीसरे स्थान पर न रख कर आगे वाले व्यंजन के तृतीय स्थान के पहले रखा जाता है, क्योकि यह सुविधाजनक होता है। ऐसा करने से पहले व्यंजन के बाद तृतीय स्थान और उसके आगेवाले व्यंजन के पहले के प्रथम स्थान में उलझन न पड़ेगा

कभी कभी ऐसा भी होता है कि दो व्यंजनो के मिलने के कारण तीसरे स्थान की जगह नही बचती। इन्ही बातों को दूर करने के लिये उपरोक्त नियम रखा गया है।

हिन्दी मे एक अक्षर के बाद एक ही मात्रा लगती है। इस-लिए अगले व्यञ्जन के पहले किसी मात्रा के आगे का डर नहीं रहता। छोटी 'इ' की मात्रा नागरी-लिपि मे यद्यपि अक्षरो के पहले लगती है पर उसका उच्चारण अक्षरो के बाद ही होता है, इसलिए संकेत लिपि मे वह मात्रा भी व्यञ्जन के बाद ही रखी जाती है। ऐसे शब्दों मे जहाँ मात्रा के बाद कोई दूसरा स्वर आता है, जैसे—'खाइये' 'पिलाइये' आदि। [यहाँ ख और ल मे आ की मात्रा के पश्चात् दूसरा स्वर 'इ' है] ऐसे स्थान मे किस तरह लिखना चाहिये इसका नियम आगे चलकर मिलेगा।

इसलिए तृतीय स्थान की मात्रा न० १ की तरह लगानी चाहिए—नं० २ की तरह नहीं । चित्र नीचे
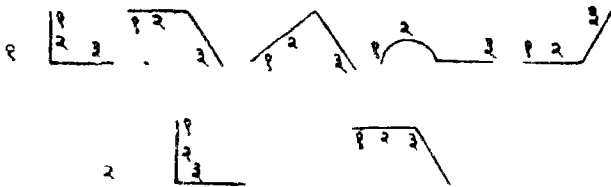
ऊपर के चित्र न० २ के पहले संकेत में यह नहीं मालूम होता है कि तृतीय स्थान 'ट' के बाद है या 'क' के पहले तथा दूसरे में 'क' के बाद है या 'प' के पहले। इसलिए इस प्रकार मात्रा लगाने से पढ़ने में बड़ी उलझन होती है।

इसलिए तृतीय स्थान की मात्रा नं० १ की तरह ही लगाना ठीक है।

अभ्यास—८
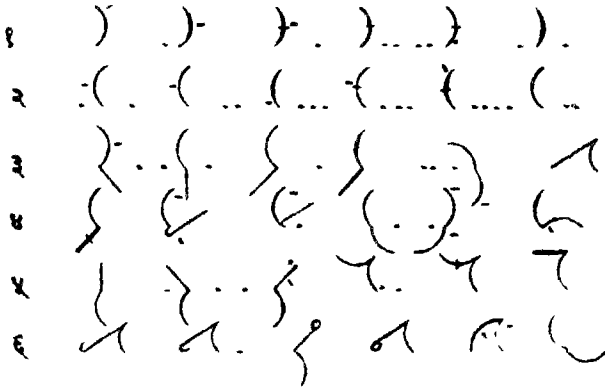
[कृपया कुन्जी मे इससे मिला कर अभ्यास शुद्ध कर लें । कुन्जी छपने के बाद सुधार हाने के कारण कुन्जी मे यह अशुद्ध रह गया है ।]

—o—

अभ्यास—९

१	अत	उत,	दो,	नो,	तू,	था,	थी, थे
२	ईद,	ऊद,	ओदा,	दी,	देना,	लेना,	दाम
३	पथ,	पद,	दर,	मद,	दम,	दाम	नाता
४	थापी,	थकना,	थोक,	तट,	तट,	ताप,	माप
५	तवा,	तहा,	दह,	दाम,	आदमी		
६	थन,	धान,	धमकी,	तनकी,	देवता		
७	पोस्ता,	रास्ता,	दासता,	पातक,	नाती		

———

तवर्ग के दाएँ-बाएँ अक्षरों का प्रयोग

तवर्ग के अक्षर दाएँ-बाएँ दोनों तरफ से लिखे जाते हैं। जैसे—चित्र नीचे

त थ द ध

तवर्ग के दाहिने व्यंजन के बाद पवर्ग, कवर्ग, र (नी० ऊ०) स (दा) और ल (ऊ) आता है। जैसे—चित्र नीचे

तप दक धर (नी)

तर (ऊ) तम (द) तल (ऊ)

तवर्ग से बाएँ व्यंजन के बाद चवर्ग र (नी), स (बा), ह (ऊ० नी०), न, व, य, और ल (ऊ० नी०) आता है जैसे—चित्र नीचे

या

बच   तर (नी)   तम (बा)   तह (ऊ)
नह (नी)   नन   तव   तय
तल (ऊ)   या   तल (नी)

टवर्ग, तवर्ग और म के पहले तवर्ग दाहिने और बाएँ दोना तरफ से लिखा जाता है। जैसे—चित्र नीचे

तट   तत   दम

इसी तरह चवर्ग, स (दा), ह (नी) और म के बाद दाहिनी तरफ से लिखा जाने वाला तवर्ग आता है। जैसे—चित्र नीचे
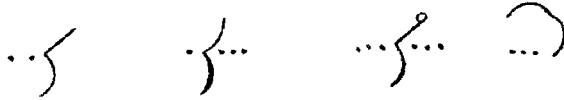
चत   स (दा) द   ह (नी) त   मत

कवर्ग,पवर्ग य, र (ऊ), न, ल (ऊ), व, स (बा), ह (ऊ), तथा म के बाद बाईं तरफ लिखा जानेवाला तवर्ग आता है। जैसे—चित्र नीचे
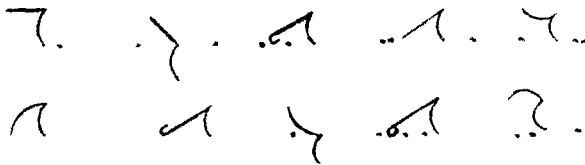
कत   पत   यत   र (ऊ) त   नत
लत   वत   स (ब) त   ह (ऊ) त   मत

टवर्ग, तवर्ग और म के बाद तवर्ग दोनो तरफ लिखा जाता है जैसे—चित्र नीचे

टत   तत

जब कभी तवर्ग किसी शब्द मे अकेला व्यन्जन हो और मात्रा उसके पहले आवे—चाहे उस व्यन्जन के बाद भी मात्रा हो तो बायाँ और यदि मात्रा व्यन्जन के बाद आवे—पहले नहीं—तो दाहिना संकेत लिखा जाता है। जैसे—चित्र नीचे

आध   ऊद   दे   दो   आधा   थे
था   थी   ईद   ओदा   आथ   थू

इस दाएँ बाएँ की लिखावट को समझने के लिए यह अत्यावश्यक है कि आप इस सांकेतिक लिपि के तत्वो को ठीक तौर पर समझ ले। पहली बात धारा प्रवाह की है। संकेतों को आगे की तरफ बिना किसी रुकावट के लिखा जाना चाहिये। इसमे तनिक भी रुकावट हुई या आगे से पीछे लौटना पड़ा कि वक्ता बहुत दूर आगे निकल जायगा और फिर उसको पकडना बहुत कठिन हो जायगा।

दूसरी बात संकेतों की सुचारुता की है। यह लिपि बहुत तेजी के साथ लिखी जाती है। इसलिए यह आवश्यक होता है कि तेजी मे लिखे जाने पर भी संकेतो की सुचारुता न जाय।

दाएँ बाएँ व्यंजन इन्हीं असुविधाओ को हटाने के लिए लिखे गये है जिससे प्रवाह से पीछे न लौटना पड़े और व्यन्जनो के बीच ऐसे स्पष्ट कोण जहाँ तक हो सके बनते रहे कि शीघ्राति-शीघ्र लिखे जाने पर भी साफ पढ़े जायँ। जैसे—चित्र नीचे

१ . . या . . २ . . . या .

१. ऊपर नं० १ मे सत दाएँ बाएँ दोनो तरफ से लिखा गया है। सत (दा) रुकावट पड़ती है और सकेत भी अच्छा नही बनता। इसलिए सत (वा) लिखा जाना चाहिए।

२. इसी तरह नं० २ मे तच दायाँ बायाँ दोनों तरफ से लिखा गया है तच दाहिने मे कोई कोण नहीं है और यदि जरा भी छोटा रह गया तो पढा भी न जा सकेगा और केवल त (दा) रह जायगा। इसलिए त (वा) लिखा जाना चाहिये।

अभ्यास १०
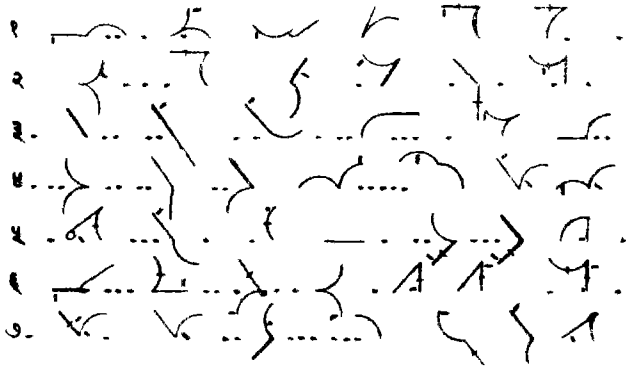
अभ्यास—११

१	टीम	अफीम	नूट	मूल	मेल	मीर
२	झूठ	मूसा	बूरा	मूत	नीला	हीरा
३	मीन	सेठ	मीरा	चीनी	टीन	रीम
४	खूब	टीका	खीरा	काली	धीमा	पीर
५.	कीला	पेटी	मूली	मोटी	पीठ दान	काम

६. मेरी टीम जीत गई।

७ पेड के मूल में पानी दे।

८. मूसा भाग गया।

९. वह अफीम खाकर मर गया।

१०. सेठ जी ने मीठे मीठे आम खाये।

स्वर

(लोप करने का नियम)

इनका वर्णन पहले ही विशेष रूप से किया जा चुका है पर यदि ये सब स्वर व्यंजनो मे लगाये जायँ तो बहुत समय लगेगा और संकेत लिपि का मतलब ही जाता रहेगा। इसलिए इन स्वरों को एक-एक करके छोड़ने की आदत डालना चाहिए। इसके लिए नीचे के नियमो को ध्यानपूर्वक पढ़ना तथा समझना चाहिये। सारे पिछले नियम भी इसी सिद्धान्त पर बनाये गये है।

१. देखो—(१) जब शब्द के आदि या अन्त मे स्वर आता है तो व्यंजन पूरा लिखा जाता है। जैसे नं० १ चित्र पृ० ५०

१ पान पानी मान मानी खटक खटका

२. 'र और ल' के ऊपर और नीचे लिखे जाने से भी पता लगता है कि स्वर पहले या आखीर मे है। जैसे—नं० २ चि० पृ० ५०

२. पार पैरा पूरा अर्क कूड़ा कौड़ी आलम लाख

३. शब्द-चिन्ह लाइन के ऊपर, लाइन पर और लाइन को काट कर बगैर मात्रा के लिखे और पढ़े जाते हैं। जैसे—नं० ३ चित्र पृ० ५०

३. यदि - दाम दे - देना - देता दिन - दी - दिया

४ इन नियमों से स्वर न रखे जाने पर भी कम से कम इतना तो पता चल ही जाता है कि आदि और अन्त मे कोई स्वर हैं। अब कौन सा स्वर है इसके लिये निम्न नियमो पर ध्यान दीजिए।

१

२

३

४ (१) (२) (३)

५

६

७

८

९

जिस तरह स्वरों के तीन स्थान प्रथम, द्वितीय और और तृतीय होते है और स्थानानुसार उनके उच्चारण भी भिन्न-भिन्न होते हैं, उसी प्रकार शब्द भी ध्वनि के अनुसार तीन स्थान पर लिखे जाते है और वह शब्द के प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान कहे जाते हैं। प्रथम स्थान लाइन के ऊपर द्वितीय स्थान लाइन पर और तृतीय स्थान लाइन को काट कर समझा जाता है। जैसे—नं० ४ चि० पृ० ५०

५. एक शब्द मे उसकी मात्रा ही इस बात को निश्चय करती है कि वह शब्द कहाँ लिखा जाय। यदि शब्द मे प्रथम स्थान की मात्रा मुख्य है तो शब्द प्रथम स्थान पर यदि द्वितीय स्थान पर यदि तृतीय स्थान की मात्रा मुख्य है तो शब्द तृतीय स्थान पर और यदि तृतीय स्थान की मात्रा मुख्य है तो शब्द तृतीय स्थान पर लिखा जाता है। यदि शब्द मे कई मात्राएँ हो तो उस शब्द की खास दीर्घ उच्चरित मात्रा ही के लिहाज से स्थान निर्धारित किया जाता है। जैसे—नं० ५ चि० पृ० ४०

५. पार पोर पीड़
टाल टोल टूल
माल मोल मील

६ यदि एक से ज्यादा दीर्घ उच्चरित मात्रा हो तो पहले मात्रा के लिहाज से स्थान निर्धारित किया जाता है। जैसे—नं० ६ चित्र पृ० ५०

६. पाल पोलो पीला
राठा रीठा रूठा
कीला काला बाला बोलो
चेला चील

७. आड़ी रेखाएँ लाइन को काट कर नही लिखी जाती इसलिए उनके द्वितीय और तृतीय दोनो स्थान लाइन ही पर होते है। जैसे—नं० ७ चित्र पृ० ५०

७. मामा	मेम	काकी	काका	
कूक	काम	कौम	सान	सोना

८. जो शब्द शब्द-चिन्ह मे बनते है उनमे पहला शब्द-चिन्ह अपने ही स्थान पर लिखा जाता है। जैसे—नं० ८ चि० पृ० ५०

८. बातचीत बहुत दिन

९. जो अर्द्ध-संकेतो से शब्द लिखे जाते हैं उनमे भी तीन स्थान नही होते। पहला स्थान लाइन के ऊपर और दूसरा तीसरा स्थान लाइन पर होता है। जैसे—नं० ९ चि० पृ० ५०

९. पटरा	पटरी	चटका	चटकी
मटका	मटकी	पटका	पटकी
लटका	लटकी	रटना —	आदि

---

१. ऊपर लिखे जाने वाले दुगने व्यजनो के तीनो स्थान नियमानुसार होते हैं। जैसे—नं० १ चि० पृ० ५३

१. थंतर लेडर लतर

२. पर यदि यह दुगने व्यंजन नीचे लिखे जाने वाले हैं तो इनका केवल एक स्थान लाइन को काट कर होता है। जैसे—नं० २ चि० पृ० ५३

२. प्रिंटर बंदर पातर

३. बिना मात्रा वाले शब्द तीसरे स्थान पर लिखना चाहिए जैसे—नं० ३ चित्र नीचे

३. पल पक — आदि

४. बहुत से ऐसे शब्द है जिनमे मात्रा न लगाने से अर्थ के समझने मे बड़ी कठिनाई पड़ती है। उनमे जो मात्रा स्थान विशेष से न समझी जा सके उसे लगाना चाहिए। जैसे—नं० ४ चित्र नीचे

४. आरी ऊबा एवं ओढ़ा ओला

५. जब 'ल या र' के ऊपर और नीचे लिखने से स्वर ठीक ठीक पता न लगे तो मात्रा को लगानी चाहिये। जैसे—नं० ५ चि० नीचे

५. आरता आरती आराम आरजू

६. ऐसे स्थानों पर भी मात्रा लगा सकते है—

(१) जहाँ एक ही शब्द संकेत से कई शब्द बनते है।
जैसे-नं० ६ चि० पृष्ठ ५३

६. माला मैला माली मोल मेल
मेला मूल मील

(२) जहाँ शब्द नया और कई बार का लिखा न हो।

(३) जहाँ जल्दी मे शब्द संकेत ठीक स्थान पर न या अशुद्ध लिखा गया हो।

(४) जहाँ कोई बिल्कुल नया विषय लिखा जा रहा हो।

(५) जहाँ संदर्भ आदि का ठीक ठीक पता न चल सके।

कटे हुए व्यंजनों का प्रयोग

इसी तरह प, फ, क, ख, च, छ आदि मे भी आप देखते हैं कि एक ही संकेत दोनो व्यंजनो मे आते है, भिन्नता केवल इतना ही है कि दूसरा व्यंजन कटा हुआ होता है। इस संकेत-लिपि के तेज लिखनेवाले इस फ, ख, छ आदि को तभी काटते है जब उनका काटना अनिवार्य हो जाता है अन्यथा एक ही संकेत से काम निकाल लेते हैं जैसे—

'पुल' को 'फुल' न पढ़गे 'फूल' पढ सकते है पर वाक्य मे यदि यह कहा जाय कि 'वह पुल पर जा रहा था' या 'गाड़ी पुल पर जा रही थी', तो मुहावरे से पढ कर यह न कहा जायगा कि 'वह फूल पर जा रहा था पर यदि 'ख, छ' आदि कटे हुए व्यंजन शब्द के आरम्भ या अन्त में आवे तो एक छोटा सा

हल्का सीधा डैस-चिन्ह वर्ण-संकेत के साथ मिलाकर इस प्रकार लिखे। जैसे—नं० १ चि० नीचे

१. आदि मे — ख ठ छ फ थ म न

अंत मे — ख ठ छ फ थ म न

फटा इम्तहान

१

२

३ . पर

यदि आरम्भ मे 'र या ल' और अंत मे 'त या न' का आँकडा लिखा हो और कहीं भी उपरोक्त आँकडा लगाने की जगह न मिले तो यह चिन्ह इस प्रकार लिखना चाहिये जैसे—न० २ चित्र ऊपर

२. पंक्ति १ — खर ठर छर फर थर थर नर मर

" २ — खन ठन छन फन थन थन नन मन

" ३ — खत ठत छत फत

जिन वक्र अक्षरो के अंत मे 'न' का ऑकडा लगता है उन ऑकड़े मे भी यह सूचित करने के लिए कि वे कटे अक्षर है—एक हल्का छोटा सा डेस लगा सकते हैं। इससे 'त' के ऑकडे का भ्रम न होना चाहिये क्योंकि 'त' ऑकडे का डेश मे और इस कटे हुए अक्षरों के डैस मे बडा अंतर होता है ओर वक्र रेखा के 'त' वाले ऑकडे का डेश सीधा लगता है वक्र रेखा मे कटे हुए अक्षरो का डेश तिरछा ऑकडे मे मिला हुआ लगता है। वक्र रेखाओ मे 'त' ऑकडे का डेश लगाने के बाद फिर यह डैश नही लगता। जैसे—नं० ३ चि० पृ० १६०

३, मत नत - पर - नन मन

इनके अलावा बीच मे कटे हुए अक्षर आवे और अर्थ मे विशेष अंतर पडने का डर हो तो उस अक्षर को काट देना चाहिए।

आगे के अभ्यासो मे अब इन्ही नियमो को काम मे लाया जायगा और सिवा अत्यावश्यक मात्राओ के दूसरी मात्रा न लगायी जायँगी।

[नोट इस पाठ मे कुछ उदाहरण आगे दिये हुए पाठो के अनुसार है जैसे व्यन्जनो का दूना करना या आधा करना आदि के नियम सो जब पाठक गण उस पाठ को पढ लेगे तब वह स्वयं समझ मे आ जायगा]

स और म—न का प्रयोग

(१) स

तवर्ग के समान स भी दाएँ-बाएँ और म, न ऊपर नीचे लिखा जाता है। इनके नियम ये हैं।
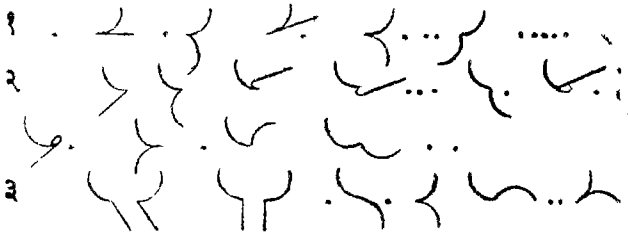
दाहिने स के बाद कवर्ग, तवर्ग (दा), र (ऊ०-नी०) और स (दा), आता है। जैसे—नं० १ चित्र ऊपर

स क   स त (दा)   स र (ऊ)   स र (नी)   स स (दा)

बाएँ स के बाद चवर्ग, तवर्ग (बा), य, व, स (बा), ह (नी०-ऊ०), ल (नी०-ऊ०) और न—ये सब आते हैं।
जैसे—नं० २ चित्र ऊपर

स च   स त (बा)   स य   स व   स स (बा) स ह (ऊ)
स ह (नी)   स ल (नी)   स ल (ऊ)   स न

पवर्ग, टवर्ग, र (नी) और म के पहले दायाँ-बायाँ दोनों स आता है। जैसे—नं० ३ चित्र ऊपर

स प   स ट   स र   स म
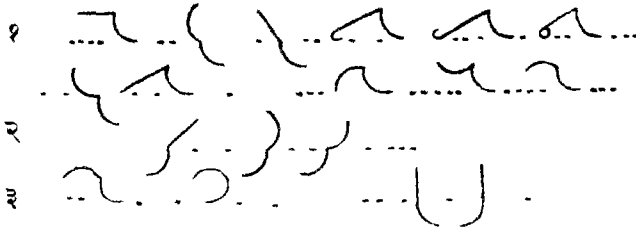
इसी तरह कवर्ग, नवर्ग, पवर्ग, य, व, ह (ऊ), म (बा) र (ऊ), ल (ऊ) और म, न के बाद बायाँ 'म' आता है। जैसे—नं० १ चित्र ऊपर

कम त (बा) म पस यम वस ह (ऊ) म
म (बा) स र (ऊ) स ल (ऊ) स नस मम

चवर्ग, नवर्ग (दा), स (दा) के बाद दायाँ स लिखा जाता है। जैसे नं० २ चित्र ऊपर

च म त (दा) म म (दा) म

म और टवर्ग के बाद 'स' दोनो तरफ लिखा जाता है। जैसे-नं० ३ चित्र ऊपर

म स ट स

जब कभी यह 'स' किसी शब्द मे अकेला रहता है और मात्रा पहले आती है—चाहे उस व्यंजन के बाद भी मात्रा हो—तो बायाँ और यदि मात्रा बाद मे आती है—पहले नहीं—तो, दायाँ 'स' लिखा जाता है जैसे—चित्र नीचे

आशा (बा), आस (बा), उषा (बा), शा (दा), आदि

(२) म, न
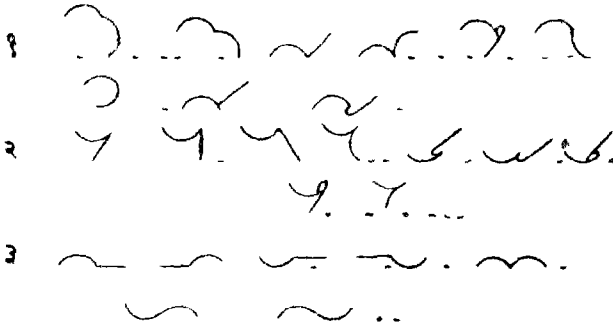
१. म या म (कटा) अर्थात् न के बाद तवर्ग, र (नी-ऊ) ल (ऊ), ह (नी), स (बा), य और ब आता है। जैसे—नं० १ चित्र ऊपर

मत (दा), मर (नी), मर (ऊ), मल (ऊ), मह (नी), मम (बा) मस (द) मय मव

२. न या न (कटा) अर्थात् म के बाद चवर्ग, टवर्ग, पवर्ग, तवर्ग (बा), य, व, ह (ऊ-नी) और ल (नी) आता है। जैसे—नं० २ चित्र ऊपर

नच, नट, नप, नन (ब), नय, नव, नह (ऊ), नह (नी), नल (नी)

३. कवर्ग, म, न और ङ — न और म के पहले और बाद दोनों तरफ आते है। जैसे—नं० ३ चित्र ऊपर

मक कम नक कन मम नम मन
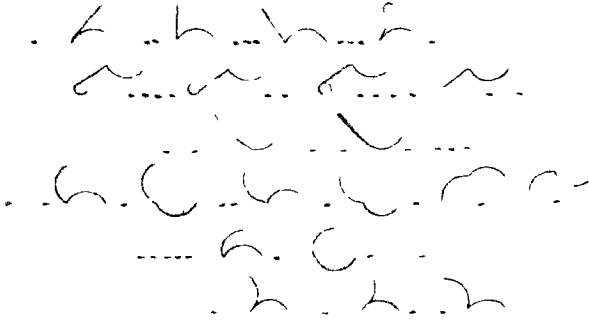
१–२. नीचे आनेवाले सरल रेखाओं के बाद म या म (कटा) अर्थात् न आता है और ऊपर जानेवाली सरल रेखाओं के बाद न या न (कटा) अर्थात म आता है। जैसे—नं० १-२ चित्र ऊपर

चम टम पम ह (नी) म
यन वन ह (उ) न र (ऊ) न

३. पवर्ग के बाद न भी आता है। जैसे—नं० ३ चित्र ऊपर

पन वन

४. तवर्ग (वा), स (बा), ल (ऊ-नी) के बाद म और न, दोनों आते हैं जैसे—नं० ४ चित्र ऊपर

त (बा) म-त (बा) न, म (बा) म-स (वा) न, ल (ऊ) म-ल (ऊ) न
ल (नी) म ल (नी) न

५. तवर्ग (दा), स (बा) और र (नी) के बाद म या म (कटा) अर्थात् न आता है। जैसे—नं० ५ चित्र ऊपर

त (दा) म, स (दा)म, र (नी) म

अभ्यास—१२

१.	सा	सी	ओस	ईश	आश	शो
२.	अस	सू	शू	आशा	से	सी
३.	पस	घस	दस	धस		रस
४.	मस	नस	सप	सद		सन
५.	पेशा	सानो		सीना		रोश
६.	रोना	खोना		काना		नाना
७.	नाम	मान		हम		नप

अभ्यास—१३
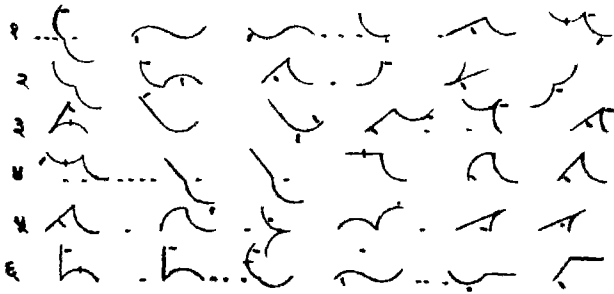
शब्द-चिन्ह

हर एक भाषा में बहुत से ऐसे शब्द हैं जो प्राय हर एक वाक्य में काम आते है। इनके लिए संकेत-लिपि में एक प्रकार के संक्षिप्त-चिन्ह निर्धारित कर दिये गए है। ऐसे चिन्हों को "शब्द-चिन्ह" कहते है।

शब्दों में लिंग और वचन के विचार से जो परिवर्तन होते हैं उनका शब्द-चिन्हों पर कोई प्रभाव नहीं पडता बल्कि वे मुहावरे से पढ लिए जाते हैं।

ये शब्द-चिन्ह सुविधानुसार रेखा के ऊपर, रेखा पर या रेखा को काटते हुए बनाये जाते हैं।

अभ्यास—१४

१ एक दो। २. ऊपर, पे, पर में
३ है, हो हैं, हूँ ४ का को
५ कि, की के

[नोट—पूर्ववत् नीचे लिखे जानेवाले ल और र मोटे अक्षरों में लिए गये हैं।]

१.	आटा	माड	दवा	पीता	मानना	हरा	बोरा
२	सीता	बाबू	बाजा	लाल	काट	गोद	नाता
३	रोते	लेखा	आगम	चाची		मामी	कान

४. योग असली कारन लोभी लालची
५. बदला जागता डरावना भयानक लेनेवाला
६. एक आदमी पेड पर है ।
७. भोला का बाप कानपुर जाता है ।
८. राम का दो बोझा करबी काट कर दे दो ।
९. लड़का रोते रोते छेदी के घर पर चला गया ।
१०. लालची आदमी सदा मारा जाता है ।

शब्द-चिन्ह

ने से कौन कुछ
मै मैंने मुझे मेरा मुझको
उस उसने उसे उसका उसको
वह वे उसी इसी

अभ्यास—१५

१

२

३

४

५

६

७

८

९
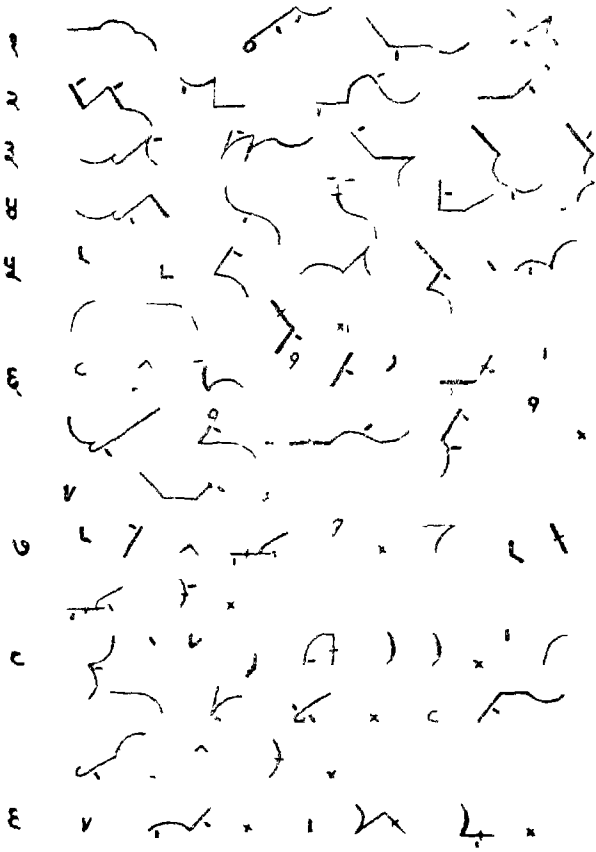
अभ्यास—१६
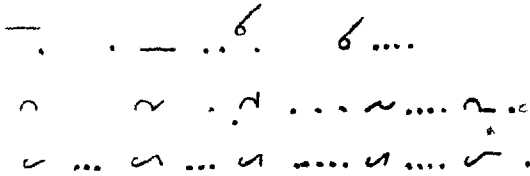
१. कम-क्या किया २ हाँ हुआ-ई-ये होता-होना
३. तुम तुमने तुम्हें तुम्हारा तुमको
४ उन उनने उन्हे उनका उनको

---

१. माल हार टोना भूल जाना खाना
२. पड़ोसी ताकत घोंसला काटने
३. नज़ाकत भतीजी डरावना दोपहर
४. क्या वह बाजार गया है। हाँ वह गया है। अभी तो उसे कुछ ही देर हुई है।
५. हाँ उसने कौन काम किया जो सजा हुई।
६. तुम कौन हो। तुम्हारा क्या नाम है। तुमने यह कोट कब पाया।
७. वे कमजोर थे हार गये। तुमको उनकी मदद करनी थी।
८. उन लोगों से कुछ न होगा। उनको जाने दो।
९. अगर कुछ हुआ होता तो उनने जरूर कहा होता।

शब्द चिन्ह

कहाँ जहाँ वहाँ यहाँ तहाँ
यदि-दाम दे-देना देता दिन-दी-दिया- दान
आएँगे - आगे गया ये-ई गाय

बाद बड़ा-डी-डे बहुत-बुरा बात
अत -अति भाँति-तौर इत्यादि-अत्यन्त
हाथ थोड़ा था-थी-थे
साथ साथी न नहीं

पैसा पेशा पशु
आप पहिला-पहिले यद्यपि-पीछे

अभ्यास -१७

१

२

३

४

५

६

७

८

९

अभ्यास – १८

१.	गणेश	गदाधर	नमक	गिरजा	गिरधर	
२	गुलनार	जीवन	तैराक	तौलना	पाइप	
३	गुलाब	जुमला	पैराक	दिहात	दौलत	
४	नूपुर	मेगाचर	बैरागी	बेहतर	बैजनाथ	
५	मुटाई	मुश्किल	लगातार		लिपाई	
६	करंजा	कम्बल	जतर	आँचक	पेचकस	लोबान

७ वह बहुत बडा आदमी हो गया है। अब बात बात मे बिगड जाता है।

८ अत सिद्ध हुआ कि बडे आदमी के हाथ मे ताकत है पर दीनानाथ गरीब आदमी के सहायक हैं।

९ हाँ अमीर लोग दीनानाथ को भूल है, उनकी पहुँच उनके पास नहीं है, न होगी।

१० पहले तो लोग अति करके बुरा करते हैं, बाद मे भाँति भाँति और तौर-तौर की बाते इत्यादि बनाकर अत्यन्त मूर्ख बनते हैं ऐसे आदमी का साथ कौन साथी देगा।

स, श और ज़ (१)

व्यंजन स, श केवल वक्र रेखा ही से नही बनता बल्कि एक छोटे वृत से भी बनता है। यह व्यंजन की सरल और वक्र रेखाओं मे बडी सरलता के साथ जोड़ा जा सकता है। इसका उच्चारण स और श के अलावा ज़ भी होता है। जैसे-मेज़, जहाज़, ज़ामिन, ज़ुल्फ आदि मे ज़, ज़, ज़ा और ज़ु है।

जब यह 'स' वृत किसी व्यंजन की सरल रेखा के आरंभ मे मिलता है या बीच मे इस तरह आता है कि व्यंजन के बीच मे कोण नही बनता तो यह दाहिने से बाएँ की तरफ लिखा जाता है। यदि यह वृत किसी सरल व्यजन के अंत मे आता है तो बाएँ से दाहिने को लिखा जाता है। कवर्ग मे यह वृत नियमानुसार आदि, मध्य और अंत मे चाहे जहाँ आवे ऊपर लगता है। जैसे—नं० १-२-३ चित्र नीचे।
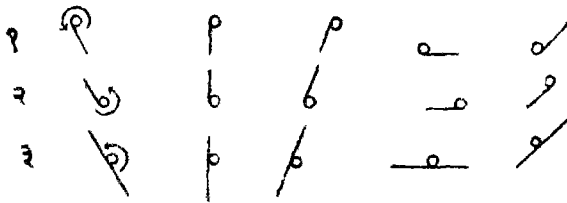
सप	सट	सच	सक	सर
पस	टस	चस	कस	रस
पसप	टसट	चसच	कसक	रसर

जहाँ व्यंजन की सरल रेखा कोण बनाती है वहाँ स वृत कोण के बाहर बनाया जाता है। जैसे—नं० १ चित्र नीचे।
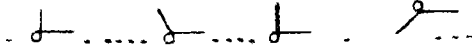
टसक पसक डसक रसक

जब यह स वृत व्यंजन की किसी अकेली वक्ररेखा में मिलाया जाता है तो उसके अन्दर लगता है और यदि दो वक्र रेखाओं के बीच में या एक वक्र और दूसरी सरल रेखा के बीच में आता है तो सुविधानुसार पहली या दूसरी रेखा वक्र रेखा के बीच में बनाया जाता है। अधिकतर तो यह पहली ही वक्र रेखा के बीच में बनाया जाता है पर यदि लिपि की धारा प्रवाह और सुचारुता में सहायता मिले तो दूसरी वक्र रेखा के भीतर भी लिखा जा सकता है। जैसे—नं० १ चित्र नीचे।

२ या
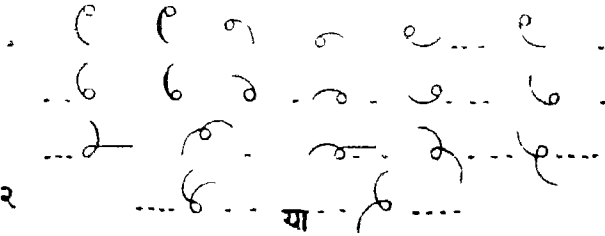
१. मत मद मर मम मन सस

तस दस रस मस नस सस

तसक लसम मसक रसर ससम

लेकिन २. त स ल (ऊ) या न स र (नी) आदि

जब किसी व्यञ्जन मे स वृत पहले लगता है तो वह वृत सबसे पहले पढ़ा जाता है। इसकी मात्राएँ जिस व्यञ्जन मे यह वृत लगता है उसके पहले रखी जाती हैं और वृत के बाद पढी जाती है। फिर व्यञ्जन और व्यञ्जन के बाद मे रखी हुई उसकी मात्रा पढी जाती है। जैसे—'शाला' शब्द मे (शब्द नं० २ चित्र नीचे) पहले वृत, फिर व्यञ्जन के पहले रखी गई मात्रा 'आ' फिर व्यञ्जन 'ल' और अंत मे व्यञ्जन 'ल' की मात्रा 'आ' पढ़ी जायगी। जैसे—चित्र नीचे

मम	शाला	सास	शादी
शाक	शान	शोर	रोज

इसी तरह जब 'स' वृत अंत मे आता है तो जिस व्यञ्जन मे 'स' वृत लगता है पहले वह व्यञ्जन और उसकी मात्राएँ पढी जाती है और अंत मे 'स' वृत पढा जाता है। 'स' वृत के पश्चात फिर कोई मात्रा नही आती। जैसे—मूस शब्द के पहले म व्यञ्जन और उसकी मात्रा 'ऊ' पढी जायगी और अन्त मे 'स' वृत पढा जायगा। वृत के बाद मात्रा आने से वृत न लिखा जायगा। जैसे—नं० १ चित्र चित्र ७२

१	मूसा	बास	चीज	कोस	ग्वास
	लाश	नाज़	पीस	पूस	ठोस

य और व के आरम्भ मे 'स' वृत उसके ऑकड़े के अन्दर ही लिखा जाता है। जैसे—नं० २ चित्र नीचे

२. (i) सय (ii) सव

जब 'ह' सकेत के आरम्भ मे 'स' वृत मिलना हो तो 'ह' के रेखागत वृत को ही दुगुना कर दिया जाता है। जैसे—नं० ३ चित्र नीचे

३. सह — शहर मियाना सुवास

नोट—य, व और ह के अन्त मे नियमानुसार र (ऊ) की तरह मे वृत लगता है।
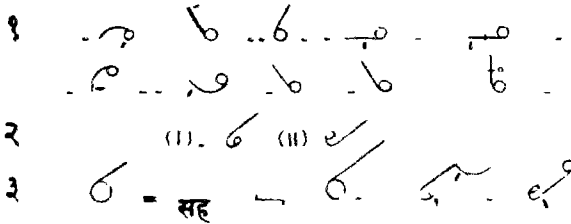
बीच मे स वृत जिस व्यञ्जन के बाद आता है पहले वह व्यञ्जन और उसकी मात्राएँ पढी जाती हैं और फिर 'स' वृत पढा जाता है। जो मात्राएँ वृत के पश्चात आती है वह उसके अगले व्यञ्जन के पहले यथा स्थान रखी और पढी जाती है।

यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जब बीच मे 'स' वृत या कोई दूसरा ऑकडा आ जाय तो तृतीय स्थान की मात्राएँ जिस व्यञ्जन के बाद होगी उसी व्यञ्जन के बाद तृतीय स्थान पर रखी जायँगी और वृत या ऑकडे को छोडकर अगले व्यञ्जन के

तृतीय स्थान के पहले न रखी जायँगी। जैसे नीचे के 'किसमिस', शब्द मे। यहाँ 'क' के तृतीय स्थान की मात्रा बीच मे 'स' वृत होने के कारण 'क' के तृतीय स्थान के पश्चात् ही रखी गई है। अगले व्यञ्जन 'म' के तृतीय स्थान के पहले नहीं। जैसे—नं० १ चित्र नीचे

माशूक	पशुपति	जोशीला	परेशान
किसमिस		कासनी	संसार

शब्द चिन्ह

यह	ये	इस	इन
साहब-सुबह	सब-सबसे-सूबे		सबब-सबक
कैसा-कैसे	किस		किसलिये
सम्पूर्ण	समय	सामना-ने	सम्बन्ध

अभ्यास—१६

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

अभ्यास— २०

द्वारा	ओर	और-रुपया	रात	औरत
हम	हमने	हमें	हमारा	हमको

---

१. सर शर मम शाम सार साल सेव

२. कस टस जस नस मेस लेस सोचा

३. नाश्ता कसाई काइस कोसना समोसा

४. किसमिस चूसना जालसाज नमकीन नौसादर

५. आसमान मुसलमान वास्तव व्यवसाय विकसित

६. शासक को दिन-रात बड़ी मुसीबत का सामना करना पड़ता है। शासन करना कुछ खेल नहीं है।

७. भले शासक हमारी शिक्षा को सरल बनाने और उसके द्वारा विद्या की ओर – मरद और औरत दोनों की – सुरुचि लगाने का सुविचार करते हैं।

८. इससे हमको रुपया और धन मिलता है।

९. हम सरस्वती को हासिल करेंगे। यह हमने पहले ही से निश्चय किया है।

स, श और ज़ (२)

चूँकि ये स, श वृत शब्दों में सबसे पहले और अन्त में पढ़े जाते हैं इसलिए यदि शब्द के पहले या अंत मे मात्रा आवे या किसी शब्द मे 'स' अकेला व्यञ्जन हो तो 'स' को वृत्ताकार न बनाकर 'स' व्यंजन को पूरा संकेत लिखना चाहिए जैसे—नं० १ चित्र नीचे
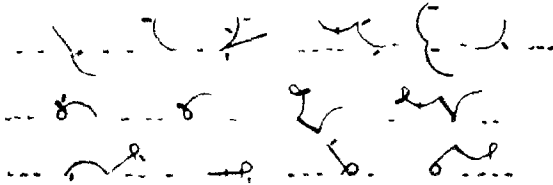
पैसा, आश, ओसारा, मूसा, नामा शो

पर यदि आरम्भ मे 'अ या आ' की मात्रा आवे या अन्त मे 'ई' की मात्रा आवे तो आरम्भ मे एक छोटा डेस लगाकर वृत लिखा जाय और अंत मे वृत को बढा कर एक छोटा सा डेस लगा दिया जाय। इससे आरभ मे 'अ या आ' की मात्रा लगी समझी जायगी और अंत मे 'ई' की मात्रा समझी जायगी। जैसे नं० २-३

असामी	असली	अस्तबल	असेम्बली
मारूसी	खुशी	पासी	हँसी

यह तुम पहले ही पढ चुके हो कि स और श के उच्चारण मे विशेष अंतर नही है और मुहावरे से सरलता-पूर्वक समझा भी सकता है और इसलिए उनके लिए एक

ही संकेत बनाए गये है पर यदि उनको 'स' वृत से लिखने में अशुद्धि का डर हो तो 'श' को उसके पूरे संकेत से लिखना चाहिये। जैसे—नं० १ चित्र

१ ..(I) .. और .. (II) और

२ ....

१—(I) सर और शर (बाण) (II) शब और सब (सैकडा)

ष के स्थान पर जब 'स' उच्चारण करते हैं तो स वृत या स व्यञ्जन का प्रयोग होता है। जैसे—नं० २ चित्र ऊपर

२—षटपद षडरस

शब्द-चिन्ह

चाहे-चाहते-चाहिये छोटा अच्छा जिस जिन

मालूम मध्यमतलब मन-मान मानो-मीन

आज-जाय भोजन-जो जरूर-री जरूरत

समाज जीवन जीविका

अभ्यास—२१

१.

२

३

४

५.

६

७

८

९

१०

अभ्यास—२२

लाला-लम्बा लोग-लेकिन लिये-लाये

ऐसा-आशा स्थल इसलिये-ईश्वर

अब कब जब तब

---

१ शिवाला शीतला मरुस्थल स्वास्थ्य

२ सुधार अवस्था ममखरा मसाला

३. नासमझ नाशवान चौकस चौदस तस्वीर

४ दंश दशमलव दस्तूरी दस्तावेज़

५ गौशाला उलास काश्मीर संख्या

६. लाला सीताराम और बहुत से लोग बस्ती गये थे। वहाँ से बहुत सी चीजें लाए।

७. ऐसा काम न करो कि लोग तुमको बुरा कहें। ईश्वर से डरो।

८. अगर रोशनी न हुई तो लोग शाम को काम कैसे करेंगे।

९. वह ऐसा तेज दौड़ा कि गिर पड़ा। इसलिये आज स्कूल नहीं गया।

१० तुम यहाँ कब आये। जब से तुम यहाँ थे तब से मैं भी था अब चलो घर चलें।

सर्वनाम

सर्वनाम

सर्वनाम मे अधिकतर शब्द-चिन्हो का ही प्रयोग किया गया है। बहुत से सर्वनाम चिन्ह पहले आ चुके हैं और बहुत से अभी बाकी है। इनको किन संकेतो का सहारा लेकर बनाया गया है, वह यहां पर दिये जाते है

( ) ‍ \ ‍ / ‍ — ‍ ।

स · ने ‍ र का ‍ को ·· · ए ····

मे · ⌒ ‍ पर \

मूल सर्वनाम मे उपरोक्त चिन्ह लगाकर गरदान बनाई गई है। प्रवाह का विचार कर कभी कभी ये चिन्ह उलट पलट दिए गए है। जैसे—'स' के लिये। 'र' का चिन्ह कभी पहले और कभी बाद में आया है जैसे—हमारा। इसमे 'र' का चिन्ह पहले आया है।

पूरी सूची अगले पृष्ठ पर दी जाती है। इसको ध्यान से समझ कर याद करने मे बड़ी सरलता पड़ेगी।

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

कुछ और सर्वनाम

१२

१३

१४

१५

१६

१	मैं	मुझसे	मैंने	मेरा	मुझको	मुझे	मुझमें	मुझपर
२	उस	उससे	उसने	उसका	उसको	उसे	उसमे	उसपर
३	हम	हमसे	हमने	हमारा	हमको	हमें	हममें	हमपर
४	तुम	तुमसे	तुमने	तुम्हारा	तुमको	तुम्हे	तुममे	तुमपर
५	इस	इससे	इसने	इसका	इसको	इसे	इसमें	इसपर
६	इन	इनसे	इनने	इनका	इनको	इन्हें	इनमें	इनपर
७.	उन	उनसे	उनने	उनका	उनको	उन्हें	उनमें	उनपर
८	आप	आपसे	आपने	आपका	आपको	×	आपमे	आपपर
९.	जिस	जिससे	जिसने	जिसका	जिसको	जिसे	जिसमे	जिसपर
१०	तिस	तिससे	तिसने	तिसका	तिसको	तिसे	तिसमे	तिसपर
११.	किस	किससे	किसने	किसका	किसको	किसे	किसमें	किसपर

कुछ और सर्वनाम

१२.	उन्होंने	जिन्होने	किन्होंने	इन्होंने	उसीने	तुम्हीने	हमीने	इसीने

१३.	जो	जो लाग	कौन	कुछ	कैसा	किसी
१४	सो	कोई	कई	ऐसा	जैसा	तैसा
१५	वैसा	क्या	यह	ये	वह	वे

तरह का चिन्ह 'त' लगा कर बनता है। जैसे—

१६	जिस-तरह	किस-तरह	इस-तरह	उस-तरह

१७ (१) भी (२) ही

आदि

'भी' के लिए १७ – नं० १ का चिन्ह और 'ही' के लिये १७ – नं० २ का चिन्ह निरधारित किया गया है। जैसे—नं० १७

प्रथम लाइन – कभी जभी तभी अभी
द्वितीय लाइन – मैंही तूही हमही वही यही येही
तृतीय लाइन – मैंभी हमभी तुमभी इसी उसी–आदि

नोट—(१) इनको लिखते समय स्थान का पूरा ध्यान रहे। जो चिन्ह लाइन के ऊपर है वे ऊपर लिखे जायें और जो चिन्ह लाइन पर है, वह लाइन पर लिखे जायें। लाइन के ऊपर और लाइन पर के शब्दो का पूरा विचार न करने से अर्थ मे बडा अंतर पड जायगा। जैसे—

मै, उस, हम, तुम

(२) लिङ्ग-भेद से चिन्हो मे अंतर नही पडता। जैसे—
कैसा कैसे कैसी, ऐसा ऐसे ऐसी।

(३) हिन्दी भाषा मे सर्वनाम का अत्यधिक प्रयोग होता है अत विद्यार्थियो को इस प्रकरण को आजिह्व कर लेना चाहिये। जिसकी लेखनी से ये जितना ही अधिक निस्मृत होगा उतना ही अधिक सफल लेखक वह बन सकेगा।

अभ्यास—२३

१.

२.

३.

४.

५.

६.

अभ्यास—२४

१ जो सो यह वह ये कौन कोई

२. ये मैं तुम मुझको मेरा तुम्हारा हमारा

३ इनसे इनपर उसका हमारा हमपर तुमपर

४, ही तुम-भी इस-तरह उस-तरह किस-तरह

५. जोलोग कैसा क्या कभी अभी

६ तभी मैंही वह-भी तूही तुमसे मुझसे

७ सुन्दरबन एक जगल है। इसमे कई किस्म के जानवर कुछ छोटे कुछ बडे रहते हैं। जो जिसको पाता है खा जाता है कोई किसी का विचार नही रखता है। जिस-तरह के जानवर यहा रहते हैं उनसे किसी-तरह भी जान छुडाना मुश्किल है ।

८ उसने उसकी कलम और उसकी ही स्याही से आप कई तस्वीरें खींची । न तुमको बुलाया न तुम्हारे पास आया। यह मुझमे कमी थी कि मैने तुमको, न तुम्हारे बहन को, इसकी कोई सूचना दी जिससे तुम गुस्सा हो गये ।

————

अभ्यास—२५

[नोट—नीचे के वाक्यो मे करीब २ सब पिछले शब्द-चिन्ह आ गये हैं ।]

१. उसने उसको एक पैसा दिया ।

२. बहुत बडी बात और बाद मे बुरी बात दोनों बुरी हैं ।

३ अब तुम कब आओगे । जिस तरह भी हो उनको साथ लेकर अति तेजी से आना ।

४. वह यहाँ वहाँ जहाँ कहीं भी हो सका गया पर मार खाने के सिवा और कुछ नहीं पाया ।

५. ईश्वर स्वत. कुछ नही करता लेकिन वह हमारे, तुम्हारे या उनके द्वारा सारा काम करता है ।

६. यदि तुम चाहो तो एक अथवा दो अमरूद खा सकते हो ।

७ वे बाजार गये थे । वहाँ से भाँति-भाँति और तौर-तौर के खिलौने इत्यादि अत्यन्त सस्ते दाम पर लाये । क्या अब आशा की जाय कि लडके खुश होगे ।

८. सामने जो लाल साहब लम्बी छडी लिये खडे है उनके द्वारा कई ऐसे काम हुये हैं जिनको आज छोटे बडे सब मानते हैं अत. पहले उनकी बात और बाद मे उनके साथी की बात मानी जाती है ।

९ सुबह उठकर सबक याद करना चाहिये । यह जीवन के लिये जरूरी है । विद्या से सम्बन्ध रखने वाले समाज को इस ओर सब लोगों का ध्यान खीचना चाहिये ।

१० दान में रुपया गाय आदि सब कुछ देना चाहिये । इसके सबब से सम्पूर्ण दाम तथा धन मिलता है । रात दिन, औरत-मरद सबको जब कभी समय मिले थोडा बहुत जो कुछ हो सके यह काम करे । इस तरह हाथ जोडे जिससे मालूम हो मानो और कोई काम से कुछ मतलब ही नहा है तब अच्छा फल होता है ।

'त' आंकड़े का प्रयोग

एक छोटा सा घुमावदार ऑकडा व्यञ्जन की सरल रेखा के अंत मे जब बाये से दाहिने तरफ जोडा जाता है तो उससे 'त' का अर्थ निकलता है। यह ऑकडा कवर्ग मे ऊपर की तरफ और य, र (ऊ) व और ह मे बाएँ तरफ लगता है।

जैसे—नं० १ चित्र नीचे

१. रत २. पत ३. खत
४. गत ५. टन

१ — १ . २ . ३ .
४ . ५
२ — १ २ . ३ .
४ ५ .
३ — १ . २
४ —
लेकिन
५ —
६ —
७ —
८ — लेकिन

व्यञ्जन की वक्र रेखा के अंत में यह छोटा आँकड़ा घुमाव के साथ अंदर की तरफ लगता है और उसमें एक लम्बाकार छोटी सी आड़ी रेखा हल्के डेस के रूप में लगा दी जाती है। वक्र रेखा में ऐसे डैस लगे हुये आँकड़े से भी 'त' पढ़ा जाता है। जैसे—नं० २ चित्र पृष्ठ ८८

१ सत २. लत ३. ड़त
४ मत ५. नत

केवल क्रिया के साथ इस घुमावदार आँकडे का अर्थ 'ता' ती, ते,' होता है और वाक्य में मुहावरे से अर्थ लगाकर समझा जाता है कि स्थान विशेष पर उसका अर्थ क्या है, ता, ती या ते। जैसे—नं० ३ चित्र पृष्ठ ८८

१. मै जाता हूं। यहाँ आँकडे का अर्थ 'ता' है। यदि स्त्रीलिङ्ग मे हो तो इसका अर्थ 'ती' होगा।

२. वे जाते है। इस वाक्य मे इस आँकड़े का अर्थ 'ते' होगा। बहुवचन है।

संज्ञा के साथ यह आँकड़ा व्यञ्जन की सरल और वक्र दोनो रेखाओं मे केवल 'त' का अर्थ देता है। यदि कोई स्वर 'त' के पश्चात् आता है तो 'त' का आँकडा नही बनाया जाता, पूरी रेखा लिखी जाती है। जैसे—नं० ४ चित्र पृष्ठ ८८

पोत गोत भात मात नात सात
लेकिन — पोता गोता माता नाता

यह 'त' का आँकडा व्यञ्जन की सरल रेखाओं में लगातार बीच मे भी आता है और इस तरह मिलाया जाता है। जैसे—नं० ५ चित्र पृष्ठ ८८

पतप पतक रतर कतक कतप चतट

जहाँ ठीक न मिले वहा संकेत पूरा लिखा जाता है। जैसे—नं ६ चित्र पृष्ठ ८८

रतह -- आदि

जब 'त' बीच मे आता है तो यह आँकडा केवल 'त' का ही उच्चारण देता है 'ता' ती, ते' का नही। यदि 'त' के पश्चात् कोई स्वर आता है तो वह अगले व्यञ्जन के पहले नियमानुसार लगाकर प्रकट किया जाता है। जैसे—नं० ७ चित्र पृष्ठ ८८

जनन जताना जीतना पोतना पोताना पतला पुतला

बीच मे यह 'त का आँकडा केवल सरल रेखा के अंत मे लगकर आता है, वक्र रेखा के अंत मे लगकर बीच नही आता। जैसे—नं० ८ चित्र पृष्ठ ८८

पताका - लेकिन - मतलब नतीजा

अभ्यास—२६

ताकत वक्त-किताब कहाता-ते कहना
वास्तव-अथवा वास्ते सर्वथा
ज्यादा चीज एकदम इकट्ठा

१.

२.

३.

४.

५.

६

७.

८....

९.

१०...

अभ्यास—२७

आवश्यक	सकता, सकते, सके	शिकायत	शक्ति
तथा-तांई	तो	तथापि	तक
अन्य-नाई	नीचे-निरा	नित्य	नया-नई
नाता	नेता	नीति	आवश्यकता

— ० —

१ खाता खेत मारता दोना रोती हँसती

२ अस्त आदत आपत एकात औसत आगत विपत्ति

३. कतरना करता काटता कीमत कीलित गरजता

४. असगत छाता छुता जाब्ता नाना नीति पड़ता

५ कतार वीरता भारत स्थानोचित गंमभीरता

६ तुम निरे मूर्ख हो। कोई अन्य नईबात बोलो। नित्य नित्य वही बात कहते रहने से लोग नीचे गिरते हैं ?

७ तुम्हारी शिकायत सुनते जी ऊब गया। अब यह आवश्यक है कि जहा-तक तो सके शक्ति भर तुम सुधारने की कोशिश करो नहीं तो पिटोगे।

८ तुम तथा तुम्हारे दोस्त हमारे लडके की नाई गेंद नही खेल सकते तथापि खेलते रहो, आदत पडेगी ही।

— ० —

'न' आँकड़े का प्रयोग

जिस तरह किसी व्यंजन मे बाये से दाहिने तरफ का घुमावदार आँकड़ा लगाने से 'त' बनता है उसी तरह यदि दाहिने से बाये की तरफ घुमावदार एक छोटा सा आँकड़ा व्यंजन की सरल रेखा के अंत मे लगाया जायतो 'न' बनता है। जैसे—नं० १ नीचे

वक्र रेखा मे यह ऑंकड़ा उसके अंत मे अंदर एक छोटे घुमाव के रूप मे लगाया जाता है। इसके और 'त' के ऑंकडे मे केवल इतना ही अंतर होता है कि 'त' के ऑंकडे मे एक छोटा सा हल्का लम्बाकार डैश लगा रहता है और 'न' के ऑंकड़े मे कोई डैश आदि नही रहता। जैसे—नं० २ चित्र पृष्ठ ९३

२. दन सन लन — आदि

क्रिया के अंत मे इस ऑंकडे का उच्चारण 'ना' या ने और कभी-कभी 'नी' मुहावरे के अनुसार होता है। जैसे—नं० ३ चित्र पृष्ठ ९३

३. रखना-ने-नी लडना-ने मारन-ने पीटना-ने
रोना-ने लेना-ने-नी — इत्यादि

संज्ञा के अंत मे इस ऑंकड़े का उच्चारण केवल 'न' होता है। यदि कोई मात्रा 'न' के पश्चात् आती है तो 'न' का ऑंकडा न लिखकर पूरी रेखा लिखी जायगी। जैसे नं० ४ चित्र पृष्ठ ९३

४. कान काना काने — आदि
परन्तु— शान मान पान — आदि

यह 'न' का ऑंकड़ा 'त' ऑंकड़े के समान बीच मे भी आता है। केवल अंतर यह है कि 'त' का ऑंकडा वक्र रेखा मे लगा कर बीच मे नहीं आता पर यह 'न' का ऑंकडा वक्र रेखा मे भी लगाकर बीच मे आता है। जैसे—नं० ५ चित्र पृष्ठ ९३

५ पनप कनक चनप
तनन सनन सनर लनर

जब यह आँकड़ा किसी व्यंजन की दो रेखाओं के बीच मे आता है तो इसका अर्थ केवल 'न' होता है और मात्रा आदि अगली रेखा के पहले नियमानुसार लगाई जाती हैं। जैसे—नं० ६ चित्र पृष्ठ ९३

६. पनमारी बनिज बनेठी चूनादानी तानना

बीच मे जब 'न' आँकड़े के साथ दूसरा अक्षर सरलता-पूर्वक न मिल सकता हो या जब प्रवाह मे रुकावट का डर हो तो बीच मे 'न' का आँकडा न रखकर पूरा 'न' लिखना चाहिए। जैसे—नं० ७ चित्र पृष्ठ ९३

७. खनिज

पानदान

पहले तरीके लिखना ठीक है दूसरे तरीके से नहीं।

[नोट—प्रवाह से यह मतलब होता है कि जहाँ तक हो सके यदि संकेत आगे को बढते है तो आगे ही को बढते जायँ पीछे को न हटे। ऐसा करने से रुकावट होती है जो इस संकेत-लिपि के लिए अत्यन्त हानिकारक है]

शब्द-चिन्ह
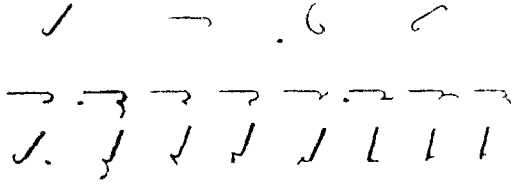
जौन-ज्यों क्यों तौन-त्यों यों

किन किनसे किनने किन्हे किनका किनको किनमे किनपर

जिन जिनसे जिनने जिन्हे जिनका जिनको जिनमे जिनपर

१.

२.

३ आदि

४.
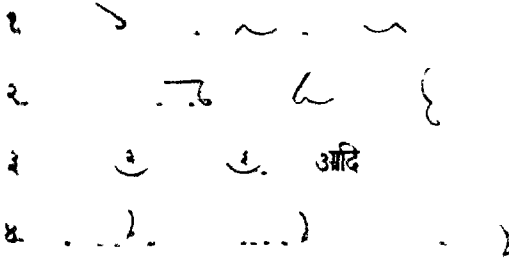
अपना-नी ने इतना-नी-ने उतना-नी-ने

कितना जितना तितना

दुगुना तिगुना आदि, 'न' को संख्या केनीचे लिखने से गुना

तमाम-ताज्जुब तुरन्त-तले तनिक-कतई

अभ्यास—२८

१

२.

३.

४.

५

६.

७.

८.

९

अभ्यास — २६

१. जनन वरन पसन्द दमन नेशन निशान

२. निम्न उठाना बतलाना भावना किसान

३ कौनसिल चेतावनी कानून जलपान पसीना

४. मुसलमान क़िलिस्तान आदेशानुसार जनानी

५ अनुसार कामिनी कारस्तानी मरदानी

६. लड़के अपने खिलौने और पकवान लिए खेलने जा रहे थे। वे जितना ही खेलेंगे तन्दुरुस्त होंगे।

७. यह बड़े ताज्जुब की बात है कि वह दुगना, तिगुना, चौगुना तो खाता है फिर भी उतना काम नहीं करता जितना कम खाने वाले।

८ हमको कितना ही काम करना पड़े आप इस बात का कतई तनिक भी विचार न करें तुरन्त जो काम हो भेज दें।

९. मैं इतना काम तो तुरन्त ही कर सकता हूँ। मेरे नीचे और भी बहुत से काम करने वाले आदमी हैं जो तमाम कामों को बड़ी आसानी से कर सकते हैं।

१०. चिराग के तले हमेशा अँधेरा ही रहता है।

'र' आँकड़े का प्रयोग

१
२
३,
४
या
या
५
६
७
८

'र' आँकड़े का प्रयोग

जिस तरह सरल व्यञ्जन के अंत मे बाएँ तरफ ऑकडा लगाने से 'न' पढ़ा जाता है उसी तरह सरल व्यञ्जन के आरम्भ मे बाएँ तरफ बाएँ से दाहिने को घुमाव देकर जो ऑकड़ा लगाया जाता है उससे नीचे को र लटकन, रेफा या ऋ की मात्रा पढ़ी जाती है। 'चक्र' शब्द मे 'र' लटकन, 'धर्म' मे रेफा और 'कृपा, में ऋ की मात्रा लगी है। क वर्ग मे यह ऑकड़ा नीचे की तरफ लगाता है। जैसे—नं० १ चित्र पृष्ठ १००

१. प्र - पृ क्र - कृ चृ - चृ ट्र - ट्री आदि

'य' र (ऊ), 'ल', 'व', और 'ह' के संकेतो मे यह ऑकड़ा नही लगता बल्कि पूरा लिखा जाता है। जैसे—नं० २ चित्र पृष्ठ १००

२. हर वर यर — आदि

वक्र व्यञ्जनो मे भी यह 'न' की तरह व्यञ्जन के अंत के बदले व्यञ्जन के आरम्भ मे उनके भीतर लगाया जाता है। जैसे—नं० ३ चित्र पृष्ठ १००

३. त्र - तृ द्र - दृ स्र - सृ म्र - मृ न्र - नृ

ल और र (री) मे यह ऑकड़ा नही लगता बल्कि पूरा लिखा जाता है। जैसे—नं० ४ चित्र पृष्ठ १००

४. लर या लर रर या रर आदि

जिस व्यञ्जन मे 'र' का ऑकडा लगता है पहले वह व्यञ्जन पढ़ा जाता है और फिर यह ऑकड़ा पढा जाता है। पहले ऑकड़ा पढ़कर व्यञ्जन नही पढ़ा जाता। जैसे—नं० ५ चित्र पृष्ठ १००

५. क्र - कृ प्र - पृ त्र - तृ म्र - मृ नृ - नृ

नियमानुसार जो मात्राएँ इस 'र' ऑकडा मे लगे हुए व्यंजन के पहले आती है। वह पहले पढ़ी जाती है और जो मात्राएँ व्यंजन

के बाद आती हैं, वह व्यंजन के बाद न पढ़ी जाकर 'र' आँकड़े के बाद पढ़ी जाती हैं, क्योंकि व्यंजन और 'र' आँकड़े के बीच कोई मात्रा नहीं होती। जैसे—नं० ६ चित्र पृष्ठ १००

६. प्रेस प्रेम प्रलाप श्री अश्र प्रस्थान
त्रिजटा प्रोग्राम बृटेन प्रोहित पृथ्वी
कर्तृ शिप्रा

ऐसे शब्दों को भी इस 'र' आँकड़े से लिखे सकते हैं जहाँ व्यंजन और 'र' आँकड़े के बीच कोई दीर्घ स्वर न आकर छोटी अ, इ या उ की मात्राएँ आती हैं। जैसे—नं० ७ चित्र पृष्ठ १००

७. पेपर पीपर बरसात मारना झरना
डरना परम गरम जरमनी
फरमान धर्म कर्म नर्म फिर
कानपुर

पर यदि पहिले व्यंजन और 'र' के बीच कोई दूसरी दीर्घ मात्रा आवे या 'र' अपने पहिले आनेवाले व्यंजन के साथ न पढ़ा जाकर अकेला या बाद वाले व्यञ्जन के साथ न पढ़ा जाय तो 'र' का आँकड़ा न लिखा जाकर 'र' पूरा लिखा जाता है जैसे—'पपरा' मे 'र' 'प' के साथ न पढ़ा जाकर अकेला पढ़ा जाता है और 'चरस' मे 'र' अपने पहले व्यञ्जन 'च' के साथ न पढ़ा जाकर बाद के व्यञ्जन 'स' के साथ पढा जाता है। इसलिये यहाँ 'र' का पूरा संकेत लिखा जायगा, आँकडा नही। जैसे—नं० ८ चित्र पृष्ठ १००

८. पपरा मकरी बाजरा भुखमरा

तवर्ग और 'स' के अक्षर दाएं-बाएँ दोनो तरफ से लिखे जाते हैं। 'र' का आँकड़ा इसलिये दोनो तरफ लगता है जैसे— नं० ६ चित्र निचे

६. त्र, तृ स्र, सृ

६ ( ) ( )

१० ((

११).)

१२. ... ...

इनमे स्वर लगाने का वही नियम है जो इन ः उ न अकेले होने पर लागू होता है अर्थात् यदि किसी शब्द मे यह अकेला व्यंजन हो और उसके पहले कोई मात्रा हो—चाहे उसे व्यंजन के बाद भी मात्रा हो—तो 'र' आँकड़ा सहित व्यञ्जन का बायाँ समूह आता है जैसे—नं० १० चित्र ऊपर

१०. इत्र अत्र — आदि

और यदि मात्रा बाद मे आती है—पहले नहीं—तो दायाँ समूह लिखा जाता है। जैसे—नं ११ चित्र ऊपर

११. थ्री श्री — आदि

जब ये दूसरे व्यञ्जन से मिलते हैं तो सुचारुता के विचार से दाहिने-बाएँ दोनों तरह लिखे जाते है ।

जैसे-नं० १७ चित्र पृष्ठ १०३

१२. त्रिकाल त्रिशंकु आश्रम श्रीमान

अभ्यास—३०
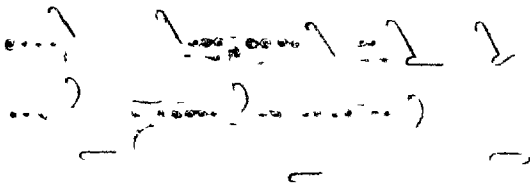
परन्तु - प्राय प्रत्येक प्रति प्रतिकूल पूर्वक
तरह, तरफ तरसों, बेहतर भीतर, तरकीब
कर, करके, करना करीब, किनारे कारण

१

२

३

४. या

५

६

७

८

अभ्यास—३१
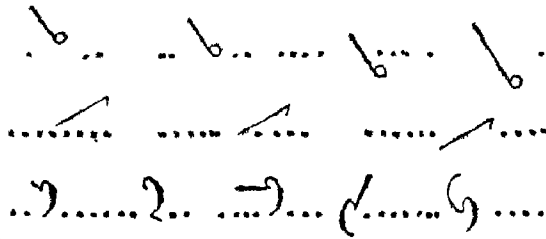
पास, पश्चात पेश आपस पेश्तर
बाहर खराब देर दूर-धीरे
इधर उधर किधर जिधर तिधर

---

१. गर्व आम्र ऊपर चर्म चरम परसन प्रसन्न
२. प्रताप बरतन प्रदेश बरधा प्रजा चरचा
३ प्रगट प्रकोप निरच्छर गरभवती करनाल
४. अप्रसन्न दर्शन अपरिचित चारुपात्र निरजोश पुरजोश
५. गर्वीला चर्मसीमा नौकर पराक्रम भ्रम
६. जैसा करोगे वैसा फल मिलेगा । बचकर किधर भागोगे । जिधर भागोगे तिधर ही मार पड़ेगी ।
७ आपस मे मिलकर रहना चाहिए । बारह बहुत देर तक या बहुत दूर तक घूमना खराब बात है ।
८. खेलने के पश्चात तुमको इधर उधर न घूमना चाहिए । घर पर अपने बाप के पास बैठकर पढ़ना चाहिए । पेश्तर तो तुम ऐसा नही करते थे । धीरे २ तुमको आदत सुधारना चाहिए ।

'ल' आंकड़े का प्रयोग

जो ऑकड़ा सरल रेखा के आरम्भ में बाएँ से दाहिने की ओर लिखे जाने पर 'र' लटकन प्रगट करता है, वही आंकड़ा यदि दाहिने से बाएँ को लिखा जाता है तो 'ल' प्रगट करता है। कबर्ग मे यह ऑकड़ा आरम्भ मे ऊपर की ओर लगता है। यह आंकड़ा भी 'र' के समान व्यञ्जन के बाद ही पढ़ा जाता है। जैसे—नं० १ चित्र नीचे

१. पल टल चल कल

१.

२.

३

४

५.

६.

७.

८.

६.
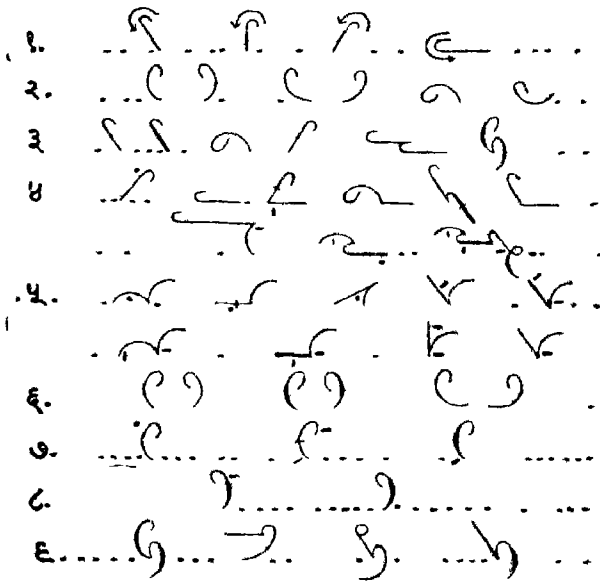
वक्र रेखाओं में यह आँकड़ा उनके भीतर आरम्भ में 'र' के आकड़े के स्थान पर उससे बढ़ा फैला हुआ आकड़ा बनाकर प्रगट किया जाता है। जैसे—नं० २ चि० पृ० १०७

२. तल सल मल नल

प्रारम्भ या बीच मे 'र' की तरह जिस व्यञ्जन मे यह 'ल' का आकड़ा लगा रहता है अधिकतर उसके और 'ल' के बीच में कोई स्वर नही आता पर सुचारुता के विचार से कहीं २ अ, इ, उ की ह्रस्व मात्राएँ रहने पर भी यह आकड़ा लगाकर 'ल' लिखा जाता है। जैसे—नं० ३ चि० पृ० १०७

३. पल, बल या बिल, मल चल कलकल दलदल

र के आंकड़े की भाँति ल का आँकडा भी य, र, ल, व और ह मे नही लगा।

नियमानुसार आदि और मध्य मे कहीं पर भी जो मात्रा व्यञ्जन के पहले आते है वह व्यञ्जन के पहले और जो मात्रा व्यञ्जन के बाद आती है वह 'ल' के बाद पढ़ी जाती है क्योंकि व्यञ्जन और र ल के बीच कोई मात्रा नहीं आती। ह्रस्व स्वर अ, इ, उ की जो मात्रा आती है वह लगाई नहीं जाती आप ही पढ़ी जाती है। जैसे—नं० ४ चि० पृ० १०७

४. अचल अकल छिलका मुल्क पलभर पलक कलकत्ता मंगली मंगलाप्रसाद

'ल' के आकड़े और उसके पहले व्यञ्जन के बीच यदि 'र' आकडे के समान अ, इ, उ की ह्रस्व मात्रा को छोड कर कोई दूसरी दीर्घ मात्रा आवे या 'ल' अपने पहले आने वाले व्यञ्जन के साथ न पढ़ा जाकर अकेला या बादवाले व्यञ्जन के साथ पढ़ा जाय तो 'ल' का आकडा न लिखा जाकर 'ल' पूरा लिखा जाता

है जैसे पुतला मे 'ल' त के साथ न पढ़ा जाकर अकेला पढ़ा जाता है। इसलिए त मे ल का आंकडा न लगाकर पूरा लिखा जायगा। जैसे—नं० ५ चि० पृ० १०७

५ मेल खेल रेल पोल पाला
माला गोला टाला पीला

जैसे पहले ही बताया जा चुका है तवर्ग और स के अक्षर दायें-बायें दोनो तरफ लिखे जाते हैं और वसलिए 'ल' का आंकड़ा भी दोनो तरफ लगता है। जैसे—नं० ६ चि० पृ० १०७

६ तल दल सल

इनमे स्वर लगाने का भी वही नियम है जो व्यञ्जन के अकेले रहने पर लागू होता है अर्थात् यदि किसी शब्द मे यह अकेला व्यञ्जन हो और उसके पहले कोई मात्रा हो—चाहे फिर उस व्यञ्जन के बाद भी कोई मात्रा हो—तो ल आँकड़ा लगे हुये व्यञ्जन का बाया समूह आता है जैसे—नं० ७ चि० पृ० १०७

७ अतल उथला ऊदल

और यदि मात्रा बाद मे आती है पहले नहीं—तो दांया समूह लिखा जाता है। जैसे—नं० ८ चि० पृ० १०७

८. दला दली

जब यह दूसरे व्यञ्जन से मिलता तो सुचारुता के विचार से सुविधानुसार दाएँ-बाएँ दोनो तरफ लिखा जाता है।
जैसे—नं० ९ चि० पृ० १०७

९. दलदल कौशल स्पेशल पैदल
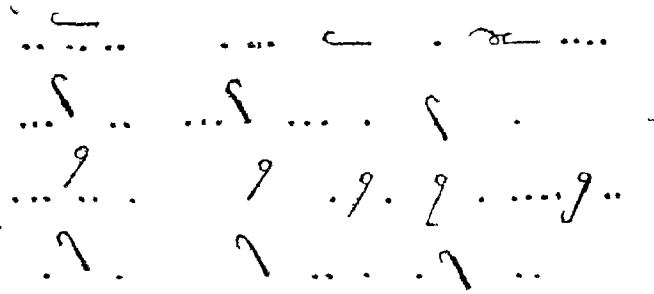
शब्द—चिन्ह

काला-काल	केवल	मुश्किल
काबिल-बिला	बल्कि	बिल्कुल-कब्ल-बल
हिस्सा-हफ्ता	हमेशा	हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान
बार-बार	मेम्बर	नम्बर

जल-जलसा	जेल	जल्दी-बिजली
साधारण-सारा	सबेरा-सर्व	सिर्फ-शुरू-खूबसूरत

आ आग आता आना आओ आइये

अभ्यास—३२

१

२

३.

४

५

६

७.

८.

९.
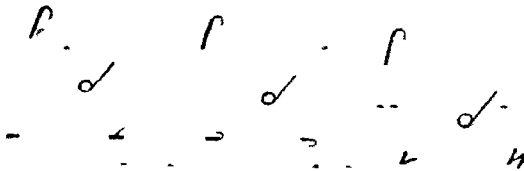
अभ्यास—३३

१. अकुल अखिल नाला अचल अटकल फुटकल

२ उटल्लू कलफ पुतली कुलवान कौशल

३. बुलबुला तलफना पलथो मलका मेला भोला

४. मलमल पलना पतलून पतली सरल साइकिल

५. कलमतराश तलवाना मलमल अधखिला

६ आप कब आयेंगे। जल्दी आना, अभी तो बहुत सबेरा है, नहीं देर हो जायगी। बिला आपके काम न चलेगा।

७ कौंसिल के कई मेम्बरों ने जेल का निरीक्षण कर आने पर अपनी राय पेश कर दी।

८. मैं सबेरे उठकर सिर्फ दूध पीता हूँ। इससे बदन पर रौनक आती है और खूबसूरती बढती है।

९. आज के साधारण जलसा में कई प्रश्नों पर अच्छा वादविवाद रहा। नगर से जल, बिजली, जेल आदि के प्रबन्ध पर बहस रही। शुरू में तो कुछ गर्मागरमी रही परन्तु जल्दी ही सारा काम खतम हो गया।

स्व, स्त या स्थ, दार सा त्र, म्प या म्ब के आँकड़े

(१)

जो छोटा वृत्त किसी व्यञ्जन के साथ लगाने से 'म' को सूचित करता है यदि यही वृत्त बड़ा कर दिया जाय और 'स' वृत्त के ही स्थान पर किसी व्यञ्जन के आरंभ मे लगाया जाय तो वह बड़ा वृत्त स्व को प्रगट करता है। जैसे—नं० १ चि० नीचे

स्वर स्वत स्वप्न स्वामिन स्वागत

इसमे मात्रादि भी 'स' वृत्त के नियमानुसार ही लगती हैं और यदि इस स्व वृत्त के पहले कोई मात्रा आवे—चाहे वह मात्रा 'अ या आ' की ही क्यो न हो—तो शब्द संकेत पूरे 'स' और 'व' को मिलाकर लिखा जाता है जैसे—नं० २ चि० ऊपर

आश्वासन अश्व यशस्वी तेजस्वी

इस 'स्व' वृत्त का प्रयोग बीच और अन्त मे नहीं होता। य, व और ह के आरंभ मे भी यह वृत्त नही लगता। यदि बीच मे आये तो 'स' वृत्त और 'व' पूरा लिखा जाता है।

(२)

इसी तरह एक छोटा सा एक चाप (Arc) जब किसी सरल या वक्र व्यञ्जन के आरम्भ या अन्त मे लगाया जाता है तो वह 'स्त स्थ या ष्ट' का सूचित करता है। चाप वृत्त की रेखा (परिधि) के एक छोटे हिस्से को कहते हैं। इस चाप को व्यञ्जन मे लगाते समय इस बात खूब ध्यान रखना चाहिए कि यह आँकड़ा बढ़कर

किसी दशा मे भी व्यञ्जन के आधे के ऊपर न जाने पावे। जहाँ तक हो यह आँकड़ा व्यञ्जन के आधे से कम पर ही लगाया जाय। जैसे—नं० १ चित्र नीचे

१

२

पर
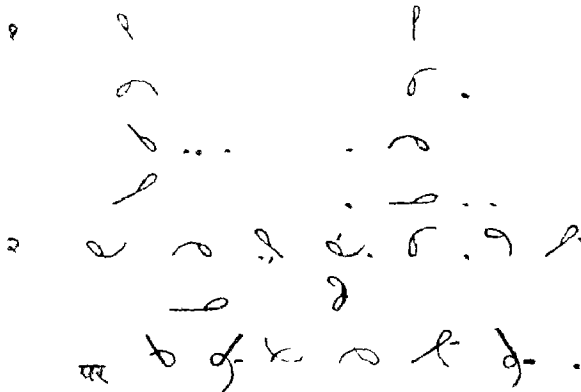
स्त - स्थ - ष्ट — प , स्त - स्थ - ष्ट — ट

स्त - स्थ - ष्ट — म , स्त - स्थ - ष्ट — ल

प — स्त - स्थ - ष्ट , म — स्त - स्थ - ष्ट

र— स्त - स्थ - ष्ट , क — स्त - स्थ - ष्ट

यह चाप 'स' वृत्त के नियमों के अनुसार लिखा और पढ़ा जाता है और स्वर आदि के भी रखने के वही नियम हैं। अंतर केवल यह होता है कि आरम्भ मे 'अ या आ' आने पर भी पूरा संकेत लिखा जाता है पर अंत मे 'ई' आने पर भी पूरा संकेत न लिखकर 'स' के नियमानुसार यह चाप जरा डैश के रूप मे बढ़ा दिया जाता है। आदि या अन्त मे कोई दूसरी मात्राएँ आने पर 'स' वृत्त के समान, वह आँकड़ा न लिखा जाकर पूरा संकेत के

रूप मे लिखा जायगा। जैसे—नं० २ चित्र पृष्ठ ११४

स्तन मस्त स्तूप स्थान स्थिर रुष्ट
कष्ट दृष्टि

पर — बस्ती जस्ता सस्ती मस्ती रस्ता बस्ता

नोट —यह चाप बीच मे नहीं आता।

(३)

किसी व्यञ्जन के अंत मे 'स्थ' चाप की तरह एक बडा चाप लगाने से शब्द के अंत मे 'दार-धार या त्र' पढा जाता है। यह चाप व्यञ्जन की आधी रेखा के ऊपर तक जरूर जाना चाहिए। इसके अंत मे भी स्वर नहीं आता। यह चाप सरल रेखाओ मे 'त' की तरफ और वक्र रेखाओ के अन्दर लगाया जाता है। जैसे—नं० १ चित्र नीचे

प - त्र या - दार - धार च - त्र या - दार - धार
म - त्र या - दार - धार क - त्र या - दार - धार

अकेले व्यञ्जन वाले शब्द के अंत मे इसका अर्थ अधिकतर 'त्र' के अर्थ मे होता है पर एक से अधिक व्यञ्जन वाले शब्दो के अंत मे लगाने मे यह 'दार या धार' के अर्थ मे भी आता है। जैसे—नं० २ चित्र ऊपर

पत्र पुत्र कुत्र तत्र यत्र रिश्तेदार
हकदार गद्दारीदार मालदार सरदार मूसलाधार

यदि अंत मे 'ई' के अलावा कोई स्वर हो या 'स' के बाद त्र या दार आवे तो त्र या द्र लिखा जाता है जैसे—नं० ३ चि० पृ० ११५

पवित्रा मिस्त्री रसदार

पर यदि अंत मे दूसरी मात्राएँ न आकर 'ई' की मात्रा आवे तो घुमावदार चाप को 'स' वृत्त के समान जरा आगे बढ़ा कर लिख देने से 'ई' की मात्रा लगी हुई समझी जायगी। जैसे—नं० ४ चित्र नीचे

पत्री पुत्री ईमानदारी

४.
५.
६
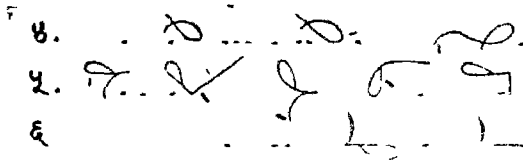
यह चाप आरम्भ मे भी आता है पर जब आरम्भ मे आता है तो केवल 'त्र' या 'त्रि' को सूचित करता है और पहले पढ़ा जाता है। मात्रा आदि नियमानुसार व्यञ्जन के पहले या बाद मे रखी जाती है और इस चाप के बाद पढ़ी जाती है। जैसे—नं० ५ चित्र ऊपर

त्रिकाल त्रिपुरारी त्रिशूल त्रैलोक त्रिकूट

जब यह चाप सरल रेखा मे 'न' के आकड़े की तरफ लगाया जाता है तो 'दार या धार' के पहले 'न' भी पढ़ा जाता है और यथा-नियम उसे बढ़ा देने से 'इ' की मात्रा लग जाती है जैसे—नं० ६ चित्र पृष्ठ ११६

दूकानदार   दूकानदारी

(४)

'म' व्यञ्जन को मोटा कर देने से 'प या ब' लग जाता है पर ऐसी दशा मे 'म' और 'प या ब' के बीच मे कोई मात्रा नहीं आती। म के पहले 'प या ब' के बाद मात्रा आ सकती है। जैसे—नं० १ चित्र नीचे
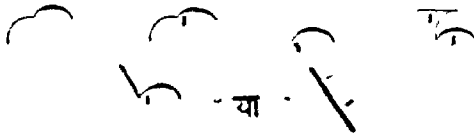
अभ्यास—३४
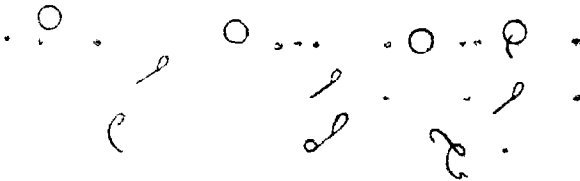
स्वराज्य, स्वास्थ्य   स्वयं, स्वतन्त्र   स्वरूप, स्वीकार   स्वतन्त्रता

प्रस्ताव   रास्ते,ता   तन्दुरस्त,ती

अत्र   सर्वत्र   प्रस्थान

१.

२.

३

४.

५

६

७

८

अभ्यास—३५
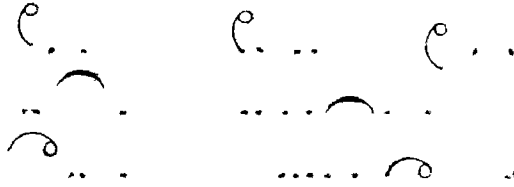
सहायता　　समेत-सेतमेत　　,सहित - सम्मति
अचम्भा—बारम्बार　　परमात्मा—समाप्त
महाशय—मुसलमान　　मुसीबत—मुस्लिम

---

१ स्वछद स्वदेशी स्वागत स्वामिन त्रिपाठी जिम्मेदारी
२. दरखास्त दास्ताना दस्तावेज दारमदार ताम्बूल
३. सूत्र योगशास्त्र रोबदार जमादार उदार थानेदार
४ दमदार मुष्टि स्थलचर दुष्ट तम्बाकू दुष्टता
५. समष्टि स्थापना स्पष्ट स्तुति स्थिर सुधाकर
६ महाशय जी आप किसी मुसीबत को क्या जाने । हमको तो सिर्फ परमात्मा का ही भरोसा है । यदि वह सहायता न करता तो अब तक मैं तुम्हारा शिकार बन गया होता ।
७. वह चूहे का चूहदानी समेत उठा ले गया । इसमे अचम्भे की क्या बात है । ऐसा तो वह पहले भी कई बार कर चुका है । जाओ चूहे दानी सहित उसको बुला लो ।
८ हिन्दू और मुसलमानो मे जो रोज बारम्बार झगडे होते है उसके कई कारणों मे मे एक मुस्लिम—लीग और हिन्दू—महासभा ऐसी संस्थाओ का होना भी है ।
९ अब इन झगडों को समाप्त करना ही हमारा उद्देश्य होना चाहिये । सेतमेत बैठे बैठे झगड़ा करना अच्छी बात नही । इस विषय मे तुम्हारी क्या सम्मति है ।

लिंग और वचन

यह तो तुम पहले ही पढ़ चुके हो कि शब्द-चिन्हों मे लिंग का कोई लिहाज़ नही रखा गया। क्रिया-शब्द भी मुहावरे से ही पढे जाते हैं। 'वह आता है, वह आती है, आदि। संज्ञा तथा विशेषण शब्द मात्राओ या शब्दों के हेर-फेर से बन जाते हैं जैसे घोड़ा-घोडी, काका-काकी, नर-नारी, हरा-हरी आदि। इसलिए लिंग आदि के अनुसार शब्दों को बनाने के लिए कोई विशेष नियम की आश्यकता नही है।

वचन

जब किसी शब्द का एक वचन से बहुवचन किया जाता है तो अधिकतर मात्राओ के हेर-फेर से काम चल जाता है। जैसे—नं० १ चित्र नीचे।

१ घोडा घोडे लड़का लडके

१.
२.
३.

पर जहाँ मात्राओं का हेर-फेर नही रहता वहाँ बहुवचन 'य, ये, आदि लगाकर बनते है उस दशा में शब्द के अा संकेत के पास ही एक बिन्दु रख दिया जाता है। जैसे—नं० २ चित्र ऊपर

२. लड़की-लड़कियाँ, राज-राजाओं, माला-मालाएे

स्वतन्त्र रूप से भी यदि शब्द से अंत मे 'यॉ या इङ्ग' आवे तो इसी तरह एक बिंदु रख दिया जाता है। जैसे—नं० ३ चि० पृ० १२०

३. काइयॉ वरकिङ्ग

स, स्व और ल, र के कुछ और प्रयोग

जो वृत आरंभ मे 'स और स्व' के लिए आता है वह दाहिने से बाएँ तरफ को लिखा जाता है पर यदि वह वृत बाएँ से
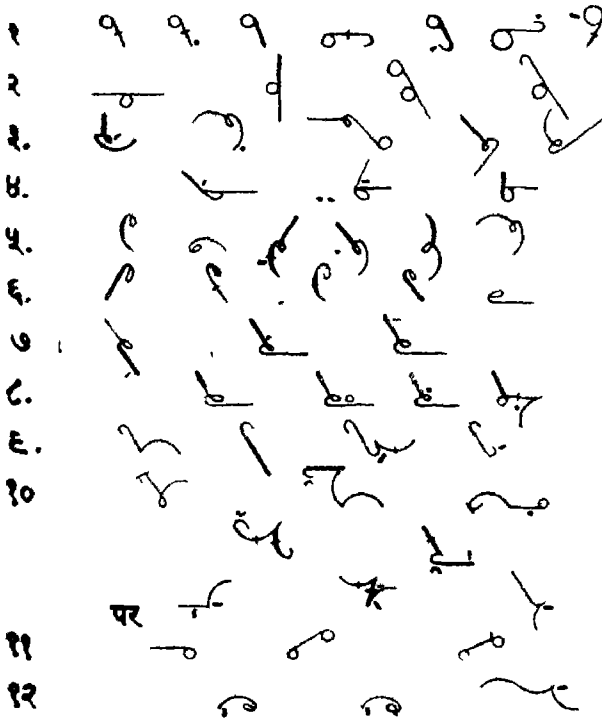
दाहिने की तरफ रेफा के स्थान पर लिखा जाकर किसी व्यञ्जन से मिले तो उसमें स या स्व वृत के बाद 'र' भी लिखा हुआ समझा जायगा। जैसे—नं० १ चि० पृ० १२१

सफर सफरी सब्र सिखरन सुवर्ण स्वीकृत स्वाक्षर

दो व्यञ्जनों की सरल रेखा में जहाँ कोण नहीं बनता वहाँ 'र' की तरफ वृत बनाने से 'र' लगा हुआ समझा जाता है। जैसे—नं० २ चि० पृ० १२१

कसकर डसटर सपर-सपर परस्पर

स्व वृत बीच में नहीं लगाया जाता।

पर जब दो सरल व्यञ्जन या एक सरल और एक वक्र व्यञ्जन के बीच कोण बनता है तो दोनो 'स' वृत और 'र' का आँकडा अलग-अलग दिखाया जाना चाहिये। जैसे न० ३ चि० पृ० १२१

डिसाइनर मिस्त्री एक्सप्रेस बीस-चर तस्वीर

यदि किसी सरल व्यञ्जन रेखा के बाद 'स' वृत है और फिर 'र' का आँकडा मिला हुआ कवर्ग के अक्षर आवे जैसे 'कर, गर, आदि तो इस तरह लिखना चाहिये। जैसे—नं०४ चि० पृ० १२१

पुष्कर चूसकर डसकर

वक्र रेखा मे 'स' वृत, आदि या मध्य मे रेफा वाले आँकडे के भीतर इस प्रकार लिखा जाता है कि दोनो वृत और रेफा साफ साफ प्रगट हो। स्व वृत वक्र रेखा मे 'र' के स्थान मे नहीं लिखा जाता है। जैसे—नं० ५ चि० पृ० १२१

सदर समर जसोधर वस्तर दुस्तर मिस्त्री

इसी तरह 'स' वृत 'ल' के आँकडे के भीतर अलग से लगाया जाता है चाहे रेखा सरल हो या वक्र। इसमे 'स्व' का वृत नहीं लगता। जैसे—नं० ६ चि० पृ० १२१

सजल सफल सदल सबल सकल

जब यह 'स' वृत और 'ल' का आँकडा बीच मे आता है तो भी 'स' वृत उस 'ल' के आँकड़े मे इस प्रकार लगाया जाता है कि दोनो साफ २ मिलते हुए अलग अलग दिखाई दें। अगर ऐसा न हो सके तो पूरा संकेत लिखा जाय। जैसे—नं० ७ चि० पृ०१२१

पशुबल बीसकल बाइसकिल

इनमे स्वर यथा-नियम लगाये जाते हैं यर्थात् यदि 'स' वृत पहले लगता है तो उसकी मात्राएँ व्यंजन के पहले रखी जाती हैं और यदि यह वृत के बीच मे आता है तो इसकी मात्राएँ अलग व्यंजन के पहले रखी जाती है। व्यंजन और 'ल या र' आँकडे के बीच अ, इ, उ की ह्रस्व मात्राओ को छोड कोई दूसरी मात्रा नही आती और यह पहले ही बताया जा चुका है कि यह मात्राएँ लगाई नही जाती। 'ल या र' के बाद की मात्राएँ व्यंजन के बाद रखी जाती है। जैसे—नं० ८ चि० पृ० १२१

बीसकल बीसोकल बीसकला बीसखेल

तुम यह पढ चुके हो कि जब 'र या ल' का आँकडा किसी व्यंजन मे मिलता है तो या तो उनके बीच कोई मात्रा नही रहता या सिर्फ ह्रस्व अ, इ, उ की मात्रा आती है। जैसे—नं० ६ चि० पृ० १२१

प्रेम बल्व प्रतिमा प्लुत

पर यदि 'र और ल' आकडे के और व्यंजन के बीच दूसरे दीर्घ स्वर आवे और सुविधानुसार अच्छे संकेत बनें तो उनके बीच की 'आ, उ, ए, ओ' की मात्राओ को क्रमशः इन चिन्हों से सूचित कर सकते हैं —ˇ ˋ ˍ

'आ' चिन्ह आंकड़ा के सिरे पर रखा जाता है पर दूसरे चिन्ह आकडे के पास व्यंजन के बाद रखे जाते हैं। दूसरी

मात्रायें यथा-विधि अपने स्थान पर रखी जाती हैं। व्यंजन और 'ल या र' ऑकड़े के बीच 'इ, औ' आदि की दूसरी मात्राओं के आने पर या 'ल या र' के बाद ऐसी दीर्घ मात्राओ के आने पर जिससे 'ल या र' अपने पहले वाले व्यंजन के साथ न पढ़ा जाकर पिछले व्यंजन के साथ पढ़ा जाय या अकेले पढ़ा जाय तो संकेत पूरे लिखे जाते है। जैसे—नं० १० चि० पृ० १२१

पारसल घोरतम मारकेश

मूलधन भूगोल

पर — अकोला मझोला पतला

सरल रेखा के अन्त मे 'न' आकड़े के स्थान पर यदि 'स' वृत लिख दिया जाय तो 'न' भी लगा हुआ समझा जायगा। जिस व्यंजन मे वृत इस तरह लगा होगा पहले वह व्यंजन, फिर न का ऑकडा और अंत मे 'स' वृत पढ़ा जायगा। नियमानुसार वृत्त को डैशरूप मे जरा बढा देने से अंत मे 'ई' पढी जायगी। जैसे नं० ११ चि० पृ० १२१

कंस हंस हँसी

वक्र रेखा मे यह 'स' वृत 'न' ऑकडे के अंदर अलग से लगाया जाता है पर नियमानुसार इस वृत को भी डेश रूप मे जरा बढ़ा देने से अंत मे 'ई' की मात्र पढी जायगी। दूसरी मात्राओ के आने पर संकेत यथा-नियम पूरे लिखे जाते हैं। जैसे नं० १२ चि० पृ० १२१

नं० १२-- मानस मानसी -- पर — मनसा

शब्द-चिन्ह
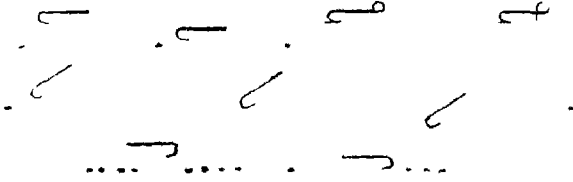
अगर	वगैर, बगैर, मगर	अंग्रेज़	अंग्रेज़ी
या, यथार्थ, यथा	यथेष्ठ, यानी		युद्ध, युवक
क्यों		किन, किन्तु, कठिन	
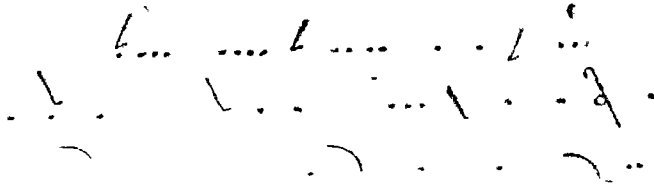
चौड़े	ऊँचे		बीच
पार	परसों	पूरा	परस्पर
अर्थात	अतिरिक्त		उदाहरण

अभ्यास—३६

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

अभ्यास—३७

१	पुष्कल	पेशराज	बसीकरण	पिस्तौल	सरकिल
२	सरबराकार	सरखत	सरकार	सफलता	
३.	सफरमैना	सचराचर	सचरना	सकरपाला	सदर
४.	कालिमा	कालापानी	कालाधर्म	कालाचक्र	
५.	कारखाना	कारस्तानी	बोलचाल	खेल-कूद	

६ इतना बडा अर्थात लंबा-चौड़ा पतलून पहिन कर कहा जाने का इरादा है। यह पतलून बडे होने पर भी ऊँचा है।

७ एक नाव गगा जी को पार कर रही थी पर बीच धारा मे पहुँचते ही डूब गई।

८. परस्पर न लडो। हम लोगो के अतिरिक्त भी जो कोई इसे देखता है, बुरा कहता है।

९ इस किस्म का कोई अच्छा उदाहरण खोज निकालो।

र और ल के ऊपर और नीचे लिखे जाने का नियम

जहाँ-जहाँ किसी व्यंजन के उच्चारण के लिए ऊपर और नीचे के दोहरे संकेत दिए गए हैं वहाँ स्वरों के बिना प्रयोग के ही उच्चारण करना और सरलता पूर्वक संकेत चिन्हों का लिखा जाना, इन दोनो बातो का पूरा विचार रक्खा गया है। यदि ये दो बाते ध्यान मे पूरे तौर पर आ जायँगी तो समझने मे बड़ी सरलता होगी। इन्हीं मूलतत्वो पर इन नियमों की रचना की गई है।

१. यदि किसी शब्द मे 'र' अकेला व्यंजन हो और यदि

(अ) 'र' के पहले कोई वृत या आँकड़ा न हो तो, यदि कोई स्वर पहले आवे तो, 'र' नीचे को लिखा जाता है और यदि स्वर पहले न आवे तो 'र' ऊपर को लिखा जाता है जैसे नं० १ चि० नीचे

१

२

३

४.

५
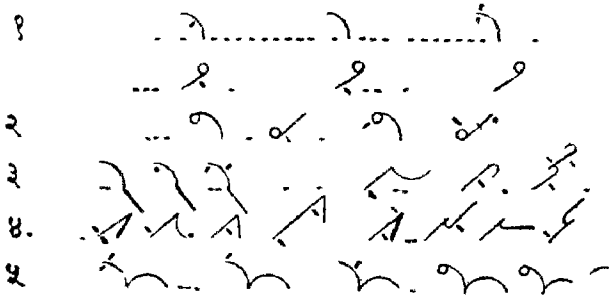
ओर | और | आरा
[ओर तथा और, के शब्द-चिन्ह बन गये हैं]
रोज | राज | रीस

(२) जब 'र' के पहले वृत आँकड़ा या कोई सकेत आता है और उस 'र' संकेत के अंत मे कोई स्वर नहीं आता तो 'र' नीचे लिखा जाता है पर यदि अंत मे कोई स्वर आता है तो 'र' ऊपर को लिखा जाता है। जैसे—नं० २ चि० पृ० १२८

सीर सीरा सारा साड़ी

२. जब 'र' शब्दों मे पहला अक्षर होता है—

(अ) यदि किसी शब्द मे 'र' के पहले स्वर है तो 'र' नीचे को लिखा जायगा। यदि पहले स्वर नही हो तो ऊपर को लिखा जायगा। जैसे—नं० ७ चि० पृ १२८

अरब, अरबी, अरोप, रानी, रोना, रोता–रोता

(ब) शब्द संकेतो की रोचकता पर विचार कर सुविधानुसार 'र' चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और र, य, व अथवा ल आँकडा मिले हुए कवर्ग के पहले ऊपर की तरफ लिखा जाता है और स्वर का कोई विचार नही किया जाता केवल इस बात का ख्याल रखा जाता है कि संकेत न बिगडने पावे। जैसे—नं० ४ चि० पृ० १२८

कागजी आरती रोटी अरारोट

उरूज अरबा अरगल आर्य

(स) 'म, के पहले 'र, हमेशा नीचे लिखा जाता है चाहे मात्रा पहले आवे या न आवे। जैसे—नं० ५ चि० पृ० १२८

आराम राम रोम शरम शरमीला

३, जब 'र, शब्द के अंत मे आता है तो—

(अ) यदि कोई स्वर अंत मे नही आता तो 'र, नीचे को लिखा जाता है। जैसे नं० १ चि० नीचे

मार मारो गाडी बार जारी
चार चोरी

(ब) ऊपर लिखे जाने वाले व्यंजनो के पश्चात् 'र' ऊपर लिखा जाता है। जैसे—नं० २ चित्र नीचे

रार हारी यारी वार

(स) तवर्ग, स और न के बाद यदि वृत हो तो 'र' वृत के साथ ऊपर या नीचे लिखा जाता है। जैसे नं० ३ चित्र नीचे

तीसरा अनुसार शिशिर

१
२
३
४
५
लेकिन
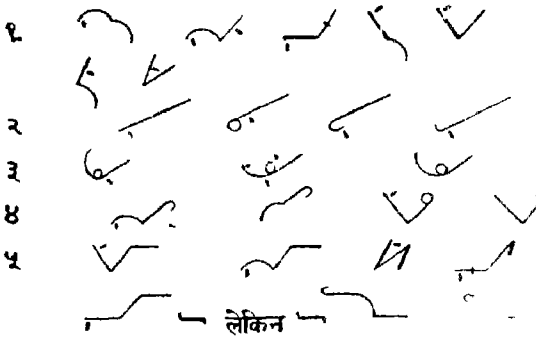
नोट—यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि तवर्ग और 'स' के दाएँ बाएँ का प्रयोग मे यदि नं० ३ (अ) के नियम का पालन हो सके तो जरूर करना चाहिये—जैसे 'तीसरा' शब्द के अंत मे मात्रा है इसलिए 'र' ऊपर

जाना चाहिए और यह तवर्ग के दाएँ-बाएँ दोनों समूह से लिखने पर हो सकता है पर यदि 'तीसर' लिखना हो तो दाएँ समूह से ही लिखा जाना चाहिये जिससे 'र' नीचे लिखा जा सके।

(द) जब 'र' किसी दूसरे व्यंजन के बाद आता है और उसमें अंत में कोई आँकडा होता है तो वह ऊपर को लिखा जाता है। जैसे--नं० ४ चित्र पृष्ठ १३०

मारना लडना पारस पैरना

४. जब 'र' शब्द के बीच में आता है तो अधिकतर ऊपर लिखा जाता है पर कभी-कभी सुचारुता के विचार से नीचे भी लिखा जाता है। जैसे-न० ५ चि० पृ०१३०

पारक मारग जारज खारिज
कारक --लेकिन-- क्लर्क सडक

---

[२] ल

जब 'ल' अकेला आता है तो हमेशा ऊपर लिखा जाता है चाहे मात्रा कहीं भी आवे।

१. जब ल' किसी शब्द संकेत का पहला अक्षर होता है तो--

(अ) यह अधिकतर ऊपर लिखा जाता है चाहे आरंभ में मात्रा आवे या न आवे। जैसे--नं० १ चि० पृ० १३२

लाठी लड्डू उलट उचल लाभ

(ब) जब कवर्ग, न, म या ड के पहले 'ल' आवे और उसके पहले कोई स्वर आवे तो 'ल' नीचे को लिखा जाता है और यदि स्वर पहले नहीं आता तो ऊपर को

लिखा जाता है। जैसे—नं० २ चित्र नीचे

लोक अलग लाम आलम

(स) जब 'ल' के बाद कोई वृत्त आवे और उसके बाद कोई वक्र व्यंजन आवे तो 'ल' उसी वृत्त के घुमाव के साथ लिखा जाता है। जैसे—नं० ३ चि० नीचे

लासुन लाजिम लसतू अलसर

१
२
३
४
५
६
७

लेकिन
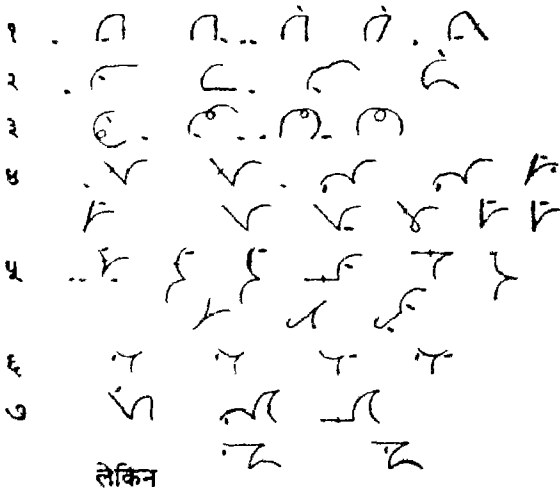
२. जब 'ल' शब्द के अन्त मे आता है तो

(अ) 'ल' अधिकतर ऊपर लिखा जाता है चाहे अंत मे मात्रा आवे या न आवे। जैसे—नं० ४ चि० ऊपर

फल फली माल माली जाली
जाल पल पीला फसली डाल डाली

(ब) कवर्ग, तवर्ग, स या ऊपर लिखे जाने वाले व्यंजनों के बाद, यदि अंत में स्वर आता है तो 'ल' ऊपर लिखा जाता है और यदि कोई स्वर नहीं आता तो नीचे को लिखा जाता है। इस नियम को पालन करने के लिये तवर्ग और 'स' के बाएँ या दाएँ समूह को सुविधानुसार प्रयोग करना चाहिए। जैसे-नं० ५ चि० पृ० १३२

थाली थाल दाल खेलो खेल असल
अमली बेल वाला

३. 'न' के पश्चात् 'ल' अधिकतर नीचे लिखा जाता है चाहे अन्त में मात्रा आवे या न आवे। जैसे-नं० ६ चि० पृ० १३२

नाल नाली नीला नाला

४. यदि 'ल' शब्द के बीच में आवे तो अधिकतर ऊपर लिखा जाता है पर कहीं कहीं सुचारता के विचार से नीचे भी लिखा जाता है। जैसे-नं० ७ चित्र पृ० १३२

बालटी मालती खेलती
-- लेकिन — कालम कोलंबो

———

अभ्यास—३८

—०—

नीचे की कहानी को संकेत-लिपि में अनुवाद करो—

एक नगर में एक बुढिया रहती थी। वह बहुत गरीब थी। लोगों की मजदूरी करके अपना पेट पालती थी। जब उसके पास कुछ पैसा हो गया तो उसने उन पैसों से एक मुर्गी मोल ली।

वह मुर्गी रोज एक अंडे दिया करती थी। बुढिया उसको बेच कर अपना काम चलाती थी। एक दिन बुढिया ने सोचा कि मुर्गी का पेट चीर कर सब अंडे निकाल लेना चाहिए जिससे बहुत सा दाम मिले।

यह सोच कर उसने मुर्गी को पकड़ कर छुरी से उसका पेट चीर डाला। मगर वहां एक अंडा भी न निकला। तब तो बुढिया को बहुत अफसोस हुआ और पछताने लगी।

—०

अभ्यास—३६

१

२

३

४

५

६

७

८

प, ब, ज और ह

जिस तरह आरंभ मे एक छोटा सा वृत 'म' के लिये आता है उसी तरह 'प' के लिए नं० १ का पहला चिन्ह, 'ब' के लिए नं० १ का दूसरा चिन्ह और 'ज' के लिए नं० १ का तीसरा चिन्ह काम मे आता है। (ह के लिये आगे नियम दिया है देखो चित्र पृष्ठ १३७) ये चिन्ह बीच और अन्त मे नही आते। यदि इन चिन्हों के पहले स्वर आता है तो भी ये चिन्ह नही लिखे जाते, पूरा चिन्ह लिखा जाता है। यह व्यंजनो मे इस प्रकार लगाये जाते है। देखो चि० पृ० १३७

२. पक, पच, पट, पप, पत (दा०-बा०), पम, पन, पय, पर, पल, पव, पस (बा०-दा०)

३. बक, बच, बट, बप, बत (दा० बा०), बम, बन, बल, बव, बस (दा०-बा०), बह (नी० ऊ०)

४ जक, जच, जट, जप, जत, (दा०-बा०), जम, जन, जय, जर, जल, जव, जस (दा० बा०)

प्रारंभ मे इन चिन्हो के बाद दूसरे आँकडे नही आते। यदि दूसरे आँकड़े लिखना सुविधाजनक हो तो ये चिन्ह पूरे लिखे जायँ। प मे ह, ब मे य तथा र, और ज मे ह नही मिलता।

आरंभ मे 'ह' लगाने के लिए उसके वर्णाक्षरों को छोटा भी कर सकते है। देखो चि० पृ० १२७ नं० १ का चौथा चिन्ह।

नियमानुसार इसमे मात्रा 'स' वृत के समान व्यञ्जन के पहले, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रखी जाती है। जैसे—नं० ५ चित्र पृष्ठ १३७

५ पाठक, पूजा, बचन, बेचेन, हाथी, जाप, जामा

बीच में 'ह' के लिए 'स्व' के समान वैसा ही एक बड़ा वृत बना दिया जाता है क्यों 'स्व' वृत बीच में नहीं आता। इस 'ह' वृत में भी नियमानुसार 'स' वृत के समान ही मात्राएँ लगती हैं और पढ़ी जाती है। जैसे—नं० ६ चित्र नीचे

६ चाहक महक माहक चौहान

चोहल पाहन ताहम

१ प , ब , ज , ह

२

३

४

५

६

७.

८

९

अंत मे भी 'ह' एक बडे वृत मे सूचित किया जाता है और 'स' वृत के नियमानुसार लगाया और पढा जाता है, पर यदि 'ह' के बाद 'ई' के अलावा कोई दूसरी मात्रा आवे तो उस बड़े वृत को न लगाकर 'ह' पूरा लिखा जाता है। उसी 'ह' के पश्चात् नियमानुसार प्रथम द्वितीय और तृतीय स्थान की मात्रा लगानी चाहिए। पर अंत मे यदि 'ई' की मात्रा हो तो वृत को जरा डेश के रूप मे नियमानुसार बढाना चाहिए। यदि इस वृत के बाद 'न-त' का ऑकडा आवे तो ह' वृत को बढाकर ये ऑकडे भी लगा दिये जाते हैं। कोई मात्रा या ऑकडे के अंत मे न आने पर 'ह' के लिये अंत मे केवल एक बडा वृत लगा दिया जाता है। जैसे—नं० ७ चि० पृ० १३७

७. कह कलह पनही पनहा पौदह
इम्तिहान

बीच या अंत मे यदि 'ह' के बाद 'स' आवे तो 'ह' का वृत बना कर उसके बाद 'स' का छोटा वृत भी बना दिया जाता है। ऐसी दशा मे यदि 'ह' के बाद कोई मात्रा आती है तो उसका विचार नही किया जाता है। जैसे—नं० ८ चित्र पृष्ठ १३७

८. महसूल तहसीलदार बेहोश बेहोशी

यह 'ह' का वृत 'स' वृत के समान ही लिखा जाता है, इसलिए यदि इसे सरल रेखा के अत मे 'स' के स्थान पर न लिख कर, 'न' के स्थान पर लिखे तो वृत के पहले 'न' भी पढा जायगा पर ऐसी दशा मे 'न' और 'ह' के बीच मात्रा न होगी। जैसे—न० ६ चि० पृष्ठ १३७
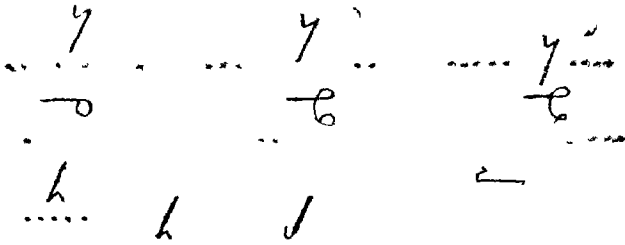
६. पनह कान्ह टोनह

———

शब्द-चिन्ह

पछताना अपेक्षा पूछना

कहना कहते हुये कहते है

चूँकि चौड़ाई जेनरल खिलाफ

पहिचानना पहिनना-पहिनना पहुँचाना-पहुँचना-पहुँचा

बाबत बंदोबस्त बनिस्बत जवाब देना
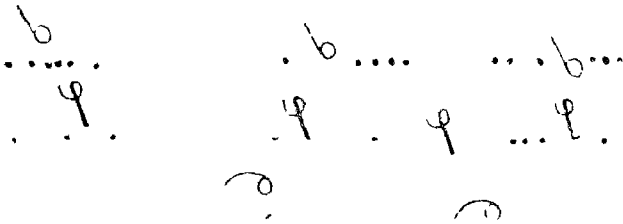
महान-महोदय मशहूर

अभ्यास—४०

१

२

३

४

५

६

अभ्यास—४१

१ पाश बाबा बिरला बिहाग पपड़ा परती

२ पनसेरी पहाड़ पहेली पारस पारसी

३. पारसनाथ पूरनमासी बीजगणित बीजारोपण

४. बीजमन्त्र बेबस बेहतरीन जलधर

५. जाफरान विकास पत्र-वाहक बैजनाथ

६. यदि कोई यह चाहता है कि उसकी बनी हुई चीजें दूर तक पहुचे, सारे स सार मे मशहूर हो तो उसको बड़ी इमानदारी, मेहनत, और लगाव के साथ इन महान काम को करना चाहिए।

७. आदमी का यह फर्ज है कि दूसरों के सुख-दुख को पहिचाने, उनके मुसीबत मे मदद करे और यदि समय पडे और हो सके तो उनके सारे काम का बन्दोबस्त कर दे।

८ क्यों महोदय जी आपकी उस दर्जी की बाबत क्या राय है। यह कपडे खूब अच्छा सीता है। उसके बने हुए कपडे पहनने से जी खुश हो जाता है। आज तो वह आपके यहाँ आया था। आपने उसे क्या जवाब दिया।

द्विध्वनिक मात्राएँ

किसी किसी शब्द में एक मात्रा और एक स्वर एक साथ आते हैं और उनका स्पष्ट अलग-अलग उच्चारण होता है। ऐसी मात्रा और स्वर को द्विध्वनिक चिन्ह कहते है। जैसे— आई, आओ, आऊँ, ओई, ऊआ, ईओ' आदि।

इन द्विध्वनिक चिन्हों में अधिकतर पहली मात्रा अधिक आवश्यक होती है। क्योंकि पहले आने के कारण उनका बोध होना आवश्यक है। उसके बाद आनेवाला स्वर तो सोचकर भी निकाला जा सकता। इसलिए यह बताने के लिए कि किसी स्थान पर एक मात्रा और दूसरा स्वर है एक विशेष चिन्ह से काम लिया जाता है। यह चिन्ह दो तरह ऊपर और नीचे से बनाये जाते हैं। जैसे न० १ और २ चित्र पृष्ठ १४३

ऊपर की तरफ बायाँ नं० १ और नीचे की तरफ दायाँ न० २ है।

बायाँ द्विध्वनिक मात्रा

१. बायाँ वाला द्विध्वनिक चिन्ह पहले स्थान पर 'ए' और उसके पश्चात् ही कोई दूसरे आनेवाले स्वर को सूचित करता है। जैसे—न० ३ चित्र १४३

 ३. गेआ मेआ

२. दूसरे स्थान पर 'ए' और 'ओ' और उसके पश्चात् ही आनेवाला कोई दूसरे स्वर। जैसे—नं० ४ चित्र पृष्ठ १४३

 ४ टेआ तेऊ कौआ पौआ लौआ

३. तीसरे स्थान पर 'इ-ई' और उसके पश्चात् आनेवाली कोई दूसरी मात्रा। जैसे नं० ५ पृष्ठ १४३

 ५. पिआ किया सिआ
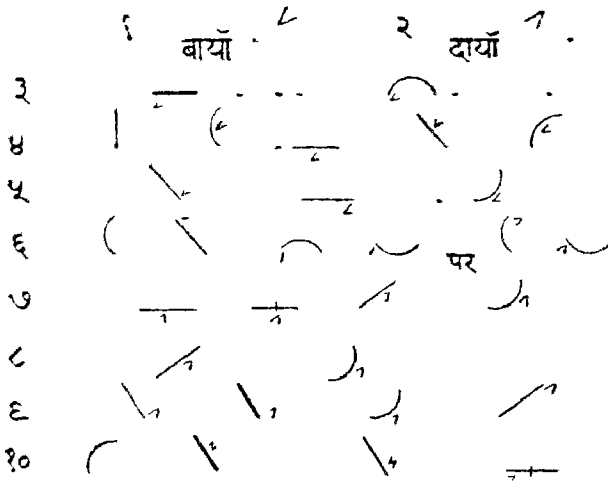
दायाँ द्विध्वनिक मात्रा

१. दायाँ वाला चिन्ह पहले स्थान में 'आ' और इसके पश्चात् आने वाले कोई भी दूसरे स्वर को सूचित करता है। 'आई' के लिए एक विशेष संकेत पहले ही से निरधारित किया जा चुका है, इसलिए 'आई' के स्थान पर पहले वाला ही चिन्ह काम में लाना चाहिये। जैसे--नं० ६ चित्र ऊपर

६ ताई माई नाई -पर- ताऊ नाऊ आदि

२. दूसरे स्थान पर 'ओ' और उसके पश्चात् आने वाला कोई दूसरा स्वर। जैसे—नं० ७ चित्र ऊपर

७. कोआ खोआ रोआ सोआ

यदि आप चाहते है कि 'रोआ-सोआ' न पढा जाकर 'रोई, और सोई' पढ़ी जाय तो आप उसी शब्द को लाइन काट कर लिखिये । जैसे--नं० ८ चित्र पृष्ठ १४३

८. रोई   सोई

३. तीसरे स्थान पर 'उ-ऊ' और उसके पश्चात् आने वाला कोई दूसरा स्वर जैसे—नं० ६ चित्र पृष्ठ १४३

६. पूआ   बूआ   सुई   रूई

त्रिध्वनिक मात्राएं

कभी २ किसी शब्द मे एक मात्रा और दो स्वर भी आते हैं। इनको त्रिध्वनिक मात्राएँ कहते हैं। इनके लिखने का नियम भी द्विध्वनिक मात्राओ की तरह है पर फर्क केवल इतना होता है कि द्विध्वनिक संकेत मे एक डेश और लगा दिया जाता है। बाकी नियम वही रहते है। जैसे--नं० १० चित्र पृष्ठ १४३

१. लाइए   बोआई   पिआऊ   खाइये

ट, त और क का प्रयोग

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

ट, त और क

१. यदि किसी व्यञ्जन रेखा को उसकी साधारण लम्बाई का आधा किया जाय तो ट, त या क और मिल गया समझा जाता है। पर प्रारम्भ में 'ह' आधा नहीं किया जाता लेकिन अगर 'ह' आधे के बाद 'र' या 'ल' आँकडा लगा हुआ कवर्ग आवे तो 'ह' को आधा कर भी सकते हैं। जैसे—नं० १ चित्र पृष्ठ १४६

१. पट-पत या पक, टट-तत या टक, चट-चत या चक
मट-मत या मक, नट-नत या नक

२. इसी तरह यदि 'य, र (नी), ल, व, स और ह' मोटा कर किया जाय तो 'ड' लग जाता है जैसे—नं० २ पहली लाइन। चित्र पृ० १४६

२. यड, रड लड, वड, सड, हड

३. ऊपर नियम १ के अलावा इसी तरह मोटे व्यञ्जनों को अद्धा करने से या 'य' र (नी), ल, व, स, म, न और ह', को मोटा कर अद्धा करने से 'द' और लग जाता है। जैसे—नं० २ दूसरी लाइन और नं० ३ चित्र पृष्ठ १४६

२. यद, रद, लद, वद, सद, हद मद, नद
३. बद — बद्माश बद्ला

४. जो मात्रा इस अर्द्ध व्यञ्जन के पहले आती है वह सबके पहले और जो मात्रा इस व्यञ्जन के बाद में आती है वह व्यञ्जन के बाद पढ़ी जाती है। अन्त मे ट, क या त पढ़ा जाता है। जैसे—नं० ४ चित्र पृष्ठ १४६

४. पेट मेट औघट महक थोक फीट पाट
अपट उपट याद लाद हौद हेड लेड

५, यदि व्यञ्जन के पहले वृत या ऑकड़े है, तो नियमानुसार पहले वृत या ऑकडे पढ़े जाते है, फिर मूल व्यञ्जन की रेखा उसके ऑकड़े और उसकी मात्रा पढ़ी जाती है और अन्त मे अर्द्ध किए हुए रेखा के चिन्ह ट, त या क पढ़े जाते हैं। जैसे–नं० ५ चित्र पृष्ठ १४६

५. संकट सिमिट प्लेट प्रेट मोलड

६, पर यदि व्यञ्जन के अन्त मे वृत या ऑकडे हो तो पहले व्यञ्जन, उसके बाद की मात्रा और तब अद्धा व्यंजन पढ़ा जाता है, फिर अन्त मे यह वृत और ऑकडे पढ़े जाते है। जैसे—नं० ६ चित्र पृष्ठ ४४६

६. पीनक, बातक, बतक, काटना, पीटता. पीटना, लेटना लोटना लादना वेदना

७, यह व्यञ्जन बीच मे भी ट, त, द या क के लिए आधे किये जाते है पर ऐसी दशा मे व्यञ्जन के तीनो स्थानो की मात्रा व्यञ्जन ही के पश्चात् और ट, त या क की मात्राएँ अगले व्यञ्जन के पहले यथा स्थान लगाई और पढ़ी जाती है। जैसे—नं० ७ चित्र पृष्ठ १४६

७ लाटरी, चटोरा, मकड़ी, पुटकी, मोटूमल फुटकल, पतीली, आरडिनेन्स, सोडावाटर, मोल्ड

८, यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि किसी व्यञ्जन को 'त या द' के लिए अद्धा तभी करते है जब कि इनसे सुचारता के विचार से अच्छे शब्द संकेत बनने की आशा होती है। जैसे—नं० ८ चित्र पृष्ठ १४६

८, पटरी या बदमाश [अच्छे संकेत नहीं]

६. न और द अर्द्ध के प्रयोग से दोनों संकेत अच्छे बनते हैं। जैसे—नं० ६ चि० पृ० १४६

६. पटरी या बदमाश [अच्छे संकेत]

१०. शब्द के अन्त में यदि त, ट, द, ड या क आवे और उनके पश्चात् मात्राएँ आवें तो अर्द्ध संकेत काम में न आवेंगे और पूरी रेखाएँ लिखी जायँगी। जैसे—नं० १० चित्र पृष्ठ १४६

१०. पाट पट्टी नट नटी मोट मोटी

पात पता लाड लादा मूड

सादा

अभ्यास—४२

खूब-अखबार खुदा

अद्भुत दफा फर्क फिर

१

२

३

४

५

अभ्यास—४३

नीम

जिस तरह जाडे में धूप अच्छी लगती है उसी तरह गरमी में छाया भली मालूम होती है। गर्मी में इधर दोपहरी आई उधर लोग घरो में छिपने लगे।

कुछ लोग पेडों के नीचे चारपाई बिछाकर आराम करते हैं। मगर जो मजा नीम की छाया मे आता है वह कही नही आता। नीम की पत्तियाँ बहुत घनी होती हैं। धूप को नीचे नहीं आने देतों।

नीम की हवा भी ठडी होती है। नीम की पत्तियाँ आरी की तरह कटावदार होती हैं। इनका रग हरा होता है इसको देख कर आँखों को ठंडक आती है।

नीम की पत्तियो का पानी सुरमा मे मिलाकर अजन बनता है। इसे आखो मे लगाते हैं। इसके लगाने से आँखों की बीमारियाँ जाती रहती हैं। नीम की टहनी से दातून बनता है। दातून करने से दाँत साफ और मजबूत होते हैं।

लडकों, क्या तुमने नीम को रोते हुए देखा है। कभी २ नीम के तनों में से पानी निकलता है। उसे नीम का रोना कहते हैं। यह पानी भी दवा के काम मे आता है।

———

तर, दर, टर या डर

१. जिस तरह व्यञ्जन को अद्धा करने से 'ट और क' आदि लगता है उसी तरह उसे दुगना करने से 'तर या दर' लग जाता है। जैसे—नं० १ चित्र नीचे

१. क-तर	प-तर	ल-तर	म-तर
क-दर	प-दर	ल-दर	म-दर
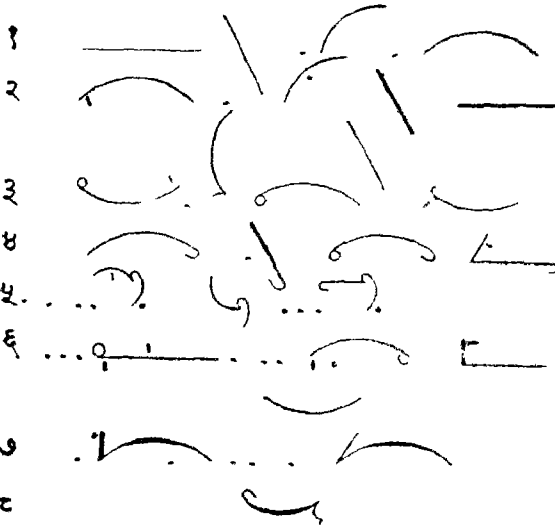
२. अद्धे की तरह जो मात्रा व्यञ्जन के पहले आती है वह सबसे पहले और जो मात्रा व्यञ्जन के बाद आती है वह व्यञ्जन के बाद पढ़ी जाती है। अन्त मे तर, दर आदि पढा जाता है। जैसे—नं २ चित्र ऊपर

२. मादर लेदर अबतर गीदड़ उत्तर पितर

३. अद्ध की तरह यदि व्यंजन के पहले वृत या ऑकड़े हो तो पहले ये वृत और मात्राएँ पढ़ी जाती है। और फिर 'तर या दर' पढा जाता है। जैसे—नं० ३ चित्र पृष्ठ १५२

३. सुन्दर समतर निरादर

४. पर यदि व्यञ्जन के अन्त मे वृत या ऑकड़े हो तो पहले व्यञ्जन और वृत या ऑकडे पढ़े जाते हैं और फिर 'तर या दर' पढा जाता है। जैसे—नं० ४ चित्र पृ० १५२

४. मन्तर बन्दर समन्तर चोकन्दर

५. यदि अन्त मे 'तर या दर' के बाद मात्रा हो तो संकेत पूरा लिखा जाता है। जैसे—नं० ५ चित्र पृ० १५२

५. मन्त्री सन्त्री कर्तृ

६. कभी २ सुविधानुसार अन्त मे 'तर या दर' के अलावा व्यञ्जन के द्विगुण करने से 'आतुर, टर या डर' लग जाता है। जैसे—नं० ६ चित्र पृष्ठ १५२

६. शोकातुर मास्टर डाक्टर निडर

७. 'म्ब या म्प' को दूना कर देने से अन्त मे केवल 'र' और लग जाता है, जैसे—नं० ७ चित्र पृष्ठ १५२

७. आडम्बर चेम्बर

८. इसी तरह 'न' को मोटा और दूना करने से 'र' और लग जाता है। जैसे –नं ८ चि० पृ० १५२

८. निरर्थक

अभ्यास—४४

अतर　　　　　अदर

अधिकतर　　　　अन्यत्र

बकरी
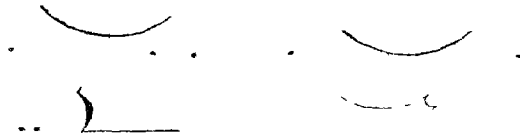
हामिद—आज हमारी बकरी कहा गई ?

अम्मा—बेटा ! कही बाहर खेत मे चर रही होगी

हामिद—अम्मा वह क्या खाता है ?

अम्मा—घास खाती है और कुछ नही खाती

हामिद—क्या ! घास और कुछ नहो !

अम्मा—हाँ, वह पानी भी खाती है और अगर रोटी दी जाय तो रोटी भी खा लेती है।

हामिद—और पत्ते भी खा लेती है।

अम्मा—हाँ ! पत्ते भी खा लेती है। पीपल के पत्त बडे शौक से खाती है।

हामिद—अम्मा उसके थनों मे दूध कहाँ के आता है ?

अम्मा—जो कुछ वह खाती है उसका दूध बनकर थनों मे जमा हो जाता है। पीपल के पत्तो से बहुत दूध बनता है।
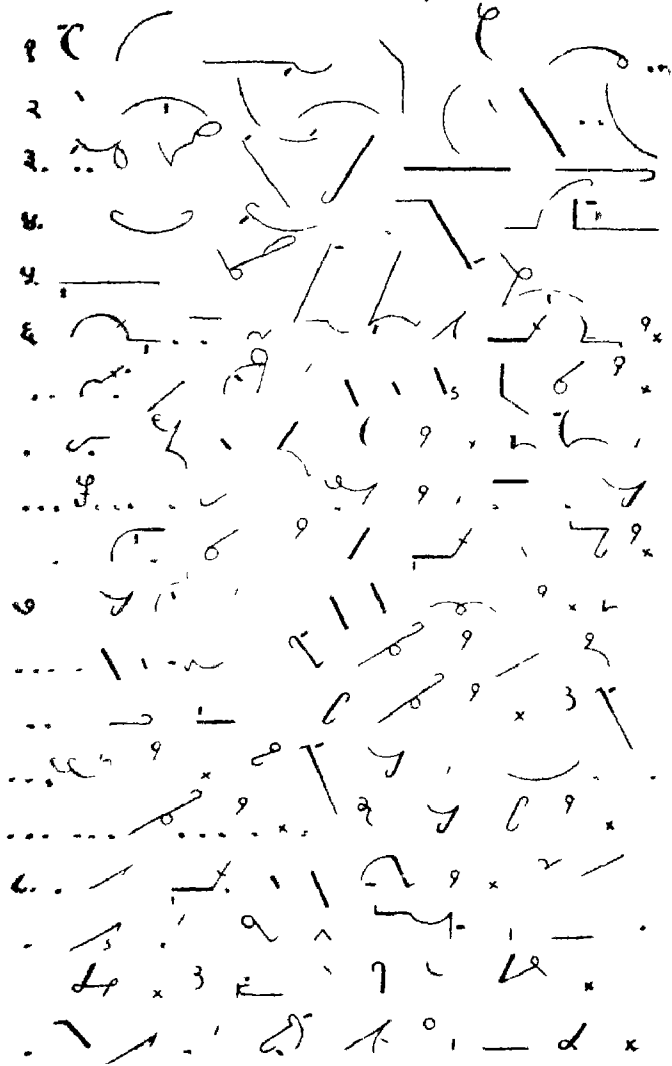
अभ्यास–४५

१

२

३.

४.

५.

६

७

८.

१ न०१ न०२

२

३.

४

५

६

७

पर या या

८. = =

९

व		वा		य		या
वे		वो		ये		यो
वी		वू		यी		यू

१० ११

११

व और य का प्रयोग

१—२. 'व' चिन्ह नं० १ से सूचित किया जाता है और 'य' चिन्ह नं० २ से। प्रारंभ में 'व' व्यंजनों में इस प्रकार मिलाया जाता है। जैसे—नं० २ चि० पृ० १५६

२. वक वट वच वप वत (बा०) वम वन वय वर वल वव वस (बा०) वह

३. प्रारंभ मे 'य' पूरा लिखा जाता है और यदि सुविधाजनक हो तो 'व' का भी पूरा सकेत लिख सकते है। ह (नी) मे व का चिन्ह नहीं लगता। अंत मे 'व' इस प्रकार मिलाया जाता है। जैसे—नं० ३ चि० पृ० १५६

३. कव टव चव पव तव (दा० बा०) मव नव यव, र (ऊ) व, र (नी) व, लव, वव, सव (दा० बा०), ह (ऊ) व, ह (नी व

४. अंत मे 'य' इस प्रकार मिलाया जाता है। जैसे—नं० ४ चि० पृ० १५६

४. कय टय चय पय तय (दा० बा०) मय नय, यय, र (उ) य, र (नी) य, लय, वय, सय (दा० बा०), ह (ऊ) य, ह (नी) य

५. आखीर मे स वृत को गोलाकर थोडा आगे बढ़ाने से 'व' और 'व' मे एक डैश लगाने से 'य' इस प्रकार मिलाया जाता है। जैसे—नं० ५ चित्र पृ० १५६

५. कसव कसय पसव पसय रसव रसय

६. 'व' का आँकड़ा से 'वी' भी पढ़ा जाता है। जैसे—नं० ६ चि० पृ० १५६

६. यशस्वी तेजस्वी

७. 'व' का आँकडा आरम्भ मे तभी तक लगता है जब तक केवल वर्णमाला के शुद्ध संकेत आते है, परन्तु ज्योंही वे वर्णमाला के संकेत स्वयं किसी वृत या आँकडे के साथ आवे तो व का आँकडा न लिखकर पूरा 'व' का संकेत लिखते है। जैसे—नं० ७ चित्र पृष्ठ १५६

७. विपत वियोग विपिन विनय प्रनय नाविक

पर – विप्र या विप्र, विकल या विकल

८. इस 'व और य' के व्यंजनो का प्रयोग अच्छे संकेतों के लिए ही किया जाता है। यदि इसके स्थान पर 'व और ज' मे अच्छे संकेत बने तो 'व और य' लिखने की आवश्यकता नही क्यों 'व और ब' तथा 'य और ज' मे भेद नहीं माना जाता है। जैसे—नं० ८ चि० पृ० १५६

८. नं० १ वर्ग मील	नं० २ वर्ग मील
नं० १ जोग शास्त्र	नं० २ योग शास्त्र

व और ज से लिखे हुए पहले संकेत अच्छे हैं।

९. बीच मे यह 'व–य' के चित्र पृष्ठ १५६ मे दिये हुये चिन्ह किसी भी व्यंजन के प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रखे जा सकते है और उस स्थान की मात्रा इस 'व–य' चिन्ह के बाद समझी जाती है। जैसे नं० ९ चित्र पृ० १५६

१०. उदाहरण—जैसे नं० १० चि० पृ० १५६ पवन – भवन

११. पर बीच मे यदि कोई मात्रा इन 'व–य' चिन्हो के पहले आती है तो 'व–य' चिन्ह न लिखा जाकर संकेत पूरे लिखे जाते है। जैसे—नं० ११ चित्र पृष्ठ १५६

११. निवेदन निवाज नेवता — आदि

१२. कभी कभी 'व' का चिन्ह बीच मे मिलाकर दोनों तरफ लिखा जाता है और उसकी मात्राएँ नियमानुसार अगले व्यंजन के पहले लगा दी जाती हैं। जैसे—नं० १२ चित्र पृष्ठ १५६

१२. पारिवारिक बलवती

षण, क्षण, शन आदि का प्रयोग

बहुत मे शब्दो के अन्त मे 'षण, 'छण, 'शन, आदि शब्दांश आते है। ये 'न' आंकडे के समान एक बडा आंकडा शब्दों के अंत मे लगाने से समझा और पढ़ा जाता है। इसके अंत मे भी स्वर आने से ये पूरा लिखा जाता है।

इसके लगाने के यह नियम हैं —

१ वक्र व्यजन के अन्दर अन्त मे 'न' आँकडे को बड़ा कर लगाया जाता है। नं० १ चित्र निचे

१ मिशन मेशन दर्शन

१

२

३

४

५

२. ल (ऊ) के साथ जब कवर्ग आता है जो यह ऊपर लिखा जाता है जैसे—नं० २ चित्र ऊपर

२. लक्षण

३. जब यह सरल व्यजनों में लगता है तो उस तरफ सरल व्यंजन के आरम्भ मे वृत या ऑकड़ा रहता है उसक दूसरे तरफ यह ऑकडा लगाया जाता है क्योंकि इसमे सुविधा होती है। जैसे—नं० ३ चित्र पृष्ठ १५६

३. स्टेशन घर्षण सुभाषण

४ शब्द के दूसरे सरल व्यंजनो मे सबसे आखार की मात्रा के विपरीत दिशा मे लगाया जाता है। जैसे—न० ४ चित्र पृष्ठ १५६

४. भाषण किशन कुशन भूषण

इससे मात्रा लगाने मे सुविधा होती है।

५. कभी कभी यह 'शन, सन' आदि का ऑकड़ा बीच में भी आता है उस समय उसमे स्वर नियमानुसार अगले व्यञ्जन के पहले लगाये जाते है। जैसे—नं० ५ चित्र पृष्ठ १५६

५. खुश-नसीब किशनपाल

अभ्यास - ४६
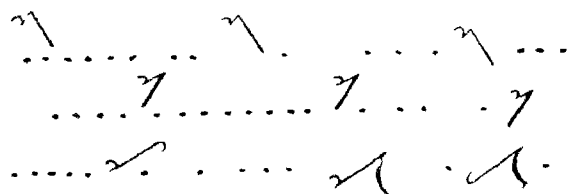
व्यापार	विपत	वापस
वाजिब	बेजा	वजह
वरन	विरुद्ध	विधि

१.

२.

३.

४.

५.

६.

७.

अभ्यास—४७

विद्या-विद्वान   विद्यार्थी

विषय   प्रारम्भ   मजबूत
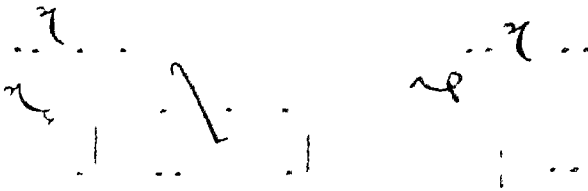
अटकल   मोटा   उल्टा

कबूतर

विद्यार्थियों तुमने कबूतर तो जरूर देखा होगा । इसकी सूरत में भोलापन बरसता है । ये छोटे-मोटे सब किस्म के होते हैं । विद्वानों ने इनके विषय की विद्या की बड़ी अनुसन्धान की है । इनकी याददाश्त बड़ी तेज होती है । यह एक बार अपना घर देख लेते हैं । तो किसी विधि भी नहीं भूलते ।

कबूतर बड़ा मिलनसार और प्रेमी जानवर है । प्रारम्भ में तो वह आदमी को देखकर बड़ी दूर भागता है पर जब मिल जाता है तो उनके साथ प्रेम से रहता है । यह सब चीजें नहीं खाता पर दाने और रोटी-पूरी बड़े चाव के साथ खाता है ।

घर से उसको कितना ही दूर ले जाकर छोड़ो तुरन्त अपने घर उलटा चला आता है । इसको ज्यादा वक्त नहीं लगता, अटकल से खोजने मे वक्त नहीं खोता ।

यह बड़ी ही समझदार चिड़िया है ।

— ०० —

क्व, ल, रर

'क्व और ख्व' के लिए 'क और ख' के, 'ग्व 'और घ्व' के लिए 'ग और घ' के आरम्भ में ऊपर को 'ल' आँकडे के स्थान पर वैसा ही एक बड़ा आँकड़ा लगा दिया जाता जैसे—नं० १ चि० नीचे

१. १. क्व २. ख्व ३. ग्व ४. घ्व

१ २

२

३ १ २

४
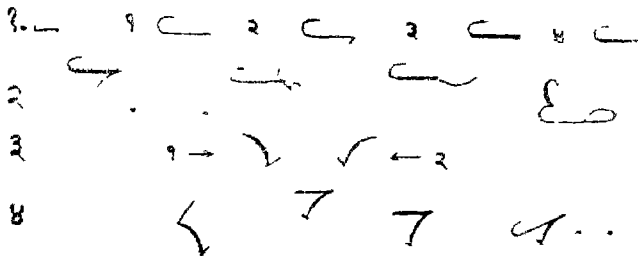
यह आँकडा आरम्भ और बीच मे लगाया जाता है। स्वर इसके पहले या बाद मे आ सकता है। जैसे—नं० २ चि० ऊपर

२. ग्वाला ख्वाहिश अग्वानी दरख्वास्त

र (नी) और ल (नी) को मोटा करके एक डैश लगाने से एक 'र' और लग जाता है। जैसे—नं० ३—'र-र' 'ल-र'। यह केवल शब्द के अंत मे आता है। जैसे—नं० ४ चि० ऊपर

४. चरर कालर गूलर बीलर

१

२.

३

४

५ ऑकडा

६

७

८

९

१०

११

१२

१३

१४ या

१५ या

१६

१७

१८

कुछ प्रत्यय शब्द और उनके संकेत

प्रत्यय वे शब्द हैं जो शब्दों के अन्त में जुड़कर उनके अर्थ मे विशेषता पैदा करते अथवा भाव बदल देते हैं।

ये प्रत्यय संकेत शब्दों के अंत मे लिखे और पढ़े जाते हैं। यदि मिलने मे असुविधा हो तो शब्दो के पास ही लिख देना चाहिये। [चित्रो को बाए तरफ देखिये]

१. आगार = धनागार कारागार शयनागार स्नानागार
२. कर = हितकर सुखकर रुचिकर शांतिकर
३. कारक = हानिकारक गुणकारक फलकारक हितकारक
४ कारी = हानिकारी गुणकारी फलकारी हितकारी
५. अर्थी —'र' आँकड़ा और थी = लाभार्थी परीक्षार्थी परमार्थी
६. आलय = शिवालय हिमालय औषधालय संग्रहालय
७. शील = धर्मशील गुणशील न्यायशील कर्मशील
८. शाली = बलशाली प्रभावशाली
९. हर, हारी } = सन्तापहर सन्तापहर पापहारी
१०. हार } = मनोहर अनुहार
११. अहार प्रतिहार बिहार
१२. संगहार
१३. वाला = दूधवाला घीवाला तेलवाला आमवाला
१४. हीन = बुद्धिहीन बलहीन ज्ञानहीन धर्महीन
१५. वान = गाड़ीवान कोचवान इक्केवान
१६. जनक = सन्तोषजनक आशाजनक
१७. क —(अद्धा से) = गायक पाठक मारक
१८. वट = मिलावट बनावट सजावट

१९

२०

२१

२२

२३

२४

२५

२६

२७

२८

२९ या

३०

३१

३२

३३

३४

३५

३६

१६. हट = फिसलाहट चिकनाहट

२०. गुना = संख्या के नीचे 'न' से दुगुना तिगुना आदि

२१. वाँ — संख्यो के बाद = सातवाँ नवाँ आठवाँ

२२. पन — मिला या अलग = लकड़पन मीठापन

२३. मान = बुद्धिमान अपमान

२४. त्व = दासत्व गुरुत्व लघुत्व महत्व

२५. दाता = व्याख्यानदाता सुखदाता

२६. मन्द = अक्लमन्द दौलतमन्द

२७. बीन = तमाशबीन खुर्दबीन

२८. पूर्वक = सुखपूर्वक दुखपूर्वक

२९. पूर्ण = रहस्यपूर्ण शशिपूर्ण

३०. ता = कटुता मृदुलता मित्रता कुशलता

३१. रूपी — काट कर = विद्यारूपी

३२. सागर = विद्यासागर दयासागर गुनसागर

३३. सार = मिलनसार अतिसार

३४. पति — काटकर = गनपति जदुपति

३५. वाहा = चरवाहा

३६. खाना — काटकर = गुसलखाना कूड़ाखाना

३७

३८

३९

४०

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

३७. प्रद = सन्तोषप्रद आशाप्रद
३८. नामा -- काटकर = हलफनामा बयनामा इकरारनामा
३६. साजी = जलसाजी
४० वादी = राष्ट्रवादी साम्राज्यवादी

उपसर्ग

उपसर्ग वे शब्द है जो शब्दो के पूर्व जुड़कर उनके अर्थ को घटाते बढाते अथवा उलट देते हैं। जैसे--सजन, मुख्य आदि।

१. प्र = प्रयत्न प्रचार प्रबल प्रख्यात
२ परा - (अलग)— पराजय पराभव पराक्रम
३. अप = (लाइन के ऊपर)— अपकीर्ति अपमान अपशब्द अपकार
४. उप = (लाइन काटकर)— उपकार उपकृत
५. अनु = (लाइन के ऊपर) — अनुदिन अनुकरन अनुचर
६. नि, इन = (लाइन पर)-- निधन निवास निषिद्ध इनमाफ
७ निस = निष्पाप निष्कर्म निश्चय
८. निर = (लाइन पर, मिला या अलग) — निरजीव निरमल
९. आ = (साधारणत लाइन के ऊपर) — आमरण आजीवन आकर्षण आयोजन आक्लान्त
१०. अति = (लाइन के ऊपर)- अतिकाल अतिव्याप्त अतिशय
११. ना = (काट कर)— नालायक नाइत्तिफाक नापसन्द

१२

१३

१४

१५ 'सत'

१६

१७

१८

१९

२०

२१

२२

२३

२४

२५

२६.

२७

१२. समा, सम, मन = संकेत के पहिले अलग या मिलाकर—
समागम संतोष सग्रह संरक्षण

१३. स, सु = (नियमानुसार 'स' वृत्त से)—
सफल सजल सजीव सयत्न

१४. सह = (नियमानुसार स + ह से)--
सहचर सहगमन सहोदर सहवास

१५. सत् = (ध्वनि के अनुसार)— सज्जन सतगुरु संमित्र

१६. 'स्व' = नियमानुसार 'स्व' वृत से-- स्वकुल स्वदेश स्वरचित

१७. दुस = (लाइन पर, अलग या मिला)--
दुष्कर्म दुश्प्राप्य दुष्चरित्र

१८. दुल = (,, ,,)-- दुरजन दुरगम

१९. कु = (अलग या मिला)-- कुचाल कुमुत कुमारग

२०. चिर = चिरायु चिरकाल

२१. भर = भरपेट भरपूर भरसक

२२ बद = (व अद्धा) -- वदबू बदमाश बदशकल
बदकार बदनाम

२३. कम, कान = (व्यंजन के आरम्भ मे एक बिन्दु) —
कमजोर कमजोरी कम्बख्त काफ्रेस

२४. हर = (मिला या अलग)—हररोज हरसाल हरदिन

२५. हम = (काट कर)—हमसाया हमजुल्फ

२६ अध = (मिलाकर या अलग) --
अधपक्का अधसेरी अधजल

२७. वी = (नियमानुसार)-- विदेश विज्ञान वियोग
विकल विशेष

२८ ३९ ३०
३१
३२

२८ बे=(लाइन पर)— बइमान बेकार बेहाल
२६. बा=(लाइन के ऊपर)-- बाजाब्ता बाजाब्ता बाकायदा
३०. कुल= कुलबुध कुलधर्म कुलदेवता
कुलागार कुलश्रेष्ठ
३१. जीवन=(लाइन को काट कर)-- जीवनलीला जीवनधन
जीवन-चरित्र
३२ यथा=(काट कर लाइन के ऊपर)-- यथायोग
यथाकाल यथाशक्ति

संधि

संधि का हिन्दी भाषा में बहुत अधिक प्रयोग होता है जिसके कारण शब्द अपने नियमित रूप से बहुत बढ़ जाते हैं। और सांकेतिक लिपि में पूरे-संकेत लिखने पर गति में रुकावट होती है। इसलिए निम्न नियमों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इन नियमों के अनुसार लिखे जाने पर शब्द बहुत छोटे संकेतों में लिखे जा सकते हैं।

संधि मे कम से कम दो शब्द होते हैं। एक जिसमे संधि की जाति है और दूसरा जिसकी संधि की जाती है। जिसमे संधि का जाती है, उस शब्द को यथानियम पूरा लिखना चाहिए पर जिस शब्द की संधि की जाती है उसका पहला अक्षर जिस शब्द मे संधि की जाती है उसके पहले या बाद — पहले, द्वितीय या तृतीय स्थान पर — शब्द के पास लिखना चाहिए।

१—पहले—आरंभ मे लिखने से 'ए'

बीच ,, ,, ,, 'ए या ओ'

अंत ,, ,, ,, 'ई'

२—बाद— आरंभ मे लिखने से 'आ'

बीच ,, ,, ,, 'ओ'

अंत ,, ,, ,, 'ऊ'

आड़ी रेखाओ मे पहले ऊपर .. तरफ और बाद नीचे की तरफ समझा जाता है। इन संधियो का प्रयोग उन शब्दों के लिए न करना चाहिए जो छोटे हो और आसानी से लिखे जा सकते हो। संधि के कुछ उदाहरण —
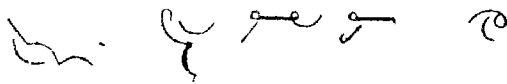
परमेश्वर श्रद्धाजलि सिहासनारूढ़

सिहावलोकन महोत्सव

—०—

क्रिया

काम के करने या होने को क्रिया कहते हैं। सर्वनाम के समान यह भी ध्यान देने योग्य विषय है। रूप के विचार में नियमानुसार इनके कुछ साधारण चिन्ह निरधारित किये गये हैं जो लिपि को संक्षिप्त करने के साथ ही साथ सुचारुता और पढ़ने में सहायता देते हैं।

कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार क्रिया को मुहावरे से पढ़ना होता है जैसे यदि 'जाता' शब्द लिखा है तो 'वे' के साथ 'जाते' और वह (स्त्रीलिंग) के साथ 'जाती' पढ़ा जायगा। जैसे नीचे —

(अ)

—:o—

(अ)

(चित्र बाएँ तरफ)

पहले क्रियाओं के मूलरूप पर ध्यान दीजिये—नं० १ से ६

मूलरूप (सकर्मक)	साधारण प्रेरणार्थक, सकर्मक	सकर्मक,	मूलरूप (अकर्मक)	साधारण सकर्मक	प्रेरणार्थक सकर्मक
१—खाना	खिलाना	खिलवाना,	गिरना	गिराना	गिरवाना
२—खाता	खिलाता	खिलवाता,	गिरता	गिराता	गिरवाता
३—खाऊँ	खिलाऊँ	खिलवाऊँ,	गिरूँ	गिराऊँ	गिरवाऊँ
४—खाओ	खिलाओ	खिलवाओ,	गिरो	गिराओ	गिरवाओ
५—खाइए	खिलाइए	खिलवाइए,	गिरिए	गिराइए	गिरवाइए
६—खावें	खिलावें	खिलवावें,	गिरें	गिरावें	गिरवावें
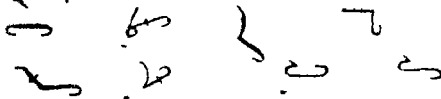
ऊपर क्रिया के दो रूप दिये गये हैं। एक सकर्मक क्रिया और दूसरी अकर्मक क्रिया से बनी हुई सकर्मक क्रिया है। इनके रूप प्रेरणार्थक क्रिया में गरदानकार दिखलाया गया है।

—o—

१. अकर्मक क्रिया में कर्म की आवश्यकता नहीं होती और बगैर कर्म के ही सार्थक वाक्य बन जाते हैं। जैसे—मैं गिर पड़ा।
२. सकर्मक क्रिया में कर्म की आवश्यकता होती है और बगैर कर्म के सार्थक वाक्य नहीं बन सकते हैं। जैसे—मैंने आम खाया और बगैर 'आम' शब्द के, वाक्य पूरा नहीं होता।
३. प्रेरणार्थक क्रिया से जाना जाता है कि कर्ता किसी दूसरे से काम लेता है। जैसे— वह दिवाल मजदूरों से गिरवाता है।

१. क्रिया के मूल रूप को उच्चारण के विचार से बनाकर (१) मे 'न' ऑकड़ा, (२) मे 'त' ऑकड़ा, (३) मे 'ऊ' का चिन्ह (४) मे 'ओ' का चिन्ह (५) मे 'इए' का चिन्ह और (६) मे 'व' का चिन्ह लगाया गया है। इसके लिए निम्न चिन्ह निरधारित किए गए हैं। ये सदा लाइन पर लिखे जाते है। जैसे—नीचे नं० १

१ — १. 'न' का ऑकडा २. 'त' का ऑकडा
३. ऊ = ४ ओ = ५ इए
६. वें =

२.—

(१) 'न' का ऑकडा (२) 'त' का ऑकडा
(३) 'ऊ' (४) 'ओ' (५) 'इए'
(६) 'वे

२. सकर्मक के दूसरे रूप का ध्वनि के अनुसार सकेत बनाकर सदा प्रथम स्थान मे लिखना चाहिये क्योकि कि साधारणत इसमे प्रथम स्थान की मात्रा अवश्य रहती है। जैसे—चित्र ऊपर

गिराना	चढाना	दवाना	काटना
भागना	तोडना	खिलाता	खिलाना

उपरोक्त क्रियाये मुहावरे से बड़ी सरलता से पढ ली जाती है क्योंकि सकर्मक क्रिया मे साधारणत कर्म अवश्य मिलता है और कर्म मिलते ही क्रिया का सकर्मक रूप पढना बहुत सरल हो जाता है। परन्तु यदि फिर भी पढने मे दिक्कत पडने की सम्भावना हो तो इन सकर्मक क्रियाओ के पास आरम्भ मे एक 'आ' की मात्रा रख सकते है। इससे मतलब बिलकुल साफ हो जायगा कि क्रिया सकर्मक के दूसरे रूप है जैसे—चित्र नीचे नं० १ व २
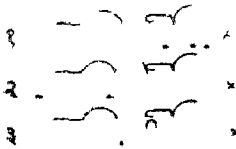
१ काम करने के लिए।

२ काम कराने के लिए।

३ काम करवाने के लिए।

३ प्रेरणार्थक क्रिया को भी प्रथम स्थान मे लाइन के ऊपर लिखना चाहिए पर क्रिया के अंत मे 'व' का चिन्ह अलग या मिलाकर अवश्य लिखना चाहिये। रूपो को ध्यान मे देखिये और समझिये कि यह 'व' चिन्ह कहाँ पर किस प्रकार से मिलाया गया है जैसे नं० ३ चित्र ऊपर

(ब)

वर्तमान—१

कर्तृवाच्य क्रिया के रूपों पर ध्यान दीजिये—

मैं खाता हूँ। मैं खा रहा हूँ। मैं खा चुका हूँ। मैंने खाया है।

१. मैं खाता हूँ, वह खाता है, तुम खाते हो, हम खाते हैं।
'त' का लोप कर क्रिया के अंतिम व्यंजन को आधा कर देते हैं, फिर 'है' आदि को लगा कर मुहावरे में पढ़ लेते हैं। यह रूप लाइन के ऊपर, लाइन पर या लाइन काट कर क्रिया के ध्वनि के अनुसार लिखा जाता है जैसे—ऊपर का प्रथम

२. मैं खा रहा हूँ, वह खा रहा है, तुम खा रहे हो, हम खा रहे हैं।
'रहा हूँ, रहा है, रहे हो' आदि के लिये क्रिया के अंतिम व्यंजन को दुगुना कर दिया जाता है और फिर 'है' आदि लगा कर मुहावरे से पढ लिया जाता है। जैसे—ऊपर का द्वितीय

३. मैं खा चुका हूँ, वह खा चुका है, तुम खा चुके हो—आदि।
'चुका' के लिए 'क' से जहाँ तक हो क्रिया को काट दो और यदि सम्भव न हो तो उसके पास लिखो। इसमें 'च' का लोप हो जाता है। जैसे—ऊपर का तृतीय

४. मैंने खाया है—क्रिया को पूरा लिख कर 'है' को मिला देना चाहिए। ऊपर का चतुर्थ

भूतकाल—२
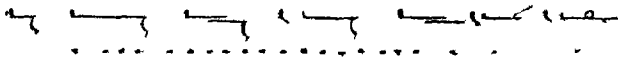
१. मैं खाता था—अर्द्ध से लिखा जायगा । ऊपर १

२ मैं खा रहा था—अन्तिम व्यञ्जन को दुगना कर 'था' लगाया जायगा । ऊपर २

३. मै खा चुका था—'क' से काट कर 'था' लगा दिया गया । ऊपर ३

४ मैंने खाया था—क्रिया को पूरा लिख कर 'था' को मिला दिया गया । ऊपर ४

५. मै खा चुका—'क' से 'चुका' सूचित होता है । ऊपर ५

६. मैंने खाया—'य' को लगा दे । ऊपर ६

७. मैंने खाया होगा—क्रिया के पश्चात् 'ह और ग' का चिन्ह मिला दें । ऊपर ७

भूतकाल की बहुत सी क्रियाएँ स्वतन्त्र रूप से 'गया' की क्रिया लगाकर बनाई जाती हैं। इसमे 'गया' शब्द के स्थान पर उसका पूरा चिन्ह न लिखकर 'व' के छोटे रूप से सूचित करते हैं। जैसे—नीचे
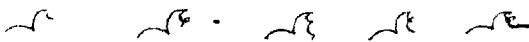
१—मिल गया । २—मिल गया है । ३—मिल गया था ।
४—मिल गया होता । ५—मिल गया होगा ।

'ब' चिन्ह के अन्दर 'स' वृत के साथ 'त' और 'ग' लगाने मे 'होता' और 'होगा' पढ़ा जायगा। अन्य स्थानो मे पूरा 'ह' वृत और 'त या ग' लगाया जायगा।

भविष्यत काल - ३
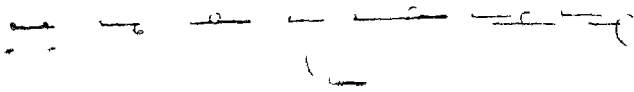
१. मैं खाऊँगा—वृतवाली अनुस्वार की मात्रा लगा कर क्रिया को थोडा डेश के रूप मे अक्षर के प्रवाह की तरफ बढ़ा दीजिये। ऊपर १

२. मैं खाऊँ—'ऊ' का चिन्ह जैसे पहले बताया गया है लगाइये। ऊपर २

३. मै खाता हूँगा—'न' का लोप कर तथा क्रिया को अद्धा कर 'हूगा' जोडा गया। ऊपर ३

४. मैं खाता रहा हूँगा—ऐसी क्रियाओ मे जहा 'न' के पश्चात 'रहा' आये तो क्रिया के अंत मे 'त' लगाकर दुगुना कर दिया जाता है और फिर 'हूगा' आदि जोडते है। ऐसा करने से 'खाता रहा हूँगा' और 'खा रहा हूँगा' का अंतर स्पष्ट भी हो जाता है। ऊपर ४ व ५

५. मैं खा रहा हूँगा— 'रहा' के लिए क्रिया के आखरी अक्षर को दुगुना करके 'हूगा' जोड़ा गया। ऊपर ५

६. मै खा चुका हूँगा—'क' से चुका के लिये काट दिया और फिर 'हूँगा' जोड दिया। ऊपर ६

७. मैं खा चुका होता—'क+होता' चुका होता। ऊपर ७

क्रियाओं में 'हो' का प्रयोग

'हो' को निम्न प्रकार से सूचित करते हैं :—

१

२

३ (१)

(२)
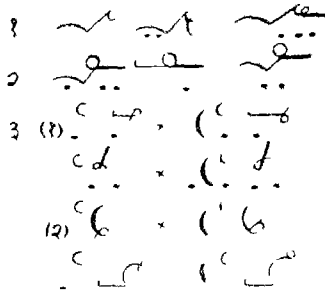
(१) क्रिया 'गया' के अन्दर 'स' वृत से जैसे—

नं० १ (१) — मारा गया।

१ (२) — मारा गया होता।

१ (३) — मारा गया होगा।

(२) क्रियाओं के बीच में 'ह' वृत से जैसे—

नं० २ (१) — मारा होगा।

२ (२) — खाता होगा।

२ (३) — मरा होगा।

(३) अन्त में—

यदि (१) शब्द का अन्तिम अक्षर सरल रेखा है।

तो ऊपर की तरफ जैसे—

नं० ३ (१) — वह खाता है। यदि वह खाता हो।

वह जाता है। यदि वह जाता हो।

यदि (२) शब्द का अन्तिम अक्षर वक्र रेखा है तो अलग से 'ह्' लगाना चाहिये। जैसे—चि० पृ० १८१ का नं० ३ (२) -- वह देता है। यदि वह देता हो।
वह खेलता है। यदि वह खेलता हो।

कर्मवाच्य क्रियाएँ

१—(१) मैं लाया जाता हूँ। ज+हूँ जाता हूँ।
(२) मैं लाया जा रहा हूँ। 'रहा' के लिए 'ज' दुगुना कर फिर 'हू' लगा दिया।
(३) कपड़ा लाया जाता होगा। ज+हो+गा जाता होगा।
(४ यदि वह लाया जाता हो। ज+हो—जाता हो।
(५) तुम लाये गये हो। गये+हो—गये हो।

२—(१) तुम लाये गये थे। गये+थे—गये थे।
(२) छाता लाया गया होगा। गया+हो+ग—गया होगा।
(३) मैं लाया जाता था। ज थ जाता था।
(४) वह लाया जा रहा था। 'रहा' के लिये 'ज' को दुगुना किया फिर 'था' लगा दिया।
(५) वे लाये जाते। 'जा' और 'त' आंकड़े से जाते।

३—(१) मैं लाया गया होता। गया + हो + ता—गया होता।
(२) वह लाया जाता होता। ज + हो + ता—जाता होता।
(३) वह लाया जायगा। भविष्य काल।
(४) छाता लाया जाय तो मैं देखूँ। 'जाय' मे 'या' का लोप।
(५) कपडा लाया जा चुका है। ज + क है—जा चुका है।

[नोट—क्रियाएँ जो मिल सकें उन्हें मिला देनी चाहिए।]

—:o—

कुछ और साधारण वाक्य

१
२
३

१. मुझको खाना चाहिए। अर्द्ध-वृत के आँकड़े को क्रिया मे लगाने से 'चाहिए' लगता है। 'न' लोप हो जाता है। नं० १ चित्र ऊ०

२. मै खा सकता हूँ। 'सकता हूँ' क्रिया से मिला कर लिख सकते हैं। नं० २ चित्र ऊपर

३. मैं खेलने के लिए बाजार गया। क्रिया मे 'ल' लगाने से 'लिए' पढा जाता है। नं० ३ चित्र ऊपर

४. क्रिया या दूसरे शब्दों को कुछ वर्णाक्षरों मे काटने पर विशेष अर्थ सूचित होता है। जैसे—चित्र पृ० १८४
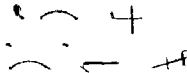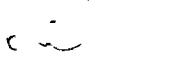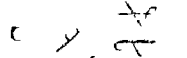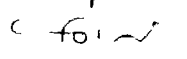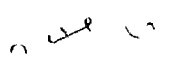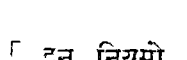
१. क्रिया को 'ड' से काटने पर 'डाला' पढ़ा जायगा।
२. ,, ,, 'र' ,, ,, 'रखा' ,, ,,

[नोट—र अलग लिखा जाने पर 'रहा' पढ़ा जाता है।]

३ ,, ,, 'क' ,, ,, 'चुका' ,, ,,
४ ,, ,, 'ड' ,, ,, 'पड़ा' ,, ,,
५ ,, ,, 'ल' ,, ,, 'लगा' ,, ,,

[नोट—लाया के वास्ते 'ल' अलग से लिखा जाता है]

६ क्रियाको 'प+स थन' से काटने पर उपस्थित पढ़ा जायगा।

१ × मैंने आम खा डाला।
२ × आम [illegible] रखे हैं।
३ × वह पानी पी चुका है।
४ × वह रास्ते में गिर पड़ा।
५ वह कहने लगा मैं मारूँगा।
६ तुम वहां उपस्थित नहीं थे।

[इन नियमों, क्रियायें बड़ी सरलतापूर्वक लिखी और पढ़ी जाती है। विद्यार्थियों को चाहिये कि वे इन्हीं नियमों के आधार पर क्रियाओं को खूब अच्छी तरह से अध्ययन कर ले क्योंकि हिन्दी में क्रियाओं का ध्यान सबसे मुख्य स्थान है। इसके अलावा क्रिया के [illegible] में और भी दूसरे रूप मिलेंगे। उनमें से अधिकांश का वर्णन आगे के वाक्यांश के परिच्छेद में मिलेगा। विद्यार्थियों को चाहिए कि ऐसे चिन्ह वे स्वयं बनाने का प्रयत्न करें]

कुछ संख्यावाचक संकेत

१. १, २ संख्याएँ यथावत लिखी और पढ़ी जाती हैं।

२. पहला के लिये शब्द चिन्ह नं० १ बना है। दूसरा, तीसरा चौथा इस तरह लिखा जाता है जैसे नं० २ चित्र नीचे

३. पाचवा छठवा सातवा आदि इस तरह लिखा जाता है। जैसे नं० ३ चित्र नीचे

[नोट—संख्याओं के बाद जो आठ का सा चिन्ह बना है वह 'व' का चिन्ह है।]

४. दोनों तीनों, चारों आदि को 'ओ' का मात्रा लगाकर बनाते है जैसे—नं० ४ चित्र नीचे

१ \ २ .२/ , ३/ ४८.

३ ५८ , ६८ , ७८ , ८८. आदि

४ . २- , ३- , ४-. , ५-. आदि

५ २ , ३ , ४ आदि

६ . १ . (२) (३). . (४) .

(५) . (६).. ..(७) . .

(८) (९) आदि

५ दुगुना और तिगुना चौगुना आदि इस प्रकार लिखा जाता हैं जैसे—नं० ५ चित्र ऊपर। नीचे 'न' का चिन्ह रखते हैं।

६. सैकड़े के लिये 'स'—नं० ६-१, चि० पृष्ठ १८५
हजार के लिये 'ह'—नं० ६-२,
लाख के लिये 'ल'—नं० ६-३,
करोड के लिये 'क' –नं० ६-४,
अरब के लिये 'र' (र्ना) नं० ६-५,
खरब के लिये 'ख'—नं० ६-६ और सख्य के लिये 'मक' का चिन्ह—नं० ६-७ लगता है तथा दस हजार, दस लाख आदि के लिये सांकेतिक चिन्ह के अंत मे 'स' वृत लगा दिया जाता है। जैसे—नं० ६-८ व ६- , दस लाख, दस हजार आदि। चि० पृ० १८५

— ० —

अभ्यास—४८

१. मैं आम खाता हूं। तुम क्या खा रहे हो? राम तो पहले ही खा चुका है। सोहन ने भी तो खाया है। जब मैं आम खा रहा था तो वह पहले ही से आ डटा। पर राम उसके भी पहले आ चुका था। सोहन ने भी खूब आम खाये। गोविन्द भी एक किनारे बैठा आम खाता था और जो कुछ आम खा चुकता था उसकी गुठली सोहन पर फेंक देता था।

२. रात आठ बजे या तो मैं दूध पी रहा हूंगा या पी चुका हूंगा। दूध तो मैं और पहले पी चुका होता मगर क्या करूँ घर में तो कोई था ही नहीं। भाई कहीं घूमने जा रहे होंगे और रमेश कहीं खेलता होगा। आखिर क्या वे लोग न पियेंगे मैं ही पीता।

३. स्टेशन पर कितनी ही चीजें बाहर से लाई जाती हैं। अगर यह चीजें बाहर से न लाई जाती तो काम न चलता। जब मैं वहाँ पहुचा तो आम लाया जा रहा था। लीचियाँ पहले ही से लाई

गई थीं और भी बहुत से फल लाये जाते होंगे। यह देख कर मुझसे न रहा गया। मैंने सोचा मुझे भी कुछ खाना चाहिए। यह सोच कर आम पर मैं टूट पड़ा और जितना खा सकता था खाया।

४ अगर तुमने आम खा डाला तो कौन सी बड़ी बात हुई। वह तो घर पर इसीलिए रखे थे। तुम पहले से वहाँ उपस्थित नहीं थे नहीं तो तुमको पहले मिल जाता। श्याम को तो मैं पहले ही दे चुका था। वह तो आज घर पर ही था। रास्ते में गिर पड़ने के कारण कल वह कहीं नहीं गया था, न आज जावेगा।

— o —

विराम

विराम अधिकतर हिन्दी संकेत लिपि के लेखकगण स्वयं ही लगाते हैं इनका प्रदर्शन कर समय व्यर्थ नहीं खोया जाता पर यदि समय मिले तो आवश्यकतानुसार—

(१) अर्द्धविराम या कामा को 'उ' की मात्रा से सूचित करते है।

(२) दोहराने के लिए चिन्ह '⊃' का प्रयोग होता है।

(३) बात-चीत में डेश के स्थान पर इस तरह ⌴ का चिन्ह लगाया जाता है।

(४) विराम चिन्ह के लिए एक छोटा सा '×' लाइन पर लगाते है।

दूसरे चिन्ह नहीं लिखे जाते और मतलब से समझे तथा लगाये जाते है।

— o —

अभ्यास – ४६

डैश से मिले हुए शब्दों को एक साथ लिखो—

१. युवावस्था मानव जीवन का बसन्त है। उसे पाकर मनुष्य मतवाला हो-जाता-है। इस अवस्था में न उसे कारागार का डर रहता-है, न वह हितकर कार्यों मे भागता-है। वह हानिकारक कामों से बचता और गुणकारी कामों में लगता-है। वह अपने को धर्मशील तथा बलशाली बनाना-चाहता-है और सन्तापहारी कार्य से दूर रहकर मनोहर कार्यों का करना-चाहता-है।

२. यह तेल वाले, आमवाले, कोचवान, इक्केवान, चरवाहे आदि अधिकतर बुद्धहीन होते हैं। इन लोगों का व्यवहार सन्तोषजनक नहीं होता। तेलवालों के तेल में अक्सर इतनी मिलावट रहती-है कि चिकनाहट तक नहीं रह-जाती। दूधवाले तो कभी-कभी दुगना या तिगना तक पानी मिलाते-हैं, यहां तक की दूध का मीठापन तक निकल-जाता-है। इससे उनका अपमान होता-है और यही उनके दासत्व की निशानी है। ऐसे कामों के-लिये कोई भी अक्लमन्द नहीं कहा जा सकता। अगर वे ऐसा न करते तो शायद अपने जीवन को सुखपूर्वक बिता-सकते तथा धनपूर्ण और कटुता रहित बना सकते।

३. प्रतिदिन मनुष्य को इस बात का यत्न करना-चाहिए कि पराजय तथा अपकीर्ति न हो, चरित्र निर्मल तथा निष्पाप बना रहे, दुर्जन से बचा रहे तथा सज्जन का साथ हो। इससे मनुष्य आजीवन सुखी रह सकता-है। उनको दूसरों के साथ उपकार तथा दूसलूक करना चाहिए।

४. तुम्हारा हर वक्त बाहर रहना हम नापसन्द है। यह तुम्हारी प्रतिदिन की आदत सी हो गई है। बदमाशों तथा नालायकों

का समागमन हो गया है। यह चिरकाल तुम्हारे जीवन यात्रा को सफल होने से रोकेगा। इसके-कारण तुम अभी से दुष्कर्म मे फस गये और तुम्हारी आदत कुचाल की-पड-गई-है। अब न तुम पेट भर खाते हो, न तुम को सहादरो का ख्याल-है। हर रोज बस समजोलियो के साथ फिरा-करते-हो। यदि तुम यथाशक्ति अपने को इन कमबख्तों से दूर रखने का प्रयत्न न-करोगे तो तुम्हारा हाल बेहाल हो जायगा, तुम कमजोर हो जाओगे और विफल रहोगे वा बाकायदा कुलाँगार की तरह फिरा-करोगे।

—— ०० ——

दूसरा भाग

आगे बढ़े हुए छात्रों के लिए

[अब तक जो कुछ आपने पढ़ा है उसका अच्छा अभ्यास करने पर आपकी गति कम से कम ११५-१२५ शब्द प्रति-मिनट की अवश्य हो जायगी। चाहे किसी स्थान पर कैसा ही शब्द क्यों न बोला जाय आप उसको सरलता से लिख लेंगे। हमारा उद्देश्य यह है कि हिन्दी के सारे शब्द केवल दो वर्ण और आँकड़े आदि के प्रयोग से ही लिखे जा सकें इसलिए हिन्दी और उर्दू के करीब १०,००० (दस हजार) शब्दों को मथने के पश्चात् जिनकी रेखा दो वर्णों से बढ़ती थी उनके संक्षिप्त संकेत बना दिये गये हैं। दूसरे भाषा के प्रचलित वाक्यों को भी एक साथ लिखने के नियम तथा एक वृहत सूची आगे दी गई है। इनका अच्छा अभ्यास कर लेने पर आपकी गति फौरन ही १५० शब्द प्रति मिनट पहुँचेगी।]

कुछ विशेष नियम

१. जब आरंभ, बीच या अन्त मे दो 'श' एक साथ आवे तो दोनो एक के बाद दूसरे वृत बना कर लिखे जा सकते हैं। पहला वृत अपने स्थान पर लिखा जाय दूसरा वृत सुविधानुसार किसी तरफ भी लिखा जा सकता है जैसे— नं १ चि० नीचे

१. मुस्ताना मुशोभित शशक कोशिश जासूस
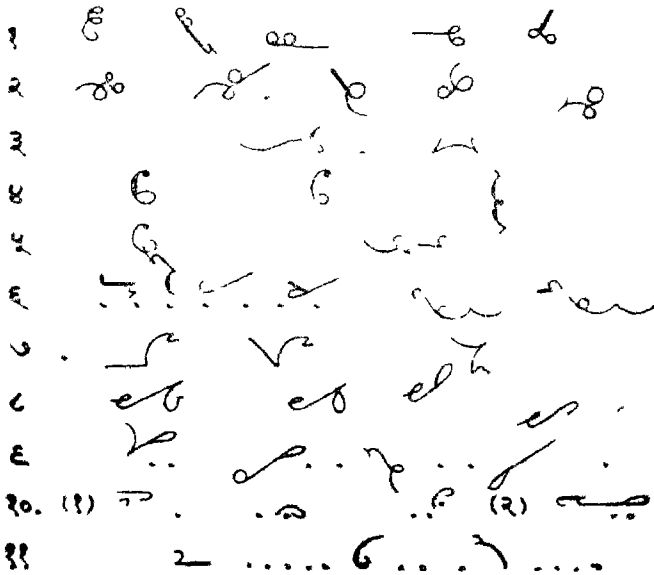
२. 'ह' वृत के बाद 'स' वृत और 'स' वृत्त के बाद 'ह' वृत भी इसी प्रकार लिखे जा सकते है। यहाँ भी पहला वृत यथास्थान होगा। दूसरा और तीसरा वृत किसी तरफ भी लिखा जा सकता है। बीच की मात्रा का विचार

नहीं किया जाता जैसे—नं० २ चि० पृ० १६१

२ महसूस मसेहरी बहस इतिहास ईसामसीह

३. तवर्ग के अक्षर अंत मे म के पश्चात कभी कभी ऊपर भी लिखे जाते हैं। जैसे—नं० ३ चि० पृ० १६१

३. नामजद क्षमता

४. यदि 'स' वृत से छोटा वृत जिसमे वृत के बीच की जगह करीब-करीब निकल भी जावे आरम्भ मे लगा दी जाय तो 'सन' और बीच मे लगा दी जाय तो 'अनुस्वार' की मात्रा पढ़ी जाती है। जैसे—नं० ४ चि० पृ० १६१

४ संदेह संताप वन्ध्या

५. 'स' वृत के बाद 'र' आकड के व्यंजन अगर न मिले तो 'स' वृत को बटा कर मिला सकते हैं। जैसे—नं० ५ चि० पृ० १६१

५. संतोषप्रद निष्कर्ष

६. 'अ' की मात्रा व्यंजन, वृत या आंकड के पहले एक मोटे लम्बाकार ढंग के रूप मे जोड़ी भी जा सकती है। जैसे—नं० ६ चि-पृ० १६१

६. आज्ञा साधारण असाधारण प्रसन्न अप्रसन्न

७. 'ई' की मात्रा अन्त मे इस प्रकार भी जोड़ी जा सकती है। जैसे—नं० ७ चि० पृ० १६१

७. काली पीली नीली

८. जब 'व' मे 'ह' को लगाना हो तो 'स' वृत की तरह लगाते समय पहिले एक डैश भी लगा दो। जैसे—नं० ८ चि० पृ० १६१

८. हवालात हवलदार हवादार हवन

९. यदि 'स' का आँकडा सरल रेखाओ के आदि या अन्त मे क्रमश 'र' या 'न' के स्थान पर आवे तो ये

'ख' आदि को सूचित न कर 'फ' को सूचित करेगा। जैसे—
नं० ६ चि० पृ० १६१

तरफ शरीफ फुरसत फुरेरी

[नोट — तरफ का शब्द-चिन्ह बन चुका है]

१०. अंग्रेजी शब्दों मे अर्द्ध को काम मे लाने से अंत मे 'ट' के अलावा 'ड' भी लगता है और ये अंत के 'न' आकर्ष के बाद पढ़ा जाता है। जैसे—नं० १०— (१) चि० पृ० १६१

काउन्ट मेन्ट लैन्ड

इसी तरह अंग्रेजी शब्दो के अन्त मे दुगुने संकेतो के बनाने मे 'टर' 'डर' के अलावा 'चर' भी लग जाता है। जैसे—नं० १०—(२) चि० पृ० १६१

एग्रिकलचारिस्ट

११. 'क, ल और र (नी)' मे 'व' इस प्रकार भी लगता है। जैसे—
नं० ११ चि० पृ० १६१

वक वल वर (नी)

वर्णाक्षरों से काटने पर नये शब्द

भाषा मे संस्थाओं, पदाधिकारियो, सभा या समितियो के कुछ ऐसे नाम आते है जिनका प्रयोग एक तो बहुतायत से होता है और दूसरे इसके साथ के शब्दो को पढते ही पता लग जाता है कि दूसरा शब्द क्या होना चाहिए। ऐसे शब्दों को पूरा न लिख कर बल्कि जिनके साथ यह आते है उनको इन शब्दो के प्रथम वर्णाक्षर से काट देते है और यदि काटना सुविधाजनक नहीं होता तो साथ वाले शब्द के पहले या बाद मे जितने पास हो सकता है लिख देते हैं। इन वर्णाक्षरों को पहले लिखे या काटे जाने पर पहिले और बाद मे लिखे या काटे जाने पर बाद मे पढ़ा जाता है। जैसे—

२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
(२)
१
२
३
४
५
६.

१. 'म' से मंडल—नरेन्द्रमंडल, मंत्रिमंडल, युवक-मंडल
,, ,, मजिस्ट्रेट--डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट
२. 'र' (ऊ) से प्रारम्भ मे राज्य--राजनीतिक, राज्य-शासन
३. 'सप्र' से सुपरिन्टेन्डेन्ट--सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस
४. 'ब' से बैंक, बिल--इलाहाबाद बैंक, एग्रीकल्चरिस्ट रिलीफ बिल
५. 'प्र' से परिषद् --साहित्य परिषद
आरम्भ मे प्रधान--प्रधानाध्यापक, प्रधानमन्त्री
६. 'ग' से गवर्नमेन्ट--प्रान्तीय गवर्नमेन्ट
७. 'विभ' से विभाग—पुलिस विभाग
८. 'प' से पार्टी —मजदूर पार्टी
९. 'द' से दल --मजदूर दल
१०. 'रह' से रहित —प्रभात रहित
११. 'सम' से समिति--साहित्य समिति, परीक्षा समिति
१२. 'ड' से डिपार्टमेन्ट--(पुलिस डिपार्टमेंट)

(८)

इसी तरह विशेषण या भाववाचक संज्ञा बनाने मे भी इसी नियम का पालन किया जाता है। जैसे—चित्र बाएँ तरफ
१. 'त' से आत्मक —सत्तात्मक, संशयात्मक
२. 'प' से उत्पादक—प्रभावोत्पादक
३. 'क' से इक —दैनिक, मासिक
४. 'गन' से गण —बालकगण
५. 'द' से दायक —लाभदायक
६. 'श' से श्वरीय—अखिलेश्वरी, मातेश्वरी

———

वाक्यांश

वाक्यांश मे हमारा वाक्य के उन अंशो मे प्रयोजन है जो किसी पूरे वाक्य के बोलने मे अधिकतर प्रयोग किये जाते है। जैसे कुछ शब्दो के लिये जो वाक्य मे बार बार दिखाई पडते है विशेष संकेत निरधारित किए गये हैं और उन्हे शब्द चिन्ह कहते है उसी प्रकार वाक्याशो के निरधारित चिन्हो को वाक्याश-चिन्ह कहते है। इनको समझ कर बनाने का अभ्यास कर लेने से लेखको की गति मे पर्याप्त वृद्धि प्रारम्भ हो जाती है। गति कम से कम १५ शब्द प्रति मिनट बढ जायगी। नियम और उदाहरण आगे दिये जाते है। यह नियमानुसार दो एक अक्षरो का लोप भी कर के बनाये जाते हैं।

कुछ जुट शब्द

(१)

हिन्दी मे कुछ ऐसे जुट-शब्द है जो प्रयोग मे तो एक साथ आते हैं पर अर्थ मे बिलकुल भिन्नता रहती है जैसे—आदि-अन्त, क्रय-विक्रय, आदि। इनको विपरीतार्थ शब्द कहते हैं।

इनके लिखने का ढङ्ग यह है कि पहला शब्द तो पूरा लिखा जाता है पर दूसरा शब्द पूरा न लिखकर उसके पहले व्यंजन से पहिले लिखे हुए शब्द को काट देते हैं जैसे अगर आकाश और पाताल लिखना है तो आकाश को पूरा लिखकर उसे 'प' से काट देने पर वह आकाश-पाताल पढ़ लिया जायगा। देखिये अगले चित्र का पहला शब्द।

१

२

३

४

५

[नं० १ चि० पृ० १६७]

१.	आकाश पाताल	२.	जीवन-मरण
३.	शत्रु-मित्र	४.	स्त्री-पुरुष
५	दिन-रात	६.	लाभ-हानि
७	शुभ-अशुभ	८	धर्म-अधर्म
६.	न्याय-अन्याय	१०.	चर-अचर
११	उचित-अनुचित	१२.	सोच-विचार
१३	खेल-कूद	१४	झट-पट
१५.	नट-खट	१६	जय-पराजय
१७	खट-पट	१८	क्रय-विक्रय
१६	मेल-मिलाप	२०.	आँधी-पानी
२१	स्वर्ग-नर्क	२२	सुख-दुख

कुछ जुट शब्द ऐसे होते है कि पहले शब्द मे जोर देने के लिये प्रयोग होते है और उनके अर्थ मे भिन्नता नही होती जैसे--धीरे-धीरे, जल्दी-जल्दी आदि। इनको अवधारित [अवधारण--Emphasis = जोर देना] शब्द कहते है।

यहाँ भी पहले शब्द को लिख कर उसके बाद यह '੦' चिन्ह लगा देने से पहला शब्द दो बार पढा जायगा। जैसे- नं० २ चि० पृ० १६७

२.	धीरे-धीरे	थोडा-थोड़ा
	जल्दी-जल्दी	बड़े-बड़े

कभी-कभी बीच मे कोई विभक्ति या 'ही' आती है। विभक्ति के बाद ही पहला शब्द फिर आता है। ऐसे स्थान

पर यह सूचित करने के लिए कि विभक्ति के बाद शब्द दोहराया गया है अगले शब्द के पहले व्यंजन मे एक छोटा सा डैस लगाकर शब्द काटा जाता है। जैसे--नं० ३ चि० पृ० १६७

३.   सारा का सारा   दिन पर दिन

पर यह सूचित करने के लिये कि अगला शब्द 'ही' के बाद आया है, पहले शब्द के अन्त मे 'स' वृत लगाकर अगले शब्द का अन्तिम व्यंजन उसमे मिला देते हैं। जैसे--नं० ४ चि० पृ० १६७

४. हरियाली ही हरियाली   पानी ही पानी

यहाँ पानी लिखकर उसमे उसके अन्त मे 'स' वृत लिखा गया है और फिर अगले शब्द का अन्तिम अक्षर 'न' मिला दिया गया है।

यह वृत 'ही' के अलावा 'हा सा, सी' और कभी-कभी 'और' को भी सूचित करता है। जैसे--नं० ५ चि० पृ० १६७

५.   ज्यादा से ज्यादा   कम से कम

वाक्यांश—१

होती है

लगती है

हो जाती है

होती रहती है

आती ही रहती है

यह नहीं है

यह आवश्यक है

यह देखा जाता

यह सुना जाता है

यह तो निश्चय ही है

आशा की जाती है

आशा नहीं की जा सकती

अधिक से अधिक

अधिकाधिक

चाहनेवाले

चुपके से

डील-डौल

साफ-साफ

वाक्यांश—२

तितर-बितर

प्रात काल

धूमधाम से

अन्य प्रकार

आज प्रात काल

फल-फूल

बाप-दादा

बाल-बच्चे

हाल-चाल

उत्तरोत्तर

जाँच-पडताल

सुख-शांति

साथ ही साथ

हाथो हाथ

एक दूसरे

एक से अधिक

लार्ड तथा लेडी

भाई तथा बहिनो

वाक्यांश--३

बहुत से लोग

बहुत अच्छा

बहुत ज्यादा

सब से पहले

सब से बड़ा

सब से बुरा

सब से अच्छा

एकाएक

समय समय पर

बात बात में

भाषण देते हुए

उत्तर देते हुए

देते हुए कहा

भाषण देते हुए कहा

उत्तर देते हुए कहा

पहले पहिल

पहले ही से

पहले से पहल

वाक्यांश—४

सर्व साधारण

सर्व प्रथम

जहाँ तहाँ

जब तक

तब तक

अब तक

अब तक तो

इसके बगैर

जिसके बगैर

उसके बगैर

अभी तक

ज्यों का त्यों

कम से कम

ज्यादा से ज्यादा

रातों-रात

दिनों-दिन

दिन ब दिन

कभी कभी

अभ्यास—५०

आशा-की-जाती-है कि लार्ड-और-लेडी को अधिकाधिक / चाहनेवाले आज प्रातः-काल अपने बाल-बच्चे, भाई-बहिन / और बाप-दादों को साथ-ही-साथ लिये बडी धूमधाम-से / वायसराय भवन म आये होंगे। ऐसे समय-मे / प्राय. यह देखा-जाता-है कि जनता भी अधिक-से-अधिक / तादाद मे जमा-हो-जाती-है। इसबार-तो / यह-सुना-जाता-है कि गेट पर एक-से-अधिक / पहरेदार एक दूसरे को धक्के देने वाले लोगों को चुरके से / तितर बितर कर-देते-है। परन्तु जो डौल-डौल-मे / साफ-साफ भले आदमी मालूम देते-हैं उन्हे रोकने की / आशा-नहीं-की-जा सकती।

इस-समय बहुत-से-लोगो-ने / लार्ड-और-लेडी लिलिथगो का फलफूल तथा अन्य-प्रकार की / चीजो स स्वागत किया। इनका उत्तर-देते-हुए लार्ड महोदय / ने कहा कि आजकल यह-आवश्यक है कि / प्रात:काल होते-ही हम देश विदेश क हाल-चाल पढे। ऐसी / घटनायें आये दिन होती-हैं या होती-ही-रहती हैं और उनकी खबर भी हाथ हाथ आता-ही-रहता-है। / विशेष जाँच-पड़ताल करने पर पता लगता-है कि ससार / की सुख-शान्ति उत्तरोत्तर नाश-की-ओर बढती जाती-है। / ऐसी दशा मे यह-तो-निश्चय-ही-है कि भावी / वैदेशिक हलचल मे भारतवर्ष बिल्कुल चुपचाप नही बैठे सकता। २०६

———

वाक्यांश — ५

जिस समय

इस समय

उस समय में

वैसे ही

जैसे तैसे

इसके बाद

इसी के बाद

प्रति दिन

सदा के लिए

हमेशा के लिए

उनके लिए

इनके लिए

इस सम्बन्ध में

रहते है

होगा

हो गई

हो जायगी

आमने सामने

इधर उधर

अभ्यास—५१

(आ) वैसे-तो बहुत से-लोग राष्ट्रपति की हैसियत से भारत / के बडे-बडे शहरों में समय-समय-पर भ्रमण करते-/ रहे-हैं परन्तु पण्डित जी ने ही सर्व-प्रथम रातों-रात / और दिनों-दिन गावों में घूमकर सब-से-बडा और / सब-से-अच्छा तूफानी दौरा किया-है। सर्वसाधारण जनता / मे पहले-पहिल कांग्रेस का बिगुल फूकने का श्रेय इन्हें / दिया-जाय तो अनुचित न होगा। गरीब किसानों ने / पहिले सिर्फ जवाहर-लाल जी का नाम सुना-था। / परन्तु जब तक वे उनके बीच मे नहीं-आये-थे / तब-तक बेचारे न उन्हें समझते थे और न / कांग्रेस को। पण्डित जी की बात बात मे जादू सा / असर-है। अत इनकी बात सुनकर पहिले तो वे लोग एकाएक बहुत ज्यादा अचम्भे मे पड-गये-थे। बाद मे / उन्हे पहिले-पहिल मालूम हुआ-कि अब-तक हम अंधेरे मे / थे। सचमुच भारत हमारा और हम भारत के-हैं। कम-से-कम वे समझने तो लगे कि स्वतत्रता हमारा जन्म-सिद्ध-अधिकार-है और इसके-बगैर हम पशुओं से / भी खराब हैं। १७३

(ब) टंडन जी ने भाषण देते-हुए कहा-कि / जहाँ-तहाँ से दिन-ब-दिन आने वाली खबरों से / मालूम होता है कि आगामी युद्ध ज्यादा-से-ज्यादा एक दो / वर्ष दूर है। इसलिये भारत को सब-से-पहले / हिन्दू मुस्लिम एकता की बडी आवश्कता-है। सब-से-बुरा / तो यह है कि हिन्दु-मुसलमान यह जानते-हुए-भी-अभी तक ज्यों का-त्यों ३६ का नाता बनाये हैं। / दूसरी बात है खादी और देशी माल को व्यवहार मे / लाने की। जिसके-बगैर देशी धन्धे नहीं पनप-सकते, उसके- / बगैर हम आजादी भी नहीं हासिल-कर-सकते। ६६

वाक्यांश--६

इस प्रकार

इसी प्रकार

उसी प्रकार

उस प्रकार

किस प्रकार

किसी प्रकार

इन सब के

इसी के यहा से

उसी के यहा से

कर के

करने से

करेगा

कर चुका है

इसी समय

उस समय

कर दिया

कर दिया था

करता था।

कर देता था।

वाक्यांश—७

चला करता है

चला जाना है

आम तौर पर

एक बार

कौन सा

चिंता से रहित

जाने पाता था

क्या करता है

इतना ही नहीं

इतना ही नहीं बल्कि और

हर तरह से

सब तरह से

बहुत तरह से

जन समूह

जन साधारण

जन संख्या

जन समाज

जन्म-भूमि

वाक्यांश—८

ऐसा ही होता है

ऐसा ही होना चाहिए

इसी तरह होना चाहिए

रहना चाहता है

जान लेना चाहिए कि

हम लोगों को चाहिए कि

बना देना चाहता है

छोटे-मोटे

भरण पोषण

बात-चीत

एक से ही

घटा-बढ़ा

कहना-सुनना

जवाब तलब

हिन्दू-मुसलमान

हिन्दी-उर्दू

हिन्दी-उर्दू-हिन्दुस्तानी

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

अभ्यास—५२

कुछ माह पहिले जैसी रेल की दुर्घटना विहटा में हुई / प्राय. वैसा-ही या उससे भी अधिक भीषण काड आज / सुबह बमरौली में हुआ। कहा-जाता-है कि जिस-समय / लगभग ५॥ बजे सुबह बमरौली स्टेशन पर एक मालगाडी रूप, लाइन पर ली गई उस समय तूफान-मेल के लिये/सिनगल न-गिराया-गया-था। इस-समय घना कुहरा होने/के कारण मेल के ड्राइवर को कुछ दिखाई न-पड़ा।/ जैसे-ही मालगाडी रुकने वाली थी वैसे-ही तूफान-मेल/का आमना-सामना होने से दोनो गाडियाँ बुरी-तरह से / लड़ गई। फलत उसी समय कई आदमी सदा के लिये/सो गये और बहुतेरे इस प्रकार से घायल होगये/कि उनका बिलकुल अच्छा होना हमेशा-के-लिये असम्भव सा/हो-गया-है। इस-समय बमरौली से सर्वप्रथम डिवि-जनल-सुपरिन्टेन्डेन्ट/को सूचना कर-दी-गई-है और वे सब/से-पहिले घटना स्थल-पर पहुँचे। इसके बाद लगभग ७ बजे/एक रिलीफट्रेन वहा पहुँच गई। तत्पश्चात् मोटरवालो से खबर / मिलने-पर शहर में यह समाचार उस-प्रकार-से फैला/जिस प्रकार-से जगल मे आग फैलती है। फिर क्या / था, इधर-उधर से स्वयसेवकों के दल जिस किसी प्रकार/बन-सका उसी प्रकार पीडितो की सहायता के लिये/पहुँचे। इन सबने सबसे पहिले मुर्दे और घायलो का निकालकर / आवश्यक प्रबन्ध किया। जो सख्त घायल थे उनके लिए लारियाँ / बुला कर उन्हें अस्पताल भेजा। इसी-प्रकार जो बच-गये थे / उनके- लिए भी यथोचित प्रबन्ध कर दिया-गया। इसी समय / हजारों आदमी इस दर्दनाक दृश्य को देखने और यह/जानने-के लिये पहुँचे कि दुर्घटना किस प्रकार और किस / कारण से हुई। इस सम्बन्ध मे सरकारी तौर से जाँच / शुरु हो-गई। जिन को जान किसी-प्रकार-से / भी-बच-सकी थी उनके चेहरों की ओर गौर करके / देखने से मालूम-होता-था कि वे सब अनन्य भक्ति / से ईश्वर को धन्य-धन्य मना-रहे-थे। ३०८

वाक्यांश—६

मामूली तौर पर

जितने समय के लिए

किये जाने योग्य

होने या न होने से

जब चाहो तब

संदेह नहीं है

हो गये होते

कह सकती है

ऊपर कही गई

सारांश यह है

रहने वाले हैं

कहा जाता है

कहीं ऐसा न हो

थोड़े दिनों के बाद

कोई नहीं हैं

कोई आवश्यकता नहीं है

एक तो यह है ही

हो या नहो

वाक्यांश — १०

जो कुछ किया है

कहा जा रहा था

जहाँ तक हो सके

मुझको यह कहना है

पहले ही कहा जा चुका है

जैसा पहले कहा जा चुका है

अब हमें मालूम हुआ है

तुमने समझ लिया है

तुमने देख लिया है

क्या तुम बता सकते हो

क्या तुम कह सकते हो

कुछ नहीं हो सकता

हो ही कैसे सकता है

बतला देना चाहता हूँ

कह देना चाहता हूँ

हम नहीं कह सकते

सबसे बड़ी बात यह है कि

नहीं हो रहा है

वाक्यांश—११
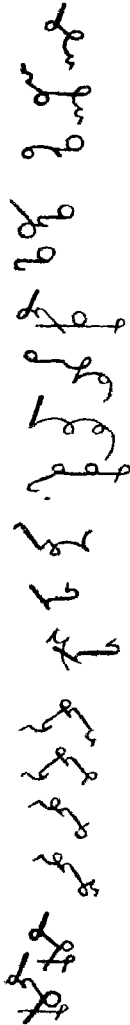
जैसा पहले कह गया था

मैं तो पहले ही कहता था

समर्थन करते हुए कहा

उपस्थित करते हुए कहा

करते हुए कहा कि

जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं

आवश्यकता नहीं मालूम होती

जरूरत नहीं मालूम होनी

यह हो ही कैसे सकता है

अब कुछ समय तक

बड़े गौरव की बात है

हमारे लिए बड़े गौरव की बात है

हमारा यह प्रयोजन था

हमारा यह प्रयोजन है

हमारा यह प्रयोजन नहीं है

हमारा यह प्रयोजन नहीं था

जैसे पहले कहा जा चुका है

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है

वाक्यांश--१२

सर्व सम्मति से पास हुआ

सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ

मै इस प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूँ

मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ

मै आपका हृदय से स्वागत करता हूँ

मुझे यह निश्चय हो गया है

क्योंकि अगर ऐसा हुआ तो

हमारी समझ मे नही आता

कुछ समय के ही लिए सही

इस बात का ध्यान रखना चाहिये

यदि यह मान भी लिया जाय

परन्तु साथ ही यह भी कहा जा सकता है

मुझे यह सुनकर प्रसन्नता हुई

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई

मुझे यह जानकर दु.ख हुआ

मुझे यह सुनकर दु ख हुआ

सभापति महोदय तथा भ्रातृगण

जिन्दगी और मौत का सवाल है

अभ्यास—५३

काल-चक्र सदा बेरोक-टोक अपनी गति से चला-करता-है ।/ संसार की कोई भी शक्ति इसके सम्मुख जरा भी नहीं / टिक-सकती । कौन आता-है ? कौन जाता-है ? कौन सा / आदमी क्या-काम-करता-है ? इन सबसे मानों-मतलब-होते-हुये / भी कुछ मतलब नहीं-है । मालूम-होता-है कि / इस चिन्ताकुल संसार मे वह बिल्कुल चिन्ता-रहित-है । उसे / किसी की परवाह नहीं परन्तु सबको उसकी परवाह-है । इतना- / ही-नहीं सारी सृष्टि, सम्पूर्ण जन-समाज जन-संख्या का / जरा भी ख्याल न-रखकर हर तरह-से अथवा सब-/ तरह से मूक बकरी की तरह उसके इशारे-पर-नाचता-है /। क्या पता कि वह किस-समय क्या-करता है, कौन जानता-था कि हमारे पूज्य राष्ट्रपति की मातेश्वरी एकाएक / हमसे सदा-के-लिये बिलग-हो-जायँगी । श्रीमती-स्वरूप-रानी / जन्मभूमि की सच्ची पुत्री, आदर्श भारतरमणी जनसाधारण की माता / उन कतिपय महिलाओं मे से थीं जिनने देश के लिये / अपना तन-मन-धन सब कुछ हँसते-हँसत न्योछावर कर-/ दिया-है । इतना-ही-नहीं बल्कि उनने अपने इकलौते पुत्र / को भी भारत माता को भेंट-कर -दिया-है । / कैसा अपूर्व त्याग है ? हमारी माताओ-और-बहिनो को इनके जीवन / से शिक्षा ग्रहण-करना-चाहिये । उन्हे अच्छी तरह जान-लेना-चाहिये / कि सिर्फ अपने कुटुम्ब का भरण-पोषण और देख-/ भाल ही उनके जीवन का लक्ष्य नहीं-है । बल्कि देश-/ सेवा उनका भी सर्वोत्कृष्ट कर्तव्य है । यह सर्वथा उचित-ही/ था कि छोटों मोटों की तो बात ही-क्या-है । / बड़े-बड़े हिन्दू मुसलमान लोगों ने अपने भेद-भाव भुलाकर / बिल-कुल एक मन से शोक और श्रद्धा-प्रगट की । सचमुच / ऐसे मौके पर तो-ऐसा-होता ही है अथवा ऐसा / होना-ही-चाहिये । अब वह

समय आ-गया है जब / हम-लोगो को चाहिये कि आम-तौर-पर हिन्दू-मुस्लिम / आपस-में एक हो जाय। व्यर्थ में लडने-झगडने, कहने-/ सुनने और धर्म के मामल। पर गरमा-गरम बात-चीत करने / तथा एक-दूसरे से जवाब तलब करवाने मे शक्तिनाश करना / सर्वथा हानिकारक-है । हिन्दू-महासभा, मुस्लिम-लीग, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन / ऐसी भारत-व्यापी मस्था।ओ को चाहिये कि वे हिन्दू-मुसलमान, / हिन्दी-उर्दू और हिन्दी-उर्दू-हिन्दुस्तानी के झमेलों मे न पड स्वतन्त्रता के मैदान मे एक होकर उतर आवें। ३४६

अभ्यास—५४

शिक्षा की प्रगति और देश की बेकारी का मामूली-तौर-/ पर देखकर कहा-जाता-है कि पढे-लिखे युवकों की / दशा अच्छी हो-ही-कैसे-सकती-है । एक तो शिक्षित / युवकों की भरमार और दूसरे व्यापार, उद्योग-धन्धों और नौकरी / की गिरी हालत बेकारी की भारी जटिल समस्या बनाये / है । एक-तो-यह है ही दूसरी खेती की बरबादी / याने ६० प्रतिशत किसान — जो गाँवों म रहते ह उनकी / दशा देखकर हम कह सकते हैं कि यदि खेती तथा देशी/ व्यापार आदि मे किए-जाने-योग्य सुधार शीघ्र न-किये- / गये तो ऐसा न हो कि कुछ-दिनों-के-बाद / देश मे आतंकवाद की लहर उठ-पडे । इसमे-सन्देह-नहीं / है- कि काग्रेसी-मन्त्रिमडलो ने जो-कुछ किया है वह / जहाँ-तहाँ-हो सका-है किसानो की भलाई के-लिये/ किया-है और इसमे सन्देह करने-की कोई आवश्यकता-नहीं - है/ कि जितने-समय-के-लिये-ये नियुक्त किये गये-हैं / यदि उतने-समय-तक रह-गये तो देश के बडे-/ बडे सवाल हल-करने का भरसक प्रयत्न होगा।

आजकल सिर्फ / शिक्षा के होने-य-न होने-से खास मतलब नहीं / किन्तु सबसे-बडी-बात-यह-है-कि पढे लिखे लोग/बेकार न बैठने

पावें। क्या हम-नहीं-कह-सकते कि / बेकारी का सम्बन्ध देशी व्यापारादि से है जिसकी जिम्मेदारी सरकार- / पर बहुत-अधिक-है? क्या हम-नहीं-कह-सकते कि / विदेशी-सरकार से इस विषय में कुछ-नहीं-हो-सकता। / यथार्थ में मैं कह देना-चाहता हूँ कि हमारे आद्यौगिक / और व्यापारिक पतन का कारण हमारी दासता है। अत सब- / से बड़ी-बात-यह-है कि देश स्वतन्त्र हो। यदि तुमने / जापान की उन्नति को देख-लिया-है, जर्मनी के उत्थान / को समझ-लिया-है तो क्या तुम-कह-सकते-हो / कि दासता की बेडियों से मुक्त-भारत-भी देश की / बेकारी, अशिक्षा आदि छोटे-छोटे सवालों को हल न-कर- / सकेगा।

अत जैसे पहिले कहा-जा-चुका है, हमारी / सब-से-बड़ी और जटिल समस्या स्वतन्त्रता है। साराश-यह-है / कि देश स्वतंत्र होने पर हमारे सारे राष्ट्रीय प्रश्न आप- / से-आप हल हो-जायेंगे। ३३५
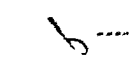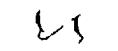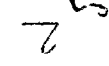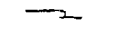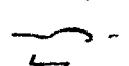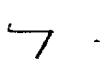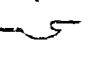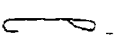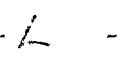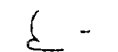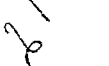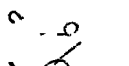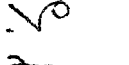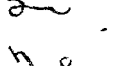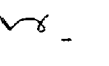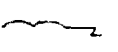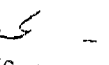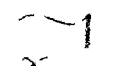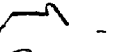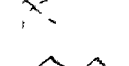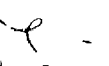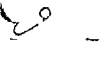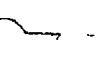
अभ्यास—५५

प्रोफेसर मोहनलाल जी ने कालेज यूनियन की सभा में / स्त्री-स्वतन्त्रता का प्रस्ताव-उपस्थिति करते-हुए-कहा—सभापति-महोदय-तथा-भ्रातृगण / और-बहिनो — 'जैसा पहिले कहा जा-चुका-है 'स्त्री-स्वतन्त्रता' बड़ा / महत्वपूर्ण विषय-है। स्त्री-और-पुरुष समाज की इकाई के / दो आवश्यक अंग-हैं। कोई भी समाज या देश तभी / सुदृढ और सुसगठित हो-सकता-है जब ये दोनों अंग / एक समान उन्नत-हो। फिर हमारी समझ में-नहीं-आता कि- / हम अपने एक हिस्से को कमजोर रखकर अपनी सम्पूर्ण / उन्नति कैसे-कर-सकते-हैं। इतने वर्ष के अनुभव और / अध्ययन के बाद तो मुझे-यह-निश्चय-हो-चुका-है / कि अब तक हमारी माताएँ-और-बहिने पुरुषों की तरह / सुशिक्षिता और स्वस्थ न होगी तब-तक समाज तथा देश की / यथार्थ-

उन्नति न-हो-सकेगी। हमें-यह-सुनकर-दुख / होता-है कि कुछ पुराने विचार के लोगों को केवल / लड़कों कि शिक्षा की आवश्यकता मालूम-होती-है किन्तु लडकियो / की शिक्षा कतई जरूरी नहीं-मालूम होती। परन्तु-जैसे- / कि हम ऊपर-कह-चुके हैं स्त्री पुरुष समाज के / दो आवश्यक अंग हैं, एक ही गाडी मे दो पहिये / हैं। अत. हमें इस-बात-का-ध्यान रखना-चाहिये कि / समाजरूपी गाडी को सुचारुप से चलाने के-लिये दोनों पहियों / का एक सा ठीक रखना परम आवश्यक है। यह हो- / ही कैसे सकता है-कि एक चाक टूटा हो फिर / भी गाडी ठीक चले यदि-यह मान भी लिया जाय / कि स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा कमजोर रहती हैं परन्तु/साथ-ही साथ-यह-भी-कहा जा-सकता-है-कि यदि उन्हें यथोचित शिक्षा मिले तो वे पुरुषों की कठनाइयो में सच्ची-सहायता कर-सकती-हैं एव बडी आर्थिक गुत्थिया हल- / कर सकती- हैं- ।यह पुरुष का स्वार्थपरता है कि वह /उ ह उन्नत-नहीं करने देता। क्योकि अगर ऐसा-हुआ तो / वह उन्हे अपनी कटपुतली बनाकर-न-रख-सकेगा। अब मुझे-यह / जानकर-प्रसन्नता-हुई-है-कि शिक्षित वग इस-बात/ को समझ-गया- है । हमारे-लिये-यह गौरव-की-बात-है-कि / हमारे शहर मे ऐसी कई कन्या पाठशालायें खुल / रही- जो कुछ समय-तक-ही नहीं वरन् बहुत /-समय के-लिये समाज की सेवा करेंगी। मैं-तो पहले ही कहता / था कि स्त्री शिक्षा देश के-लिये बडे महत्वपूर्ण और / गौरव-की-बात-है क्योंकि इससे ही स्त्री-स्वतत्रता / के / आन्दोलन को प्रगति मिलेगी।

इसके-बाद-एक महाशय ने खडे / होकर-कहा कि मैं आपके-विचारो यानी आपका हृदय से / स्वागत-करता-हूँ और साथ ही आपके-प्रस्ताव-का-समर्थन- / -करता-हूँ । दूसरे सज्जन ने कहा मैं आपके-प्रस्ताव-का- /-अनुमोदन - करता-हूँ। फिर वोटिंग होने के बाद सभापति महाशय / ने कहा कि यह-प्रस्ताव-सर्व -सम्मति से-स्वीकृत-हुआ / अथवा सर्व सम्मति-से-पास हुआ। ४३६

साधारण–संक्षिप्त–संकेत

साधारण-संक्षिप्त-संकेत

(१)

१.	अत्याचार	अनुभव	अमन्य	असम्भव
२.	सम्भव	असंख्य	अध्याय	अनुपस्थित
३.	असबाब	आरम्भ	बतौर-नमूना	उपस्थित
४.	उद्योग धन्धा	कपडा	कदाचित	कदापि
५.	क्योंकर	कहावत	क्रमश	कम्पनी
६.	काफी	कामयाब	खजानची	खजाना
७.	गम्भीर	ग्रन्थ	ग्रन्थकार	गायब
८.	गिरफ्तार	गिरफ्तारी	चपटा	चमच
९.	तकलीफ	चाल-चलन	प्रतिशत	प्रत्यक्ष
१०.	प्रतिद्वंदिता	पवित्रात्मा	प्रियवर	पालनहार
११.	पवित्रताई	पतिव्रता	बेवकूफ	बैकुण्ठ
१२.	भयानक	भयङ्कर	भलमनसी	भारतवर्ष
१३.	मधु-मक्खी	मनमाना	संयोग	मण्डप
१४.	रंग-बिरंग	राम-राम	राजसिंहासन	लगभग
१५.	लाभदायक	लिफाफा	वंशावली	व्यायाम
१६.	वादविवाद	वादानुवाद	विद्याभ्यास	शायद
१७.	शिष्टाचार	सचमुच	सन्मुख	समीप

अभ्यास—५६

ससार की करीब-करीब सभी लाभदायक वस्तुएँ अब भारतवर्ष / मे मिलती -हैं। उद्योग-धन्धे मे भी अब यह आगे बढ / रहा है। यहाँ के कुशल ग्रंथकार हर-एक विषय-पर / ग्रन्थों को लिखकर प्रकाशित करा-रहे-हैं। स्त्रियों का आदर्श / भी बहुत ऊँचा है। वे बडी भलीमानस और पतिव्रता- / होती-हैं।

कुछ ऐसे बेवकूफ भी-हैं जो भयानक-से / भयानक काम-करने-मे भी शायद न हिचकें। वे किसी / के खजाना को गायब कर-देना, खजानची को तकलीफ देना / किसी पवित्रात्मा की अनुपस्थित या उपस्थित ही मे उसका सारा / माल असबाब, कपडा-लत्ता आदि को उडा देना, मनमाना काम- / करना, मधु-मक्खियों के पीछे पडना, अत्याचार करना ही अपना / धर्म समझते हैं।

ऐसे आदमी आरम्भ मे चाहे सम्भव असम्भव / कार्य करके कामयाब हो लें पर अन्त मे गिरफ्तारी से / कदापि नही बच-सकते, गिरफ्तार होते ही हैं। सुख-दुख / का तो यह अनुभव करते ही हैं पर ऐसे असभ्य / होते-हैं कि किसी भी समाज में इनका-रखना ठीक / नही।

यहाँ विद्याभ्यास के लिए विद्यालय हैं तथा व्यायाम के / लिए व्यायाम-शालाएँ हैं जिनमे शिष्टाचार तथा सदाचार की शिक्षा / दी-जाती-है।

पालनहार ने हमारे देश को सचमुच किसी / वैकुण्ठ से कम नहीं बनाया। इसके समुख बडे २ राजसिंहासन / भी कदाचित ही ठहर सके।

प्रतिद्वन्दिता के समीप कभी न / जाना चाहिये। इनका परोक्ष-रूप से चाहे-जो फल हो पर प्रत्यक्ष रूप से तो मुझे एक प्रतिशत लोगों से / भी मिलने का संयोग नहीं हुआ जिन्होंने इसकी तारीफ की / हो।

प्रियवर एक-एक रग-बिरंगा मंडप बनाओ जिसमें पगपग / पर हर-एक कोने में काफी मोटे अक्षरों में राम-राम / लिखवा दो।

लिखो – चपटा, चमच, चाल-चलन, अध्याय, असख्य कहावत, / क्रमश: गम्भीर, लिफाफा, वशावली। २६४

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

१८

(२)

१. चुपचाप चुपके जन्म अनर्थ
२. जीव-जन्तु जन्म-स्थान जायदाद जीविका
३. झंडा झुंड डगमगाना तबियत
४. तत्पर तत्काल तदन्तर तहकीकात
५. तिरस्कार थरथर दंडवत दफ्तर
६. दुर्दशा दुर्घटना दुष्टात्मा नमस्कार
७. नमूना नाचरंग नियमावली निमंत्रण
८. निस्संदेह नौजवान पंचायत प्रथम
९. प्रणाम सहज स्वयंसेवक सर्वव्यापी
१०. समाचारपत्र सम्मिलित स्वयंवर संस्कार
११. संक्षेप सायंकाल हरगिज हिम्मतवर
१२. होनहार शक्तिशाली पूर्ववत ट्रांसफर
१३. छापाखाना बन्दरगाह दृष्टिकोण पत्रव्यवहार
१४. वास्तविक स्वाभाविक अस्वाभाविक वन्देमातरम्
१५. दृष्टान्त स्वभावत आश्चर्यजनक ईसामसीह
१६. प्रचलित निरवाचक निरवाचन संवाददाता
१७. मनोरञ्जक नोस्तनाबूद विचाराधीन इश्तिहार
१८. स्वरचित आमंत्रण वायुमण्डल जन्म मृत्यु

अभ्यास—५७

एक होनहार नवजवान के लिए अपने देश की सेवा करना / प्रथम कर्तव्य है । सच-तो-यह-है कि यदि उसने / अपने जन्म-स्थान का झंडा ऊँचा-न-किया तो उसका / जन्म ही व्यर्थ है । ऐसा-कार्य-करने-में चाहे सारी / जायदाद या जीविका जाती-रहे, पर दृढता को न छोड़ना / चाहिये । ऐसा कार्य वे ही कर सकते हैं जो कि / शक्तिशाली और हिम्मतवर हैं ।

किसी दुष्टात्मा को केवल प्रणाम या उपडवन करने या उसके सामने थर-थर कांपने से काम / नहीं चलता । ऐसे करने से तो अपनी दुर्दशा होगी वह, तो अपनी दुष्टता से हरगिज न बाज आयेगा । उनके साथ दृढता / और कठोरता का व्यवहार होना चाहिये ।

छापेखाने में समाचार-पत्र / तथा इश्तहार आदि सभी चीज़ छपता है । समाचार-पत्रों / में खबर भेजनेवाले को सम्वाददाता कहते हैं । ये अपने दफ्तर/को देश का सारा हाल तत्तोर में भेजते हैं ।/

किसी भी दृष्टिकोण से देखिये भारत के-लिये एक / ऐसे स्वयंसेवक दल की बड़ी आवश्यकता-है जो कि चुपचाप / परन्तु दृढता के साथ प्रातःकाल से लेकर सायंकाल तक उसकी / सेवा में तत्पर रहे, चुपके न बैठे । यह गाँवों में / पंचायत कायम-करा-सकते-हैं, उनके फसलों को झुन्ड-के-झुण्ड / घूमते हुए जीव-जन्तु से रक्षा कर-सकते हैं / तथा उनको नाचरंग आदि बुरी आदतों से बचा-सकते-हैं । / ये लोग बड़ी-कड़ी तबियत के होते-हैं । आफत का / सामना करने में ज़रा भी नहीं डगमगाते, बड़ी तत्परता से / तत्काल ही उसका सामना करते-हैं, ये किसी

का तिरस्कार / नहीं-करते, बल्कि नम्रता-पूर्वक नमस्कार-करके-ही बातें करते-हैं। /

यही-नहीं यह किसी सभा-सोसाइटी आदि की नियमावली / बनाने, किसी बात की तहकीकात करने, निर्वाचन के लिये निर्वाचकों / की सूची तैयार करने में भी सहायता-देते-हैं ।

वन्दे-मातरम् / गान हमारा जातीय गान है। इसे सर्वव्यापी बनाना हमारा कर्त्तव्य है । / इसको प्रचलित करने में चाहे जो कठिनाइयाँ उठानी-पड़ें / सबको खुशी खुशी झेलना-चाहिये। यह किसी-के लिये भी / बिलकुल ही अस्वाभाविक होगा कि वह इसके गाने में सम्मिलित / न हो । इसको स्वरक्षित रखने में ही हमारी भलाई है। / २३०

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

संक्षिप्त-संकेत

(३)

१.	संगठन	कार्यवाही	महापुरुष	दिलचस्पी
२.	तजवीज	मातृभाषा	लेखक	जयजयकार
३.	मन्त्री	दृढ़	दृढ़-विश्वास	प्रतिष्ठित
४.	वैमनस्य	वर्तमान	शुभागमन	परिच्छेद
५.	पारस्परिक	दिग्दर्शन	अंत्येष्टि-क्रिया	निष्पक्ष
६.	साहित्य	भोजनालय	दरिद्र	समर्थक
७.	समर्थन	एम. एल. ए.	स्तम्भ	त्याग
८.	सर्वनाश	प्रगतिशील	गौरवमय	सार्वजनिक
९.	सर्वोत्तम	व्यवहार	अवकाश	उत्साहपूर्वक
१०.	राजनीतिपटुता	सहयोग	असहयोग	आडम्बर
११.	खुशामद	सम्मानार्थ	महामहोपाध्याय	स्वतंत्रतापूर्वक
१२.	सेक्रेटरी	नियमानुसार	विचारार्थ	त्यागपत्र
१३.	फाइनेनशल	विज्ञप्ति	भूमध्यसागर	कम्यूनिज्म
१४.	समाजवादी	साम्राज्यवाद	लोकतन्त्रवाद	पश्चाताप
१५.	नामंजूर	मन्जूर	मुखतलिफ	कोषाध्यक्ष
१६.	जान-पहिचान	सहानुभूति	महकमा	सिलसिलेवार
१७.	मतसंग्रह	नियमानुकूल	मातृभूमि	पत्रसंपादक

अभ्यास—५८

आजकल प्रगतिशील राष्ट्रीयवादी सारे राष्ट्र का एकीकरण और दृढ़संगठन / के विचारार्थ हिन्दी-उर्दू के वर्तमान पारस्परिक वैमनस्य की अन्त्येष्टि क्रिया करने मे बड़ी दिलचस्पी से उत्साह-पूर्वक बिना अवकाश लिये / लगातार काम कर रहे-हैं । हर्ष की बात-यह-है कि बड़े-बड़े महामहोपाध्याय, मातृभाषा और मातृ-भूमि के सेवक, प्रतिष्ठित लेखक, पत्र-सम्पादक, बहुतेरे राज-नीतिपटु एम. एल. ए., और महात्मा गांधी भी इनकी नीति का हृदय-से-समर्थन-करते है । / हमारे मुसलमान नेता-गण तो इसके पक्के समर्थक है तथा, अन्य प्रगतिशील मुसलमान भी इस स्कीम से पूर्ण / सहानुभूति रखते-हैं। इतना ही नहीं, भिन्न-भिन्न राजनैतिक विचार-शील / लोग-भी राष्ट्रभाषा की आवश्यकता महसूस करते-हैं आज देश-में कम्युनिज्म, फॅसिज्म, समाजवाद लोकतन्त्रवाद और साम्राज्यवाद आदि भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण- रखने-वाले-भी इस बात को नामन्जूर नहीं-कर-सकते- कि / हिन्दुस्तानी की तजवीज का विरोध करने से भविष्य मे / देश को पश्चाताप के कड़ुवे फल अवश्य ही चखने-पड़ेंगे । देश को एकता के सूत्र मे बाँधने का यह भी/ सर्वोत्तम उपाय है कि हम हिन्दी-उर्दू के झगड़े को / समूल नष्ट कर साधारण हिन्दुस्तानी को सार्वजनिक भाषा बनावें और व्यवहार मे / लावें । कुशल राजनीतिज्ञ तो असहयोग के जमाने के पूर्व ही / से राष्ट्र भाषा की आवश्यकता समझते-थे । वे जानते-थे कि राष्ट्रीयकरण करने-के- लिए भारत ऐसे बहुभाषी देश मे / राष्ट्रभाषा के निर्माण का प्रश्न उठेगा । वे लोग ठीक ही / कहते थे कि यदि ऐसा-न-हुआ-तो देश का /

सर्वनाश हुए बिना न रहेगा । यदि निष्पक्ष भाव से हम / हिन्दुस्तानी की तजवीज तथा कार्यवाही का दिग्गदर्शन कर स्वतंत्रता-पूर्वक विचार / करें तो निश्चय ही हम अपने तथा राष्ट्र के सम्मानार्थ / न सिर्फ उसे मन्जूर करेंगे वरन् उसके साथ पूर्ण सहयोग / भी करने लगेंगे ।

हमे दृढ-विश्वास है कि यदि इस महत्वशाली एव गौरवमय प्रश्न को नियमानुकूल हल-करने-का प्रयत्न / किया-जाय तो सफलता असम्भव न-होगी । अपनी राष्ट्रभाषा के / शुभागमन पर हमें उसकी जयजयकार मनाना-चाहिए, उसकी खुशामद-करना-चाहिये / उसके-लिए अपनी जान भी लड़ा-देनी-चाहिये / । क्योंकि, राष्ट्रभाषा ही राष्ट्र और देश का प्राण है । अब समय/ आ गया है जब देश के बच्चे-बच्चे को राष्ट्रभाषा / से पक्की जान-पहिचान कर-लेना-चाहिये । देश के सामने यह समस्या छोटी मोटी नहीं है । इस विषय पर केवल मतसंग्रह करने का समय चला-गया । अब हमें शीघ्रातिशीघ्र इस / और मिलकर काम-करने-के लिये एक छोटी कमेटी तथा / सेक्रेटरी थाना मंत्री आदि नियुक्त कर नियमानुसार काम आरम्भ कर-देना- / चाहिये । इसके अतिरिक्त एक फाइनेनशल-कमेटी तथा कोषाध्यक्ष का निर्वाचन / भी अवश्य होगा । दूसरा काम इस कार्य विशेष-के लिए / चन्दा इकट्ठा करना तथा आय-व्यय का हिसाब आदि-रखना / होगा ।

४२१

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

अभ्यास-संकेत

१

२

३

४

५

६

उर्दू के कुछ प्रचलित शब्द

शब्द – चिन्ह

१.	अलाहिदा-अलावा		अलबत्ता	अव्वल-अलग
२.	जग-जारी		तौर	जरिये
३	मरतबा		मिस्टर-मिनिस्टर	मेसर्स
४.	मामला		मामूली	बशर्ते
५.	चूँकि	फिर	अक्सर	फर्क
६.	गो	खिलाफ	ताकि	न-तो
७.	महज	लायक	दरमियान	बाज
८.	लिहाज	बाजी	दफा	बाकी
९.	तेज	तेजी	आहिस्ता २	चुनानचे
१०.	फौरन हालाँकि	बजरिये	रफ्ता २ वाकई	बखूबी

संक्षिप्त-संकेत

१.	मजमून	मौजूद	मौजूदा	मातहत
२.	दस्तखत	कहावत	नतीजा	तजर्बा
३	इत्तफाक	रोजनामचे	बिरादरी	तादाद
४.	बाकायदा	बेकायदा	बदस्तूर	मुलाकात
५.	मुल्क	फरमाबरदारी	बेवजह	अदीमुलफुरसत
६.	बदएहतियाती	कामयाब	दरियाफ्त	कवायद

७

८

९

१०

११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

१८

१९

२०

२१

२२

२३

७. मुमकिन मशक्त इम्तहान मुताबिक

८. कम-अक्ली लापरवाही हरकत ढकोसलेबाजी

९. काफी दाखिल मुकर्रर तवज्जह

१०. मज्लिसेममूद तकलीफ तत्काल बेपरवाही

११. हरदम तकलीफजदा लियाकत अदब

१२. गुजारा गुजर मोहर्रम हाकिम

१३. हुक्म उस्ताद अहम-मसला खुदगर्ज

१४. होशियार पुरअसर बाजदफा हाजिर

१५. गैरहाजिर रस्मोआराम आदाब-अर्ज मददगार

१६. तारीफ इनाम-इकराम मजलूम नजदीक

१७. रोजमर्रा बाआसानी एहतियात गुफ्तगू

१८. बहादुर मुस्तकिल इर्दगिर्द बुजुर्ग

१९. तदबीर सिपहसालार मोकाबिला ताकतवर

२०. अच्छी-तरह कदम-कदम-पर पुराने-जमाने-मे खुशबूदार

२१. इन्किलाब-जिन्दाबाद अमल-दरामद मिसाल-के-तौर-पर हमेशा की तरह

२२ मुस्तकिल-तौर-पर ज्यादातर पब्लिक हरगिज

२३. कुरबानी मिलनसार जिस-कदर इसी-कदर
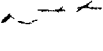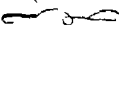
व्यवस्थापिका - सभा

१

२

३

४

५

अन्तर - राष्ट्रीय

१

२

३

४

५

६

कांग्रेस

१

२

३

४

५

साधारण व्यवहारिक शब्द

व्यवस्थापिका सभा (१)

१. स्पीकर प्रेसीडेन्ट प्रधान-मंत्री न्याय-मंत्री
२. अर्थ-मंत्री शिक्षा-मंत्री रेविन्यू-मंत्री रेवन्यू मिनिस्टर
३. मंत्रि-मंडल न्याय-सदस्य अर्थ-सदस्य शिक्षा-सदस्य
४. पालियामेंट्री-सेक्रेटरी सम्मानित-सदस्य सेलेक्ट-कमेटी स्वायत्त-शासन-मंत्राणी
५. विरोधी-दल अपर-हाउस संयुक्त-प्रान्तीय-लेजिस्लेटिव-कौंसिल, गवर्नमेन्ट-आफ-इण्डिया-ऐक्ट

अन्तर-राष्ट्रीय (२)

१. अंतर्राष्ट्रीय इंग्लिस्तान इगलैंड यूनाईटेड-स्टेट्स-आफ-अमेरिका
२. संयुक्त-राज्य-अमेरिका परराष्ट्र-सचिव उदार-दल अनुदार-दल
३. मजदूर-दल लिबरल-पार्टी कनसरवेटिव-पार्टी लेबर-पार्टी
४. उपनिवेश औपनिवेशिक स्वराज्य बृटिश-सरकार राष्ट्र-संघ
५. लीग-आफ-नेशन्स फैसीसिज्म बोलशिविज्म हिटलरिज्म
६. नाजीरीम मुसोलिनी हिटलर मिनिस्टर-आफ-फारेन-एफेयर्स ।

कॉंग्रेस (३)

१. राष्ट्रपति स्वागताध्यक्ष राष्ट्रदल
आल इण्डिया-कॉंग्रेस वर्किङ्ग-कमेटी
२. पूर्ण-स्वराज्य साम्यवाद समाजवाद साम्राज्यवाद
३. नेतृत्व जन्म-सिद्ध-अधिकार स्वागत कारिणी-सभा
कार्य्य कारिणी कमेटी
४. पदाधिकारी ब्रुटिश-मत दाता भारत मत-दाता
देशी-रियासत
५. ग्राम्य क्षेत्र भारत-सरकार नौकरशाही
सिविल-डिसोबिडियन्स मूवमेंट

अभ्यास—५६

[उर्दू में संक्षिप्त संकेतों पर अभ्यास]

१ एक बहादुर सिपहसालार किसी ताकतवर के मुकाबले में भी कामयाबी / को हासिल-ही-करता-है। वह अपने मंजिले-मकसूद पर / पहुँचने के-लिए बड़ी एहतियात के साथ मुस्तकिल कदमों को / उठाता हुआ बढ़ता-है। यह बड़े मशक्कत का काम है। / इसमें अगर उसने जरा सो भी लापरवाही, कमअक्ली, खुदगर्जी दिखलाई / या ढकोसले-बाजी को पास आने दिया कि बस फिर / वह इम्तिहान में नाकामयाब-हुआ ।

२. हर-एक पुरअसर / हाकिम का यह फर्ज है कि वह तकलीफजदों की तकलीफों को दूर करने-का तरफ काफी तवज्जह दे, बकायदे फरमाबरदारी / के-लिए अपने मददगारों को इनाम इकराम बाटे, और बेवजह / होशियार मातहतों को तंग न करे। ऐसे-करने-से उनके / मातहत भी रोजमर्रा के कामों को हरदम

आश्रासानी लियाकत के / साथ पूरा-करेंगे और अपने अफसर के हुक्म के मुताबिक / ही रोजनामचे को भर कर दस्तखत करेंगे। तजरबा यह बतलाता- / है कि मातहतों के काम के लिए जहाँ-तक-हो-/ सके बिरादरी के लोगों को इत्तफाक से भी मुकर्रर / न- करे, न उन्हे नजदीक ही आने दे, क्योंकि वे अपनी / बेकायदा हरकतों से मुल्क के इन्तजाम मे रोडे ही अटकावेंगे, / जिसका नतीजा ये होता है कि मुल्क मे बदइन्तजामी फैलता-है / और कोई काम ठीक तरह स नही होने पाता। /

३ मोहर्रम के मौके पर बाज-दफा तो इस-कदर भीड / होती-है कि पब्लिक का इरद- गिरद आजादी के साथ / हरकत करना भी नामुमकिन सा हो-जाता-है और हुक्काम के-लिए इसका अच्छी-तरह इन्तजाम करना एक अहम-मसला / हो-जाता-है। २४३

अभ्यास—६०

व्यवस्थापिका—सभा।

इस समय हमारे प्रान्तीय-असेम्बली के स्पीकर माननीय-श्रीयुत् पुरुषोत्तमदास टंडन हैं और प्रधान-मंत्री-हैं श्रीमान् गोविन्द बल्लभ जी पन्त। इस-तरह अलग-अलग-विभाग के अलग-अलग मंत्री-हैं / जैसे न्यायमंत्री, अर्थमंत्री, शिक्षामंत्री और रेविन्यूमंत्री। परन्तु सब- / से-बडी विशेष बात यह है कि लोकल-सेल्फ-गवर्नमेन्ट-/ डिपार्टमेण्ट किसी मंत्री के आधीन न-होकर एक मन्त्राणी के / आधीन है। वह स्वायत्त-शासन की मन्त्राणी हैं हमारी / पूर्व परिचिता श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित। इन मंत्रियों के आधीन आवश्यकतानुसार / एक एक पार्लियामेन्टरी सेक्रेटरी-है।

इन असम्बलियो में सम्मानित सदस्य- / गण प्रस्तावों को- उपस्थित-करते-हैं। गवर्नमन्ट की तरफ से / मन्त्रिमण्डल के सदस्य जैसे न्याय-सदस्य, अर्थ-सदस्य, शिक्षा / सदस्य आदि या तो उन प्रस्तावों- को- स्वीकार-कर-लेते- / हैं या विरोध-करते-हैं। अकसर यह प्रस्ताव संशोधन के / लिए सेलेक्ट-कमेटी के सुपुर्द किया-जाता-है और उनकी, सिफारिशों के साथ असेम्बली के सामने मंजूरी के लिये फिर / आता है।

हर एक कौंसिल या असम्बली में एक गवर्नमेंट- / दल और दूसरा विरोधी-दल होता- है। यह विरोधी दल के / नेता गवर्नमेंट के इस्तीफा देने पर मन्त्रि - मण्डल बनाते / और राज्य-शासन का काम करते-हैं। १८७

अभ्यास—६१

अन्तर-राष्ट्रीय

इस समय योरप में शस्त्रीकरण के कारण अन्तर-राष्ट्रीय परिस्थिति बड़ी / भयंकर हो रही-है। फासिज्म और हिटलरिज्म के सामने यूरोप से / गरज मन्द-पड़-गई है। इंग्लैंड इस-समय, अपनी [illegible] राज-नीति के कारण अकेला सा पड़-गया-है। यूनाइटेड स्टेट्स, ऑफ-अमेरिका भी तथा अन्य राज्य दिल खोल, [illegible] उसको साथ नहीं दे-रहे- हैं। लीग-ऑफ-नेशन, अर्थात् राष्ट्र-संघ का अन्त सा हो-चुका- है। ऐसी / हालत में मुसोलिनी या हिटलर ऐसे महाबलशाली डिक्टेटरों का मुंह तोड़, जवाब कौन-दे-सकता-है इन लोगों ने इस- समय बोलशेविज्म को भी दाब-दिया-है। इंगलिस्तान की इस / नीति से न-तो उदार-दल वाले खुश-हैं न / मजदूर-दल वाले।

उपनिवेशों का तो कहना ही क्या है / वे तो पहले ही से अप्रसन्न-हैं। अब केवल संयुक्त-राज्य-/ अमेरिका के साथ देने से-ही इनका भला-हो-सकता-/ है। १४०

अभ्यास—६२

कांग्रेस

हमारे देश की सबसे बड़ी जीती-जागती राजनैतिक-संस्था-कांग्रेस/ की-है-। इस-समय इसके राष्ट्रपति ह हमारे जगत-प्रसिद्ध / नायक श्रीमान् प० जवाहरलाल नेहरू । इनके नेतृत्व में एक अच्छे राष्ट्रीय-दल का सगठन हुआ-है जो कि पूर्ण-स्वराज्य/ को प्राप्त करना अपना जन्म-सिद्ध-अधिकार समझता-है और, इसके लिए उसका इंग्लेंड तथा भारत-सरकार से और कभी,' २ देश-रियासतों से बराबर संघर्ष होता रहता-है ।

इसने/अपने काम को-सुचारु-रूप से चलाने के लिए एक/कार्यकारिणी-कमेटी बना-रक्खी-है जिसे आल-इन्डिया-कांग्रेस-वर्किङ्ग- कमेटी कहते-हैं । इसी के द्वारा समय-समय पर यह ' अपनी नीति को निरधारित-करती है और फिर उसी नीति के/ अनुसार काम होता-है। इस संस्था के अन्तर-गत/ समाजवादी, साम्यवादी तथा साम्राज्यवादी अनेक-दल हैं जो अपनी नीति के अलग २ होते-हुए-भी वर्किङ्ग-कमेटी के निर्णय को मानते और उस पर काम करते-हैं । काम के विचार से इनके अनेक पदाधिकारी-है जो देश के कोने २ / में फैले-हुए-हैं-और इसकी निर्धारित नीति से / कार्य- कर-रहे-हैं ।
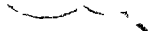
प्राम्यक्षेत्र मे काम-करना इस-समय / इसका मुख्य उद्देश्य हो रहा-है । नौकरशाही ने भी इसके / लोहे को मान लिया-है और इस संस्था के मुख्य २ / सञ्चालकगण जो कल बागी तथा देशद्रोही ठहराये गये-थे/वही आज इस गवर्नमेंट-के-मन्त्री-पद पर सुशोभित/हैं । इस साल इसके राष्ट्र-पति माननीय श्री सुभासचन्द्र बोस/चुन गए-हैं । यह भारत-मत-दाता की विजय है । २४०

स्वायत्त-शासन

१

२

३

४

५

६

प्रवासी – भारतवासी

१

२

३

हिंदी-साहित्य-सम्मेलन

१

२

३

४

५

स्वायत्त-शासन—४

१. लोकल-सेल्फ-गवर्नमेंट   स्वायत्त-शासन   चेयरमैन
वाइस-चेयरमैन
२. सभापति   उपसभापति   अध्यक्ष   अध्यक्षता
३ समर्थन   अनुमोदन   संशोधन   एक्जिक्यूटिव-
ऑफिसर
४. सेनेट्री-इंजीनियर   वाटरवर्क्स-इंजीनियर   मेयर   सेक्रेट्री
५. हाउस-टैक्स   वाटर-टैक्स   हाउस-एंड-वाटर-टैक्स   चुंगी
६. उम्मेदवार   नागरिक   चुनाव   संयुक्त निर्वाचन

प्रवासी-भारत-वासी—५

१. प्रवासी-भारत वासी   स्टेटसेटिलमेंट
फेडारेटेड-मालया   स्टेट्स   भारतीय-मजदूर
२. मलाया-रिजर्वेशन-एक्ट   मालयावासी
औपनिवेशिक सचिव   कलोनियल-सेक्रेटरी
३. एजेन्ट-जेनरल   यूनाइटेड-प्लान्टर्स-एसोसियेशन
सेन्ट्रल-इण्डियन-असेम्बली

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन—६

१. हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन   स्थायी-समिति   परीक्षा-समिति
साहित्य-समिति
२ प्रचार-समिति   संग्रहालय-समिति   उपसमिति
हिन्दी-प्रचार-समिति
३ हिन्दी-साहित्यकार   हिन्दी-पत्र-सम्पादक
हिन्दी-साहित्यसेवी   हिन्दी-विद्यापीठ

४. प्रथमा-परीक्षा

शीघ्रलिपि-विशारद-परीक्षा

५. आरायज-नवीसी-परीक्षा

राष्ट्रभाषा-हिन्दी

वैद्य-विशारद-परीक्षा

सम्पादन-कला-परीक्षा

मुनीमी-परीक्षा

हिन्दी-संकेत-लिपि

अभ्यास—६३

स्वायत्त शासन

हमारे प्रान्त की म्युनिसिपैलिटियों में इलाहाबाद म्युनिसिपल-बोर्ड का / भी एक अच्छा स्थान-है। इसके सभापति को चेयरमैन भी कहते हैं। चेयरमैन की सहायता के-लिए एक वाइस-चेयरमैन, या उप-सभापति और एक जूनियर-वाइस-चेयरमैन रहता-है। / इनके अलावा एक्जीक्यूटिव-आफिसर, सैनेटरी-इञ्जीनियर, सैनेटरी इन्सपेक्टर, वाटर-वर्क्स- / इञ्जीनियर आदि अफसर होते-हैं जो अपने डिपार्टमेंट का काम / सुचारु रूप-से-करते-हैं।

इसके सदस्यों का चुनाव नगर / के जनता द्वारा होता है पर चुनाव विशेषाधिकार और साम्प्रदायक प्रणाली / से होता-है। संयुक्त-निर्वाचन प्रणाली से नहीं। इन सदस्यों / की एक सभा होती है जो इसके कार्य की देख- / भाल-रखती-है। इस सभा में हर-एक-तरह के / प्रस्ताव-पेश-किये जाते-हैं। जो समर्थन, अनुमोदन या संशोधन / के बाद पास-किए-जाते-हैं।

इसके आमदनी का मुख्य / जरिया है चुङ्गी, हाउस-टैक्स या वाटर-टैक्स।

यह म्युनिसिपैलिटियाँ / गवर्नमेंट के लोकल-सेल्फ-गवर्नमेंट-डिपार्टमेंट के अधीन हैं। १४६

अभ्यास—६४

प्रवासी-भारतवासी

ट्रिनिदाद, फीजी, जजीबार, बृटिश-गायना, फेडीरेटेड-मालया-स्टेट्स जिस-किसी-/भी उपनिवेश मे जाओ, हमारे प्रवासी-भारतवासियों की दशा को बहुत-ही करुणाजनक और दयनीय पाओगे। इन भारतीय-मजदूरों ने/ उन देशों को अपने गाढे पसीने से दिन-रात मेहनत/कर बड़ा ही समृद्धिशाली बना-दिया-है पर अब/ वहाँ के गोरे निवासी इनको इनके अधिकारों से वचिन करने-/ के-लिये एडी-चोटी का पसीना एक-कर-रहे-हैं। / इनके खिलाफ रोज ही नये-नये कानून जैसे रिजर्वेशन-एक्ट,/ जजीबार-क्लोव-एक्ट, हाई-ग्राउन्ड-रिजर्वेशन-एक्ट आदि पास-किये-/ जाते-हैं और जगह-ब-जगह से इनके नागरिक स्वतों/ तथा मताधिकारों को छीनने का प्रयत्न किया-जा-रहा- है। इनके खिलाफ उन स्टेट्स-सेटिलमेंट आदि आदि में प्लैंटरों/ ने एक एसोसियेशन यूनाइटेड-प्लैंटर्स-एसोसियेशन के नाम से कायम-/ किया-है और इनके विरोध से रक्षा करने-के-लिए /हमारे प्रवासी-भारतवासियों ने अपनी एक संस्था सेन्ट्रल-इन्डियन-एसेम्बली/ के नाम से कायम-की-है। इन विदेशों के स्थानिक/ राजनैतिक प्रधान को एजेन्ट-जेनरल तथा बृटेन के मन्त्री को/ जो इनके ऊपर-है औपनिवेशिक-सचिव या कलौनियल-सेक्रेट्री कहते हैं।/ २८१

— — —

अभ्यास—६५

हमारे देश मे हिन्दी-साहित्य सम्मेलन ने हिन्दी-प्रचार के लिये जो अविरल प्रयत्न किया-है उसी के फल-स्वरूप / अब हम बहुत ही जल्द इसको राष्ट्र-भाषा के रूप / मे देखने की आशा-कर-रहे-हैं।

इसके लिए हम/ उन हिन्दी-साहित्य-सेवियो को धन्यवाद दिये बगैर नहीं-रह- सकते जिन्होंने इस ध्येय के पूरा-करने-मे अपना तन- मन-धन सब कुछ इसकी सहायता के लिए निछावर कर- / दिया-है।

काम के बहुतायत के कारण सम्मेलन ने अलग / काम के लिए अलग २ समितिया बना रक्खी है जैसे हिन्दी-प्रचार विभाग के लिए प्रचार समिति, संग्रहालय का कार्य सम्पादन करने के लिये संग्रहालय-समिति आदि। इसी तरह साहित्य-समिति स्थाई-समिति और परीक्षा-समिति आदि भी-हैं। इस समय परीक्षा समिति के मंत्री हैं श्रीमान दयाशंकर जी / दुबे एम. ए., एल. एल. बी.। इन्होने भारत भर मे परीक्षा-के हजारो केन्द्र-स्थापित किये-है जहा वैद्य-विशारद-परीक्षा सम्पादन-कला-परीक्षा, अरायज-नवीसी परीक्षा-तथा मुनीमी- / परीक्षा ली-जाती-है और इसके लिए उन्हे प्रमाण / तथा उपाधि-पत्र दिये-जाते है।

सम्मेलन ने अभी, हाल-ही-में एक बडे भव्य भवन का निर्माण किया है जिसे हिन्दी-संग्रहालय के नाम से पुकारते-है। इसी मे सम्मेलन की ओर से हिन्दी-शीघ्र-लिपि कालेज की स्थापना / की-गई-है। २०३

तीसरा भाग

विशेष योग्यता चाहने वाले छात्रों के लिए

जो कुछ अब तक आप पढ़ चुके हैं उससे आप साधारण तौर पर कोई भी व्याख्यान आदि की पूरी रिपोर्ट ले सकेंगे परन्तु एक कुशल संकेत-लिपि-ज्ञाता होने के लिये यह बहुत आवश्यक है कि आप जहाँ कहीं भी व्याख्यान आदि लिखने के लिये जायँ पहले उस विषय के विशेष शब्दों तथा वाक्यांश का भली-भाँति अभ्यास कर ले। ऐसा करने से वह विषय ठीक रूप से समझ में आ सकेगा और आप भी उसको सरलता-पूर्वक लिख सकेंगे। आगे अलग-अलग विभागों के विशेष-शब्दों की एक वृहत सूची दी गई है और बताया गया है कि उसको छोटे से छोटे रूप में किस प्रकार लिखा जाय कि पढ़ने में भी असुविधा न हो। इनका अच्छा अभ्यास करने के पश्चात् आपकी गति १५० शब्द प्रति मिनट से लेकर १७५–८० तक या उसके ऊपर अवश्य पहुँच जायगी। इसी तरह नये-नये प्रचलित शब्दों के गढ़ने का आप स्वयं प्रयत्न करें।

या
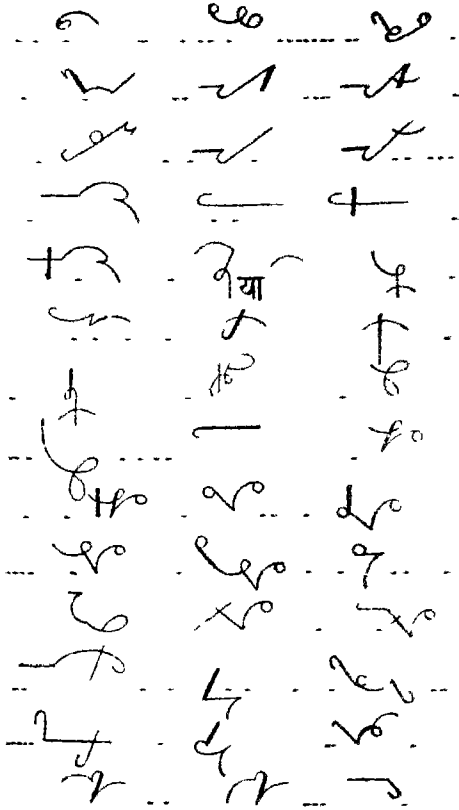
राज्यशासन के पदाधिकारी

१.	सम्राट	शहनशाह	प्रिंस-आफ-वेल्स
२.	भारतमंत्री	गवर्नर जनरल	गवर्नर-जनरल-इन-कौंसिल
३.	वायसराय	गवर्नर	गवर्नर-इन-कौंसिल
४.	कमिश्नर	कलेक्टर	डिप्टी-कलेक्टर
५.	डिप्टी कमिश्नर	मजिस्ट्रेट	असिस्टेन्ट मजिस्ट्रेट
६.	आनरेरी-मजिस्ट्रेट	ज्वाएन्ट-मजिस्ट्रेट	डिप्टी-मजिस्ट्रेट
७	डिस्ट्रिक्ट-मजिस्ट्रेट	तहसीलदार	नायब-तहसीलदार
८.	सदर-तहसीलदार	गिरदावर	इन्सपेक्टर-जनरल-आफ-पुलिस
९.	डिप्टी-इन्सपेक्टर-जनरल-आफ-पुलिस		सुपरिन्टेन्डेन्ट आफ-पुलिस
			डिप्टी-सुपरिन्टेन्डेन्ट-आफ-पुलिस
१०	इन्सपेक्टर-आफ-पुलिस		सब-इन्सपेक्टर-आफ पुलिस
			शहर कोतवाल
११.	थानेदार	रेलवे पुलिस	खोफिया-पुलिस
१२.	कमाण्डर-इन-चीफ	जंगी-लाट	प्रधान सेनापति
१३.	डाइरेक्टर जेनरल	एडजूटेन्ट-जेनरल	फील्ड मार्शल
१४.	मेजर-जनरल	लेफटिनेन्ट-जेनरल	केप्टेन

—०—

अभ्यास — ६६
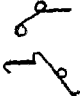
इंगलैंड के बादशाह भारत के सम्राट तथा शहनशाह कहे-जाते-/ हैं। इनके सबसे ज्येष्ठे पुत्र को जो राज्याधिकारी भी होते- हैं प्रिंस-आफ-वेल्ज कहते-हैं। भारत के शासन के सबसे-बड़े / उच्चाधिकारी भारत मन्त्री हैं। जिन्हें भारत सचिव के नाम से भी पुकारते-हैं। यह हर पाँचवें वर्ष सम्राट की मंजूरी से / भी भारत-राज्य का प्रबंध करने-के-लिए गवर्नर-जेनरल / को भेजते-हैं जिन्हें वायसराय भी कहते-हैं। इनकी सहायता के लिए केन्द्रीय-एसेम्बली और कौंसिल-आफ-स्टेट का निर्माण हुआ-है जो भारतवर्ष भर-के लिये नये-नये कानून बना कर इनकी सहायता करते-हैं। फौजी मामलों में जो / प्रधान-सेना-पति वायसराय को सलाह-देते-हैं उन्हें / कमांडर-इन चीफ या जंगी लाट कहते हैं। इनके आधीन और बहुत से फौजी अफसर-हैं जो काम के अनुसार / डाइरेक्टर जेनरल, जेनरल, फील्ड-मार्शल, मेजर-जेनरल, लेफ्टिनेन्ट और कप्तान आदि कहलाते-हैं। गवर्नर-जेनरल-ने अलग-अलग प्रान्तों के राज्य-सञ्चालन का अधिकार गवर्नरों को सौंप-दिया-है। कानून बनाने आदि में इनकी सहायता के-लिये लेजिस्लेटिव-एसेम्बली और कौंसिलों का निर्माण किया गया-है। परन्तु प्रान्तीय-कौंसिल अपने प्रान्त भर के-लिए कानून बना-सकती है।

शान्ति / कायम-रखने और उनको ठीक-रूप में प्रबंध करने-के- लिये जो पदाधिकारी हैं उन्हें कलेक्टर कहते-हैं। कलेक्टर और गवर्नर के बीच में एक और अफसर होता-है जिसे / कमिश्नर या डिविजनल कमिश्नर कहते-हैं। कलेक्टर की सहायता के-लिए / उसके आधीन डिप्टी-कलेक्टर असिस्टेन्ट-कलेक्टर, आनरेरी-मजिस्ट्रेट, डिस्ट्रिक्ट / मजिस्ट्रेट, ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट, डिप्टी-मजिस्ट्रेट और तहसीलदार होते-हैं। कलेक्टर / को डिस्ट्रिक्ट-मजिस्ट्रेट, मजिस्ट्रेट और अवध के प्रान्तों में / डिप्टी-कमिश्नर

भी कहते- हैं। तहसीलदार फौजदारी तथा माल के मुकदमो / का फैसला-तो-करता-ही-है, इसके अलावा यह माल-मालगुजारी/के वसूलयाबी का भी पूरा प्रबन्ध-रखता है। इन बातों / में उसको सहायता देने के लिए नायब तहसीलदार, गिरदावर / आदि की भी नियुक्त होती-है। तहसीलदार को सदर-तहसीलदार / भी कहते हैं।

प्रान्त की शान्ति की रक्षा करने के लिए और ऐसे मामलो मे गवर्नर को सलाह देने के लिए जो अफसर है उसे इन्स्पेक्टर जेनरल आफ पुलिस / कहते हैं। इनके अधीन डिप्टी इन्स्पेक्टर जेनरल आफ पुलिस, पुलिस / सुपरिन्टेन्डेन्ट तथा डिप्टी पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट आदि हैं। सुपरिन्टेन्डेन्ट आफ पुलिस, डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के आधिन होते हैं और नगर की सुख-, शान्ति कायम-रखने मे उसकी सहायता करते-है। इनके आधीन इन्सपेक्टर-पुलिस,सब-इन्स्पेक्टर पुलिस, शहर कोतवाल तथा थानेदार होते / हैं। खुफिया पुलिस तथा रेलवे पुलिस पुलिस की भिन्न भिन्न, शाखाएँ हैं। साधारण पुलिस को कॉस्टेबिल भी कहते-हैं। ४००

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

१२

१३

१

२

३

४

सरकारी और गैर—सरकारी संस्थाएँ

सरकारी संस्थाएँ (१)

१. ब्रिटिश पार्लियामेन्ट — हाउस आफ कामन्स
२. हाउस आफ लार्डस् — अँग्रेज प्रतिनिधि सभा
३. अँगरेज सरदार सभा — इण्डिया कौंसिल
४. प्रिवी कौंसिल — राज्य परिषद
५. कौंसिल आफ स्टेट्स — केन्द्रीय सभा
६. सेन्ट्रल एसेम्बली — प्रान्तीय व्यवस्थापिका-सभा
७. लेजिस्लेटिव एसेम्बली — कौंसिल
८. सरदार सभा — म्युनिसिपल बोर्ड
९. डिस्ट्रिक्ट बोर्ड — नोटाफाइड एरिया
१०. इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट — कारपोरेशन
११. पोर्ट ट्रस्ट — यूनियन कमेटियाँ
१२. नरेन्द्र मण्डल — चेम्बर आफ प्रिंसेस
१३. लोकल सेल्फ गवर्नमेंट — गवर्नमेंट आफ इण्डिया

गैर-सरकारी संस्थाएँ (२)

१ अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी — आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी
२. कांग्रेस पार्लियामेंट्री बोर्ड — प्रांतीय कांग्रेस कमेटी
३. प्राविंशल कांग्रेस कमेटी — सोशलिस्ट पार्टी
४. डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस कमेटी — नगर कांग्रेस कमेटी
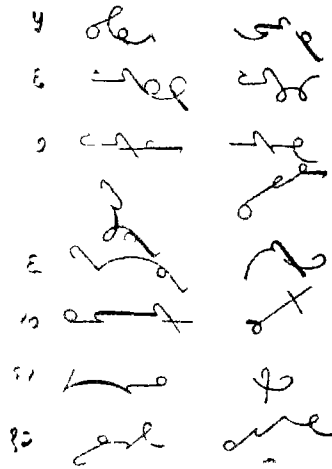
५ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन नागरी-प्रचारिणी-सभा
६. अखिल भारतवर्षीय हिन्दू महासभा
अखिल भारतवर्षीय मुस्लिम लीग
७ अखिल भारतवर्षीय खादी संघ
कोआपरेटिव क्रेडिट सोसाइटी
८. प्रान्तीय आदि हिन्दू महासभा हरिजन सेवा संघ
९. प्रान्तीय मजदूर सभा लेबर यूनियन
१०. सिक्ख गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी अहरार पार्टी
११. चेम्बर आफ कामर्स ट्रेड यूनियन
१२. यू० पी० सेकेण्डरी एजूकेशन एसोसियेशन
सरवेन्ट आफ इण्डिया सोसायटी

अभ्यास—६७

इङ्गलेड तथा उसके उपनिवेशों का शासन बृटिश पार्लियामेन्ट द्वारा / होता-है। इस पार्लियामन्ट की दो शाखाए हैं, जो हाउस-/ आफ-कामन्स और हाउस-आफ-लार्डस् के नाम से पुकारा-' जाती-है-। हाउस-आफ-कामन्स को अप्रभी प्रतिनिधि-सभा और हाउस-आफ-लार्डस् को अंग्रेजी-सरदार-सभा कहते है। प्रिवी-कौनसिल इङ्गलेड तथा उपनिवेशों के लिए सब-से-बडा न्यायालय है। भारत का शासन वह इन्डिया कौंसिल द्वारा करती-है।

इसी- तरह सारे भारत के वास्ते कानून बनाने-के-लिए कौंसिल-आफ-स्टेट्स और सेंट्रल-लेजिस्लेटिव-असेम्बली-है। इन्हें-राज्य-परिषद ' तथा केन्द्रीय-व्यवस्थापिका भी कहते-हैं। प्रान्तों में भी इसी- तरह लेजिस्लेटिव-असेम्बली और कौंसिल है। कौंसिल को अपर-हाउस ' और लेजिस्लेटिव-असेम्बली को लोअर-हाउस भी कहते-हैं। इन्हीं व्यवस्थापिका-सभाओं द्वारा प्रान्तों के लिए सारे कानून बनाये- जाते-है।

इसी तरह नगरों के देहातों और शहरवाली निवासियों को ' सुव्यवस्थित हालत-में रखने के-लिए म्युनिसिपल बोर्ड डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड तथा / नोटीफाइड-एरिया का कायम की-गई-है। कलकत्ता,बम्बई आदि में म्युनिसिपल-बोर्ड अर्थात कारपोरेशन और प्रेसिडेन्ट, है। कारपोरेशन के अध्यक्ष को मेयर कहते-है।

राजा-महराजाओ की सभाओ को नरेन्द्र-मडल या चेम्बर्स-आफ प्रिंसेज कहते- है

१६१

अभ्यास—६८

(२)

हिन्दुस्तान के राजनैतिक क्षेत्र मे सब-से-बड़ी संस्था अखिल- / भारत वर्षीय-नेशनल-कांग्रेस-है ।/इस आल-इंडिया-नेशनल-कांग्रेस-ने-अपने-काम-करने-के-लिए हर-एक प्रांत, नगर या / गाँवो मे अपनी अलग-अलग कमेटियाँ मोकर्रर-कर-रक्खी-हैं / जिसे आल-इंडिया-कांग्रेस-कमटी, प्रांतीय-कांग्रेस-कमेटी, नगर-कांग्रेस-कमेटी / या ग्राम्य-कांग्रेस-कमेटी कहते-है । डिस्ट्रिक्ट-कांग्रेस-कमेटी, या / विलेज-कांग्रेस-कमेटी, प्राविंशियल कांग्रेस कमेटी के आधीन हैं / ।

भारत और प्रांतो की कौंसिलो के चुनाव के लिए कांग्रेस ने एक पार्लियामेंट्री-बोर्ड और खद्दर प्रचार के लिए आल-इंडिया-स्पिनर्स / एसोसियेशन बना रखा-है जिसे अखिल भारतवर्षीय खादी संघ भी / कहते हैं ।

नेशनल-लिबरल-फेडरेशन, अखिल-भारतवर्षीय-हिन्दू-महा-सभा, अखिल/ -भारतवर्षीय-मुस्लिम-लीग आदि भी राजनैतिक संस्थाएँ है पर इनका / काम किसी विशेष जाति या वर्ग ही के लिये होता / है, सारे भी देशवासियो के लिये नहीं ।

देश मे हिन्दी प्रचार / के लिये सबसे ऊँचा स्थान हिन्दी-साहित्य सम्मेलन-ही का / है । इस सम्बन्ध मे नागरी-प्रचारिणी-सभा का नाम आदर / के साथ लिया-जाता है ।

इनके अलावा अलग अलग जाति / और सम्प्रदायो ने अपने अपने स्वार्थों की रक्षा के लिये अलग अलग संस्थाएँ बना रखी है, जैसे आदि हिन्दू-सभा,/ अग्रवाल-महासभा, आल-इंडिया-कायस्थ-सभा आदि ।

हरिजन-सेवा-सघ /, प्रांतीय-मजदूर-सभा, लेबर-यूनियन, सिख-गुरु-द्वारा-प्रबन्धक-कमेटी, / चेम्बर-आफ-कामर्स, सर्वेन्टस्-आफ -इन्डिया-सोसाइटी आदि / सस्थायें भी देश मे अच्छा काम -कर-रही-है। २२८

पोस्ट-आफिस-विभाग
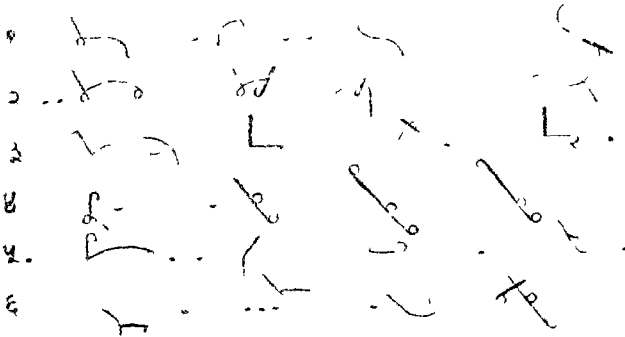
१.	पोस्टकार्ड	लिफाफा	तार	तार-बाबू
२.	पोस्टमास्टर	पोस्ट-मास्टर-जेनरल	रजिस्टर्रा	मनीआर्डर
३.	फारेन-मनीआर्डर	डाकिया	लेटर-बक्स	डाकखाना
४.	टेलीग्राफ-सुपरिटेंडेंट	पोस्ट-आफिस	सब-पोस्ट-आफिस	ब्रांच-पोस्ट-आफिस
५.	टेलीग्राफ-मास्टर	चिट्ठी	खत	पत्र
६.	तार-घर	पैकर	पियुन	हेड-पोस्ट-आफिस

अभ्यास—६६

रेलवे के बाद यदि किसी-डिपार्टमेन्ट का महत्व है तो / वह पोस्टल-डिपार्टमेन्ट ही है। यहाँ तीन या चार पैसे / में पोस्टकार्ड तथा लिफाफा को भेज-कर हजारों मील की / खबर घर बैठे मंगवा सकते हो। तार से तो खबर / कुछ ही घन्टों या मिन्टों मे पहुँचती- है।

पोस्ट-आफिस / के सब से-बड़े प्रान्तीय अफसर को पोस्ट-मास्टर-जेनरल / और नगर के सब से बड़े अफसर को पोस्ट-मास्टर / कहते हैं। इनके अधीन सब पोस्ट-मास्टर तथा ब्रांच पोस्ट-मास्टर / होते-हैं। इसी तरह टेलीग्राफ-डिपार्टमेंट के अफसर को/टेलीग्राफ सुपरिटेंडेंट या टेलीग्राफ-मास्टर कहते हैं और तार / भेजने वाले बाबू को तार-बाबू कहते-हैं।

चिट्ठी या खत जिनकी रजिस्टरी की आवश्यकता नहीं-होती वह लेटर-बक्स मे / डाल-दिये-जाते-हैं। डाकिया उन्हें लेटर-बक्स से निकाल / कर हेड-आफिस, सब-पोस्ट-आफिस या ब्राच-पोस्ट-आफिस / ले-जाता है। वहाँ से फिर वे जिन नगरों के /रहने-वालों के पत्र होते हैं उन नगरों के डाकखानों मे / भेज दिये-जाते-हैं। वहाँ उन पत्रों के बंडलों / को पेकर लोग खोलते-हैं और फिर ये चिट्ठियाँ पीयुन / द्वारा बँटवा-दी जाती-हैं।

पोस्ट-आफिस द्वारा दूसरे / नगरों या सुदूर देशों में रुपया भी भेज सकते-हैं। अपने ही देशों म रुपया मनीआर्डर द्वारा और सुदूर / देशों मे फारन-मनी आर्डर द्वारा रुपया भेज-सकते है।

रेलवे-विभाग
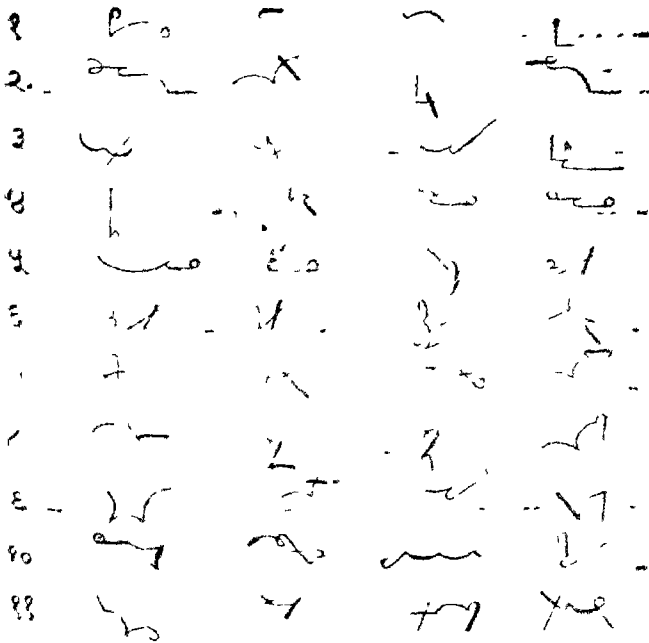
१. स्टेशनमास्टर गार्ड प्लेटफार्म टिकट

२. बुकिंगक्लर्क मालबाबू टिकटबाबू गुड्सक्लर्क

३. ईस्ट इण्डियन रेलवे जी. आई. पी. रेलवे

एन . डब्लू . आर . रेलवे टिकट-कलेक्टर

४. टी. टी. आई टाइमटेबिल फर्स्ट-क्लास सेकंड-क्लास

५. इंटर-क्लास थर्ड-क्लास पहला-दर्जा दूसरा-दर्जा

६. तीसरा दर्जा ड्योढ़ा दर्जा तीर्थ-यात्री रेलवे-टाइमटेबिल

७. ट्रैफिक-मैनेजर ट्रैफिक-इंस्पेक्टर इनक्वायरी-आफिस मालगाड़ी

८. मुसाफिर गाड़ी पसेंजर गाड़ी पसेजर ट्रेन मेलट्रेन

९. तूफान-मेल मालगुदाम इनवाइस बिलटी

१०. सिगनेलर मुसाफिरखाना वेटिङ्गरूम ड्राइवर

११. फायरमैन रेलवे-इन्जीनियर चीफ-कामर्शल-मैनेजर चीफ आपरेटिङ्ग सुपरिटेन्डेन्ट

अभ्यास—७०

भारतवर्ष म पहले-पहल .रेलवे का निर्माण बम्बइ प्रात मे / हुआ-था। उस समय लोगो को यह पहले-पहल / काले काले देव तथा दानव के समान मालूम हुए परन्तु शीघ्र / ही अपनी उपयागिता के कारण इन्होंने भारतवर्ष के कोने / कोने अपना अधिकार जमा लिया। अब तो किसी देश की / सुख शाति व्यापार तथा व्यवसाय आदि का दारोमदार इन्हीं पर / है। बिना इनके एक मिनट भी काम नही चल-सकता / ।

गॉव-गॉव तथा नगर-नगर में इन रेलो के ठहरने / के लिए स्टेशन बने है जिनका प्रबन्ध करने-वाले को / स्टेशन-मास्टर कहते-हैं। रेलवे-ट्रेन के चलाने-वाले को ड्राइवर / और उसकी देख-रेख रखने-वाले को 'गार्ड' कहते-हैं।/

रेल-पर-चढने के लिए हर-एक आदमी को दाम/देकर टिकट खरीदना-पड़ता-है। जो हर एक स्टेशनों के / मुसाफिर-खानों मे बने हुए टिकट घर से मिलता-है-/। टिकट देने वाले को टिकट बाबू और साथ के माल की / बिल्टी बनाने वाले को बुकिङ्ग-क्लर्क कहते-हैं। / जो माल

मालगाड़ी से भेजा-जाता-है वह अलग माल-गुदाम में/ रखा-जाता-है और उनकी इनवाइस गुड्स-क्लर्क या माल-बाबू/ बनाता-है। यह टिकट अलग-अलग दरजों के-लिये/ अलग-अलग रंग के होते-हैं। फर्स्ट तथा सेकंड-क्लास/का टिकट कुछ हरा मायल होता-है, इन्टर क्लास का/लाल तथा थर्ड-क्लास का पीला होता-है। इसी तरह/ पहले-दर्जे, दूसरे-दर्जे, ड्योढे-दर्ज और तीसरे-दर्जे का/ किराया भी अलग-अलग होता-है।

किस-वक्त गाडी आती / या जाती-है या कहाँ-कहाँ किस-किस प्लेटफार्म-पर/ठहरती-है इसका पता रेलवे-टाइम-टेबिल में दिया-रहता /है। इसके अलावा हर-एक स्टेशनों पर एक इन्कायरी-आफिस / होती-है जहाँ रेलवे सम्बन्धी हर-एक बातों को / पूछ-सकते-हो। रेलवे-गाडियों की भी तेजी तथा माल और आदमियों को ले-जाने के लिहाज से कई किस्में हैं। जैसे मेल-ट्रेन, तूफान-मेल, पैसेंजर-गाडी तथा मालगाडी आदि।

स्टेशनों पर टिकट की जाच टिकट-कलेक्टरों / द्वारा की जाती-है और ट्रेन पर टी० टी० आई / द्वारा होती-है। काम के लिहाज से रेलवे के और / भी पदाधिकारी तथा कर्मचारी होते-हैं जैसे-चीफ-कमर्शियल-/ मैनेजर, चीफ-आपरेटिङ्ग-सुपरिन्टेन्डेन्ट रेलवे-इन्जीनियर, ट्रैफिक-मैनेजर, ट्रैफिक-/ इन्सपेक्टर, फायरमैन, सिगनेलर, आदि-आदि। अब किसी-भी मुसाफिर-गाड़ी पर बैठकर तीर्थयात्रा करना बहुत-सुविधाजनक तथा सुहावना मालूम-होता-है।

३८०

बालचर–मण्डल
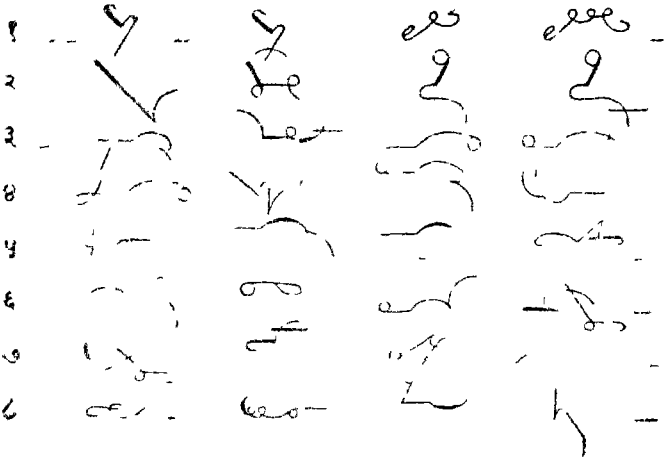
१ बालचर बालचर-मंडल सेवा-समित मेवा समित-
व्याय-स्काउट-एसोसियेशन

२. बेडन-पावेल बेडन-पावेल-व्याय-स्काउट-एसोसियेशन
हेड-क्वार्टर हेड-क्वार्टर-कमिश्नर

३. चीफ-कमिश्नर आर्गनाइजिंग-कमिश्नर कब-मास्टर
स्काउट-मास्टर

४. असिस्टेन्ट-स्काउट-मास्टर पेट्रोललीडर स्काउट-कमिश्नर
दल-नायक

५. टोली-नायक कैम्प-फायर कैम्पिंग मारचिंग-गाना

६. मारचिंग-आर्डर स्कार्फ-स्काउट-मेला कोमलपद-शिक्षण

७. ध्रुवपद-शिक्षण गर्ल-गाइड शेर-बच्चे रोवर

८ कोर्ट-आफ-आनर दीक्षांत-सस्कार हाइकिंग
टोलीपरेड

अभ्यास--७१

धन्य है श्री मालवीय जी को जिन्होंने भारतीयों के / हित के-लिये सेवा-सिमित-ब्वाय-स्काउट-एसोसियेशन को स्थापित किया-/ है। इस समय इसके चीफ़-आर्गनाइजिंग-कमिश्नर स्वनाम धन्य श्री / श्री-राम-जी-बाजपेयी-हैं और हेड-क्वार्टर-कमिश्नर-हैं श्री / जानकी-शरण-जी वर्मा।

बेडन-पावेल-ब्वाय-स्काउट-एसोसियेशन के नाम से एक और भी संस्था है जिसे लार्ड बेडन-पावेल-ने स्थापित किया-है। उसका संचालन अधिकतर यहाँ के/ अफसर वर्ग के हाथ-मे-है। लार्ड बेडन-पावेल ने / भी हिन्दुस्तानियों के प्रति अकसर ऐसे विचार प्रकट किये-हैं जो किसी-भी देशाभिमानी को रुचिकर नहीं हो-सकते।

यह बालचर-मण्डल अपने बालचरों या स्काउटों को योग्यतानुसार कई नामों से पुकारती-है जैसे शेर-बच्चे, रोवर आदि। इनके / नायकों को टोली-नायक, दल-नायक, कब-मास्टर तथा स्काउट- मास्टर आदि कहते हैं।

यह बालचर टोली-परेड, कैम्प-फायर, / हाईकिंग आदि के लिए अक्सर मार्चिंग-आर्डर मे गाने गाते-/ हुए अपने नगरों से बाहर भी जाते हैं। इनके लीडर-को/पेट्रोल-लीडर कहते-हैं।

योग्यतानुसार इन्हें कोमल-पद-शिक्षण/ या ध्रुव-पद-शिक्षण के प्रमाण-पत्र बालचर मण्डल से/ मिलते-हैं।

खेलों द्वारा बालचरों को देश-भक्त, सच्चरित्र, स्वाभिमानी / तथा स्वावलंबी बनाकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा-कर-देना / सेवा-समिति का मुख्य उद्देश्य है। कोई भी सच्चा स्काउट/ बुरी बातों से दूर रहेगा और अपने देश-महेश-नरेश/ के लिए तन-मन-धन न्योछावर करने को तैयार रहेगा। /

२३०

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

१८

ग्रह - नक्षत्रादि

१.	सोमवार	पीर	मङ्गलवार	बुद्धवार
२	बृहस्पतिवार	जुमेरात	शुक्रवार	जुमा
३.	शनिवार	शनिश्चर	रविवार	इतवार
४.	महीना	सूर्य	सूरज	चाँद
५.	चन्द्रमा	चन्द्रवार	वर्ष	वार्षिक
६.	दिन	रात	हफ्ता	सप्ताह
७.	साल	मास	मासिक	साप्ताहिक
८.	सुबह	सबेरा	दोपहर	चैत्र
९	बैसाख	ज्येष्ट	असाढ़	सावन
१०.	भादो	कुवार	कार्तिक	अगहन
११.	पूस	माघ	फागुन	जनवरी
१२.	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई
१३.	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर
१४.	अक्टूबर	नवम्बर	दिसम्बर	तारीख —संख्या के पहले
१५	ग्रह	नक्षत्र	वार	तिथि
१६.	अमावस्या	पूरनमासी	सूर्य-ग्रहण	चन्द्र-ग्रहण
१७.	शुल्क-पक्ष	कृष्ण-पक्ष	रमजान	शबेरात
१८	मिनट	घन्टा	पल	विपल

१

२.

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

१२

१३

१४

१५

शिक्षा-विभाग

१. स्कूल कालेज यूनीवर्सिटी हेडमास्टर
२. प्रिन्सिपल ट्रेनिंग कालेज डिप्टी साहब डाइरेक्टर
३. शिक्षा-मंत्री म्युनिसिपल-स्कूल डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड-स्कूल शिक्षा-प्रणाली
४. प्रारम्भिक-शिक्षा रजिस्ट्रार चान्सलर वाइस चान्सलर
५. शिक्षा केन्द्र प्राइमरी-स्कूल सेकेन्डरी-स्कूल माध्यमिक शिक्षा
६. अनिवार्य शिक्षा निशुल्क शिक्षा मिडिल-स्कूल हाई-स्कूल
७. ग्रेजुएट विश्वविद्यालय सरकिल इन्सपेक्टर गुरुकुल
८. विद्यापीठ पाठशालाएँ पाठ्यक्रम पाठ्यपुस्तक
९. एफ. ए. बी. ए. एम. ए विद्यालय
१०. सैंडीकेट सीनेट स्त्री-शिक्षा औद्योगिक शिक्षा
११. दस्तकारी-शिक्षा शिल्प शिक्षा डिप्टी-इन्सपेक्टर निरीक्षण
१२. शिक्षण विद्यार्थीगण शिक्षा किंडर-गार्टन प्रणाली
१३. किंडर-गार्टन-सिस्टम माटसेरी-प्रणाली माटसेरी-सिस्टम परीक्षा
१४. यू. पी. सेकेन्डरी-एजूकेशन-एसोसियेशन एंग्लो-वर्नाक्यूलर-स्कूल वर्नाक्यूलर-स्कूल अध्यापक
१५. गुरु-शिष्य छात्रालय कनवोकेशन कैरिकुलम

———

अभ्यास—७२

[ग्रह-नक्षत्रादि सम्बन्धी शब्दों पर अभ्यास]

हमारे यहाँ जो काम होते-हैं सब अच्छे ग्रह, नक्षत्र / और साइत में किए-जाते-हैं। तिथि तथा वारों का / भी पूरा विचार-रक्खा-जाता-है। कृष्ण-की अमावस्या, / चन्द्र-ग्रहण और सूर्य-ग्रहण के दिन तो निषिद्ध कार्य / ही किये-जाते-हे। शुभ कार्य शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा / के दिन-हो-सकते हैं। यों तो कार्य करने के- / लिए साल या वर्ष में ३६५ दिन पडे-हैं पर / नवरात्रि का सप्ताह और विजय-दशमी का हफ्ता बड़ा पवित्र / माना जाता-है।

हिन्दू-मुसलमानो-और-अंग्रेज़ी के महीने के / अलग अलग नाम हैं जैसे हिन्दुओं के महीने के नाम / यदि चैत, बैसाख, ज्येष्ठ आदि हैं तो अँग्रेजी महीनो के / नाम जनवरी, फरवरी, मार्च आदि हैं। मुसलमानों के महीनों के / नाम मोहर्रम, रमजान, शबरात आदि हैं। इसी तरह अलग-अलग / दिन भी-है। अपने यहाँ बुधवार और शनिश्चर के दिन /कोई शुभ-कार्य-नहीं करते। बृहस्पतिवार रविवार या मङ्गलवार अच्छे / दिन माने गये-हैं। ईसाई लोग रविवार को और मुसलमान / लोग शुक्रवार या जुमे को बहुत पवित्र मानते हैं। २६१

अभ्यास—७३

[शिक्षा सम्बन्धी शब्दों पर अभ्यास]

इस समय हमारे प्रांत के शिक्षा की बागडोर हमारे अनुभवी / मन्त्री श्रीमान् प्यारेलाल जी शर्मा के हाथों में है। निःशुल्क- / और-अनिवार्य-शिक्षा का देना ही उसका मुख्य उद्देश्य-है। / इसके लिये वे प्रांत भर की एंग्लो-वर्नाक्यूलर या / वर्नाक्यूलर- स्कूलों, कालेजों और यूनिवर्सिटियों की शिक्षा-प्रणाली का अध्ययन /कर- रहे है और इसके सम्बन्ध में समय-

समय पर / डाइरेक्टर-आफ-पब्लिक-इन्स्ट्रकशन, सुयोग हेड-मास्टरों तथा ट्रेनिग-कालेजो प्रिंसिपलों / से भी सलाह लेते-हैं।

देखना उन्हें यह-है कि /प्रायमरी-स्कूल, सेकेन्डरी-स्कूल मिडिल-स्कूल तथा हाईस्कूल कौन कहाँ-पर बढ़ाये , या घटाये जा-सकते-हैं जिससे की / कम-से-कम-खर्च मे अधिक-से-अधिक लड़कों को / पढ़ाया जा-सके। स्त्री शिक्षा, औद्योगिक-शिक्षा, दस्तकारी-शिक्षा तथा / शिल्प-शिक्षा की तरफ उनका विशेष ध्यान-है प्रारम्भिक-शिक्षा के साथ-ही-साथ माध्यमिक-शिक्षा को भी वह सरल / बनाना-चाहते-है।
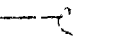
आप छोटे बच्चों की शिक्षा के लिये/किंडर-गार्टन-प्रणाली, माटसेरी-प्रणाली तथा अन्य शिक्षा-प्रणालियों का भी अध्ययन कर-रहे हैं।

आशा-की-जाती-है कि / इनके मंत्रित्वकाल मे एफ०ए०; बी०ए०, एम०ए०के / बेकार ग्रजुएटों तथा बेकार विद्यार्थी-गण को रोजगार मिल-सकेगा और / शिक्षा-माध्यम मातृ-भाषा द्वारा होकर यह देश के कोने-कोने / मे फैल-जायगा।

इसके-लिये इनको प्रांत में गुरूकुल, विद्यापीठ, विद्यालयों/छात्रालयों, पाठशालाओं, मकतबों का पाठ्यक्रम तथा पाठ्य-पुस्तकें निर्धारित-करना-/पड़ेगा और इनको धन आदि से भी सहायता देना-पडेगा / ।

अभी हाल-में ही हमारे प्रयाग विश्वविद्यालय की स्वर्ण-जयन्ती / मनाई-गयी-थी जिनमें कोर्ट द्वारा स्वीकृत उपाधियो से यूनिवर्सिटी / के चांसलर ने देश के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक,धुरंधर विद्वान तथा ' देश-सेवियों को विभूषित किया-था। २६६

कृषि

१.	जमींदार	किसान	पटवारी	तहसीलदार
२	मालगुजारी	मालगुजार	ठेकेदार	लम्बरदार
३.	नहर	आबपाशी	तालुकेदार	तकावी
४.	काश्तकार	जोताई	पैदावार	महाजन
५.	इन्जीनियर	पशुचिकित्सा	हिस्सेदार	पट्टीदार
६.	बेदखल	बकाया	वसूलयाबी	इस्तमरारी-बन्दोबस्त
७.	मौरूसी	शिकर्मी काश्तकार		हीनहयात

मालकितुल मिलकियत

८. पट्टा-कबूलियत जमाबन्दी स्याहा खतौनी
९. अवधरेंट-ऐक्ट आगरा-जमींदार-एसोसियेशन
एग्रिकलचरिस्ट-रिलीफ-ऐक्ट इनकम्बर्ड-स्टेट-ऐक्ट
१०. सहकारी शाखा-समिति कारिन्दा सजावल
खुद्-कास्त

अभ्यास—७४

अच्छे जमींदार या ताल्लुकेदार किसानों को अपनी रियाया समझते-हैं / और उनके साथ सद्-व्यवहार के साथ पेश आते-हैं। बहुत / स्थानों पर मालगुजारी वसूल करने और सरकार के यहाँ / भेजने के-लिए माल गुजार, ठकदार या नंबरदार होते-हैं।

आबपाशी के-लिय कुएँ, तालाब या नहर बनाई-जाती-हैं, जिससे / बोआई-जुताई होने पर फसल की पैदावार अच्छी-हो। फसल के अच्छे न-होने-पर अथवा सूखा या पाला पडने / पर पटवारी या तहसीलदार इसकी रिपोर्ट सरकार से करते- हैं। वहाँ से इन्हें अगली फसल जोतने बोने के लिए / तकावी मिलती-है।

काश्तकारों को जब कर्ज की आवश्यकता-पडती-है तो सहकारी समितियों या महाजनों से लेकर अपना / काम चलाते-हैं। यदि एक ही गाँव में छोटे-छोटे कई जमींदार हुए या एक ही जोत में कई / छोटे-छोटे किसान हुये तो उन्हें हिस्सेदार या पट्टीदार कहते-हैं।

जमींदार अपने लगान की वसूलयाबी कारिन्दा के द्वारा कराता-है/। वह इन वसूलयाबी का पूरा हिसाब जिन बहीखातों मे रखता है / उसे जमाबन्दी-स्याहा या खतौनी कहते-हैं। पट्टा कबूलियत / में जमींदार और किसानो के बीच की गई उन शर्तो / की लिखा पढी रहती-है जिन पर काश्तकारो को जमीन दी-जाती-है। लगान न अदा करने पर जमींदार

आगरा / के प्रांत में आगरा-टेनन्सी-एक्ट के धाराओं के अनुसार और अवध में अवध-रेन्ट-एक्ट के अनुसार किसानों पर मुकदमे/चलाकर उन्हे बेदखल कर-देते-हैं। इसलिये लगान को बकाया / कभी न-रखना चाहिए बल्कि उसे फौरन अदा-कर-देना-चाहिये।

जमीनो की किस्मों के अनुसार अलग-अलग लगान हैं, और इन्हीं लगानो के अनुसार किसानो को खुदकाश्त, शिकमी, हीनहयाती/या मौरूसी किसान कहते-हैं। साकितउल-मिलकियत किसानी का लगान / मौरूसी लगान से भी कुछ कम होता-है।

सरकार ने / इनकी मद्दद के लिये एग्रीकलचरिस्ट-रिलीफ-एक्ट एनकम्बर्ड-स्टेट्स-एक्ट / अभी पास किये-हैं।

२७४

———

स्वास्थ्य—विभाग

१. इंस्पेक्टर-जेनरल-आफ़-सिविल-हास्पिटल्स् मेडिकल-बोर्ड मेडिकल-आफ़िसर-आफ-हेल्थ मेडिकल-आफिसर
२. सिविल-सरजन डाक्टर वैद्य हकीम
३. चिकित्सा वैद्यक-चिकित्सा-प्रणाली यूनानी-चिकित्सा-प्रणाली होम्योपैथिक
४. एलोपैथिक एलोपैथिक-चिकित्सा-प्रणाली शफ़ाख़ाना अस्पताल
५. औषधालय कम्पाउन्डर दाई थर्मामीटर

अभ्यास—७५
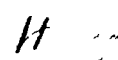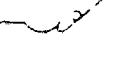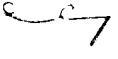
रोग चिकित्सा तथा स्वास्थ्य सुधार के बारे में देहातों की/ जो दयनीय दशा-है उसको बयान-करने-से-ही रोंगटे / खड़े-हो-जाते-हैं/ । जिस समय कोई भयानक छुतहर बीमारी / फैलाती-है तो उनको न-तो किसी किस्म की चिकित्सा-/ होती-है न कोई डाक्टर, हकीम या वैद्य ही उनके / पास फटकते हैं / । ये बेचारे देहाती बगैर किसी दवा-दारू / या सेवा-शुश्रूषा के हजारों की तादाद में भुनगों की / तरह मर जाते-हैं यद्यपि इनका इंतजाम करने के लिए / मेडिकल-बोर्ड, डायरेक्टर-जनरल-आफ-सिविल-हास्पिटल, मेडिकल-आफिसर-आफ-/हेल्थ, सिविल-सरजन आदि बडी-बडी तनखाहे पाने वाले अफसर/मोकर्रर हैं। न शफाखाने, न अस्पताल और न औषधालय कोई / भी उनके वक्त पर काम नहीं आते हैं ।
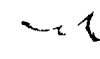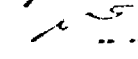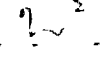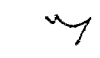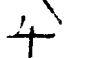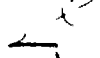
एलोपैथिक-चिकित्सा-/ प्रणाली इतनी कीमती है कि इनके लिए बेकार-है । होम्योपैथिक-/ चिकित्सा-प्रणाली यद्यपि सस्ती-है परन्तु फिर भी इस प्रणाली / की दवाइयों का फायदा करने के लिए एक बड़े अच्छे / जानकार की आवश्यकता है । सबसे अच्छी सस्ती और सुगम-प्रणाली / हमारी देशी वैद्यक-चिकित्सा-प्रणाली-है जिसे कुछ जगली पत्तियों / के काढा और रस द्वारा भयकर-से-भयंकर रोग आराम / हो-जाते-हैं ।

यदि गवर्नमेंट इन बडी-बडी तनख्वाहें पाने / वालों के रुपये को बचा कर आजकल के बेकार नवयुवकों को / साल-साल भर की वैद्यक-की-शिक्षा देकर यदि कसबे / और तहसीलो मे ही औषधालय खोलवा-दे-तो मेरी समझ / से यह मसला बडी आसानी से हल हो-सकता है । / नये वैद्यगण भी धीरे धीरे तजुर्बा को हासिल कर अच्छे / वैद्य हो-सकते-हैं । देहात वालों को तिनके का सहारा भी/ बहुत है, मरता क्या न करता । २१६

———

जेल—सेना—पुलिस

१. जेल जेलर सेंट्रलजेल ज़िलाजेल
२ डिस्ट्रिक्ट-जेल हवालात कैदी-अफसर
कन्विक्ट-अफसर
३. दण्ड-विधान रिफार्मेटरी जेल एडमनजेल
वायु सेन
४. रिजर्व सेना रिजर्व सैनिक रँगरूट
वायुयान
५. एरोप्लेन एयरफोर्स रायल एयरफोर्स
सैंडुरस्ट कालेज
६. पुलिस स्टेशन कांस्टेबिल हेड-कांस्टेबिल
कोतवाल
७. शहर-कोतवाल दोषारोपण अराजकता
नजरबंद

१.

२.

३

४.

५

६.

७

८

९.

१०.

११

१२

१३

१४

१५

१६

१७

१८.

न्याय—विभाग

१. प्रिवी-कौंसिल फेडरलकोर्ट हाई-कोर्ट जूडिशल-कमिश्नर
२. असिस्टेन्ट-जूडिशल-कमिश्नर जूडिशल-कमिश्नर-कोर्ट चीफ-जस्टिस माननीय-जज
३. न्यायाधीश सेशन जज डिस्ट्रिक्ट जज जिला जज
४. सब जज सदर-आला मुन्सिफ चीफ कोर्ट
५. रेवन्यू कोर्ट स्माल काज़ेज कोर्ट आदालत खफीफा सेटिलमेंट कमिश्नर
६. मोकदमा फौजदारी के मोकदमे दीवानी के मोकदमे माल के मोकदमे
७. जूरी असेसर ओरिजिनल अपीलेट
८. मुद्दई मुद्दालय वादी प्रतिवादी
९. अटार्नी मोहर्रिर अमीन कुर्क-अमीन
१०. पञ्च पञ्चायत फौजदारी वकील
११. प्लीडर मुख्तार एडवोकेट गवर्नमेंट-एडवोकेट
१२. असिस्टेन्ट-गवर्नमेंट-एडवोकेट बार कौंसिल बार चेम्बर न्यायालय
१३. अभियोग अभियुक्त जाब्ते दीवानी हलफ-नामा
१४. बयान-तहरीरी विचाराधीन तजवीज गवाह
१५. इजहार पंचनामा जिरह जमानतदार
१६ दस्तावेज मस्विदा अर्जी—दावा इकरारनामा
१७. ईदुलतलब-रुक्का जायदाद बार-एसोसियेशन शहादत
१८. इस्तगासा ताजीरात-हिन्द नकल बनाम

———

अभ्यास—७६

[जेल और सेना सम्बन्धी अभ्यास]

देश की शांति रक्षा के-लिए ही दण्ड-विधान तथा / पुलिस और जेलों का निर्माण किया-गया-है । कभी कभी / जब अशांति घोर-रूप धारण करती-हैं तो सेना / या फौज की आवश्यकता-पड़ती-है जो देश में शान्ति-रखने / के अलावा बाहर विदेशियों के आक्रमण से/ भी रक्षा-करती- है । आवश्यकतानुसार सेना के कई भाग किये-गये-हैं ।/ जैसे जल-सेना, स्थल सेना, वायु सेना आदि ।

वायु-सेना / की बागडोर रायल-एयर-फोर्स के अफसरों के हाथ मे हैं ।/ इसमे अनेक-प्रकार के वायुयान हैं जिन्हें हवाई-जहाज या / एरोप्लेन कहते-हैं ।

सैनिक-अफसरों की उच्च-शिक्षा-के-लिए / देहरादून मे एक कालेज स्थापित किया-गया-है जिसे / सेंडुरस्ट-कालेज कहते-हैं ।

सैनिक शिक्षा के लिए नए-नए / रगरूट भरती किये-जाते-हैं और बहुत सैनिक रिजर्व में / रखे- जाते-है जिन्हें रिजर्व-सैनिक कहते-हैं ।

दण्ड-विधान / के अनुसार गिरफ्तार किये हुए आदमियों को पहले हवालात मे/ रखते-हैं और सज़ा होने पर जिला या डिस्ट्रिक्ट-जेल, / सेन्ट्रल-जेल आदि जगहों मे सुविधानुसार भेज देते-हैं । जेल / के अफसर को जेलर कहते-हैं । वह पुराने समझदार कैदियों / से भी जेल के इन्तजाम मे मदद लेते है । जिन्हे कैदी-अफसर या कनविक्ट-अफसर कहते-हैं / ।

नए कम उम्र की बालिकाए / बालक यदि कोई जुर्म में पकड़े जाते-हैं / तो रिफार्मेटरी जेल में भेज दिये-जाते हैं पर उग्र डकैत

तथा / कालेपानी की सजा पाये हुये कैदियों को एडमन-/ जेल में भेजा जाता है।

शहर की शान्ति के-लिए/ जगह-जगह पुलिस स्टेशन बने-हैं जिनमें शहर कोतवाल, कोतवाल /तथा हेड-कासटेबिल और कासटेबिल आदि रहते हैं। २४८

अभ्यास—७७

[न्याय विभाग सम्बन्धी अभ्यास]

दीवानी और फौजदारी-के-मुकदमों का फैसला करने-के-लिए / सब-से-बडी अदालत को प्रिवी-कौंसिल कहते-हैं। नये / विधानो के पेंचीदगी को तय करने-के -लिए अभी हाल-/ मे एक कोर्ट कायम किया-गया-है जिसे फेडरल-कोर्ट/कहते-हैं। प्रिवी-कौंसिल के मोकदमे इगलैंड मे होते-हैं। भारत में सबसे-बड़ी अदालत हाई-कोर्ट की है।

जैसे/कलेक्टर आदि जब फौजदारी-के-मोकदम-करते-हैं तो मजि-स्ट्रेट/ कहलाते-हैं उसी-तरह जब डिस्ट्रिक्ट-जज फौजदारी-के-मोकदमे-करते-हैं तो सेशन-जज कहलाते-हैं। माल-के-मोकदमें/ की सबसे-बडी-अदालत बोर्ड-आफ-रेविन्यू है और/उसके अधीन डिविजनल-कमिश्नर, सेटिलमेंट-आफिसर, तहसीलदार आदि माल-के- / मोकदमे-करते-हैं। अवध-प्रांत की सब-से-बडी अदालत/को जूडिशल-कमिश्नर-कोर्ट कहते-हैं। इन न्यायाधीशों के पद /के अनुसार कहीं जुडिशियल-कमिश्नर या असि-स्टेन्ट-जुडिशियल-कमिश्नर, कहीं/कही चीफ जस्टिस या केवल माननीय जज कहते-हैं।

मुकदमें/को जो दायर-करता-है उसे मुद्दई या वादी कहते-है / और जिसके खिलाफ वह मोकदमा दायर करता-है उसे/मुद्दालेह या प्रतिवादी

कहते-हैं । जो कानून के जानकर मोवक्किलों/के तरफ से इन मोकदमों की बहस किसी कोर्ट या/ इजलास मे करते-हैं उनको पद के अनुसार प्लीडर, मुख्तार,/ एडवोकेट या अटार्नी कहते-हैं । गवर्नमेंट ने अपने मोकदमो की पैरवी या बहस करने-के-लिए जिले में गवर्नमेंट-प्लीडरों / को और हाईकोर्ट में गवर्नमेंट-एडवोकेट, असिस्टेंट-गवर्नमेंट एडवोकेट, हाईकोर्ट-प्लीडर मुकर्रर-कर-रखे-हैं ।

किसी मोकदमे को दायर-करने- के-लिए मुद्दई को न्यायालय में अरजीदावा पेश-करना-होता-है और उसके जवाब मे मुद्दालेह बयान-तहरीर पेश-करता-है, । फिर दोनो के हलफिया बयान-होते-हैं और उसके बाद मुकदमा जाब्ता दिवानी चलता-है । इद्लनलन-रुपका लेन-देन अथवा जायदाद के मुताल्लिक जा मुकदमें दायर-होते-हैं उन्हें दीवानी-के-मोकदमे कहते-हैं ।

फौजदारी-के-मोकदमा में इस्तगासा/ दायर-कर अभियुक्त के खिलाफ अभियोग लगाया-जाता-है । बहुत से जुर्मो में पुलिस को अख्तियार-होता-है कि मुजरिम को पहले ही गिरफ्तार कर-ले या किसी जमानतदार के जमानत देने पर छोड़-दे ।
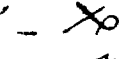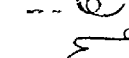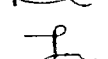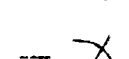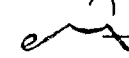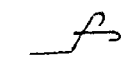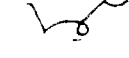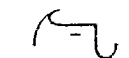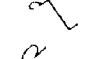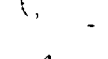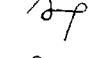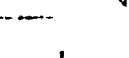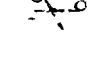
इसके-बाद ही गवाह पेश किये-जाते-हैं, इजहार लिए जाते-हैं, जिरह होती-है और बहस-मुहावसे के बाद तजवीज दी-जाती-है ।
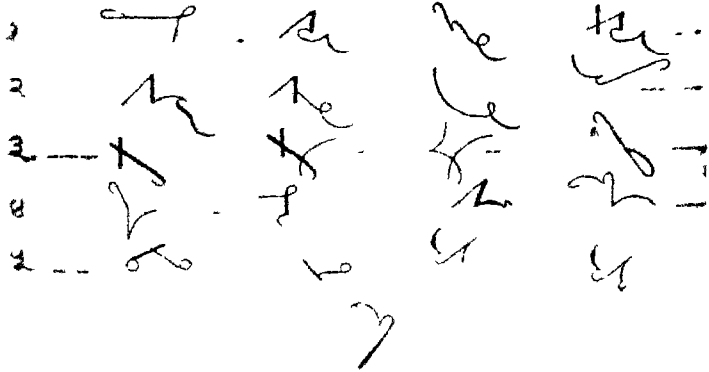
स्टाक—एक्सचेन्ज

१. स्टाक एक्सचेंज आरडिनरी शेयर प्रीफरेंस शेयर
डिफरड आरडिनरी शेयर

२. रीडीमेबिल शेयर रीडीमेबिल प्रीफरेंस शेयर
फाउन्डर्स शेयर शेयर वारन्ट

३. डिबेनचर डिबेनचर-होलडर शेयर-होलडर
प्रार्थना-पत्र

४. परपिच्वल एक्सडिवीडेन्ट रजामन्दी
मेरोटोरियम

५. हेड आफिस अपकर्ष दिवाला दिवालिया
सरचार्ज

१

२.

३

४.

५

६

७

८

९

१०

११

१२

१३

१४

१५

१६.

१७.

१८.

बैंक और कम्पनी

१. एजेन्ट सब एजेन्ट बहीखाता खाताबही
२. रोकड़ बही लेन देन हानि लाभ आँकड़ा
३. आय व्यय मुनीम नाम-लेखा विवरण-पत्र
४. बैलेन्स शीट हुँडी हुँडी पुरजा दर्शनी हुँडी
५. मुद्दती हुँडी भुगतान जमा खर्च डिप्रीसियेशन
६. मूल्याकर्ष सिङ्गिल-एन्ट्री सिस्टम डबल-एन्ट्री-सिस्टम
डबल-एन्ट्री-प्रणाली
७. कर्जदार साझीदार कैशडिस्काउन्ट बेयरर्स-चेक
८. आर्डर-चेक क्रास चेक एन्डोर्समेट सेविङ्ग-बैङ्क
९. सेविङ्ग-बैङ्क एकाउन्ट पास बुक चेक बुक
फिक्सड-डिपाजिट
१०. करेन्ट एकाउन्ट बट्टे-खाते बोनस आमदनी
११. प्रामेसरी नोट प्राइवेट कम्पनी पब्लिक कम्पनी
इनश्योरेंस कम्पनी
११. लिक्वीडेशन मेमोरेंडम मेमोरेंडम-आफ-एसोसियेशन
आर्टीकिल्स-आफ एसोसियेशन
१३. लिमिटेड लिमिटेड-कम्पनी सारटीफिकेट प्रासपेक्टस
१४. प्रमोटर्स सबस्क्राइबड-केपिटल अथराइज्ड-केपिटल
पेड-अप-केपिटल
१५. प्रीमियम बीमा पालसी रेट आफ एक्सचेन्ज
बिल आफ एक्सचेन्ज
१६. नाट निगोशियेबिल इनकम टैक्स सुपर टैक्स
एक्सेस प्राफिट टैक्स
१७. स्टैम्प-ड्यूटी लाइफ-पालसी मेडीकल एकजामिनेशन
आडिटर्स
१८. डिपार्टमेंट होल्डर मार्गेज कम्पनी

अभ्यास—७८

किसी देश की व्यापारिक उन्नति के-लिए उस देश में / सुदृढ़ और सुव्यवस्थित-बैङ्कों का होना-नितान्त आवश्यक-है। बगैर / इनके कोई-भी अच्छी कम्पनियों का खुलना मुश्किल-हो-जाता-है।/

बैङ्क के सब-से-बड़े अफसर को एजेंट और,/ संचालकों को डायरेक्टर्स-कहते-हैं। इन बैंकों की अनेकानेक शाखाएँ/और उप-शाखाएँ भी-होती-हैं जो सब-एजेन्टों के अधीन होती-हैं। इन बैङ्कों-द्वारा जन-साधारण, आम-पब्लिक,/ व्यापारियों या रोजगारियों का लेन-देन होता-है। व्यापारी-लोग, अपने हिसाब को सुचारुरूप से रखने-के लिये कम-से-कम/ रोकड़-बही और खाते-बही तो जरूर-ही-रखते- हैं।' इनके मुनीम-लोग तिमाही, छमाही या सालाना आय-व्यय-के आँकड़ों को जोड़-घटाकर हानि-लाभ, विवरण-पत्र जिसे बैलंस-शीट भी कहते-हैं तैयार-करते-हैं।

नगद के अलावा एक-दूसरे का भुगतान वे हुन्डी या चेक के जरिये से भी करते-हैं। यह हुन्डियाँ और चेक भी' कई-प्रकार के होते-हैं जैसे दर्शनी-हुन्डी, मुद्दती हुन्डी।/ दर्शनी-हुन्डी जिसके ऊपर की-जाती-है उसको-उस हुन्डी,/ के-दिखाते ही भुगतान, देना-पड़ता-है। इन हुन्डी पुरजों, के काम में लेन-देन में बड़ी सुविधा-होती-है / क्योंकि अक्सर रुपये को इधर-उधर न भेजकर जमाखर्च से,/काम चल-जाता-है। इसी-तरह चेक से लेन-देन होता-है। बैङ्क बेयरर्स-चेक को पाते-ही ले-जाने-वाले-को बगैर कोई पूछताछ किये ही रुपया दे-देती-है/ और सिर्फ उसके रुपया पाने का दस्तखत कराती-है /। आर्डर चेक का रुपया बगैर आदमी की ठीक शिनाख्त किये-हुए / नहीं-देती। क्रास-चेक का रुपया तो सिर्फ हिसाब/ में जमा-कर-लेती-है पर देती नहीं। उस रुपये/ को निकालने-के-लिये आपको अपने नाम से दोबारा चेक / काटना

पड़ेगा। एक आदमी की काटी हुई चेक एन्डोर्समेंट करके/ दूसरे के नाम की-जा-सकती-है।

बैङ्कों में एकाउन्ट/कई-तरह-से रक्खे जाते-हैं, कहीं सिंगल-इन्ट्री-सिस्टम-से-रखे जाते-हैं कहीं डबल-इन्ट्री-सिस्टम से।/ डबल-इन्ट्री-प्रणाली में समय तो कुछ अधिक-लगता-है पर/ यह सिंगिल-इन्ट्री-प्रणाली से अधिक काम की होती-है। /

बैङ्क में लेन-देन के अलावा लोगों का रुपया भी /सुरक्षित रहता है। इसके लिये लोग बैङ्क में अलग-अलग /एकाउन्ट-खोलते-है जैसे सेविंग-बैंक्स-एकाउन्ट, करन्ट-एकाउन्ट, फिक्स-डिपाजिट-एकाउन्ट/आदि। इस बात के सबूत के-लिए कि/उनका रुपया बैङ्क में जमा है, बैङ्क उनको एक किताब/ देती है जिसे पास-बुक कहते-है।

३६६

अभ्यास—७६

किसी पब्लिक-लिमिटेड-कम्पनी को खोलने के लिये रजिस्ट्रार के / दफ्तर में मेमोरंड-आफ-एसोसियेशन और आर्टिकल्स-आफ-एसोसियेशन दाखिल / करना-पड़ता-है और उसके मंजूर होने पर पब्लिक से / उसके शेयर खरीदने को कहा-जाता-है। कम्पनी खोलने वालों/को प्रोमोटर्स और स चालकों को डायरेक्टर्स कहते-हैं। जितने/ रुपए-तक यह अपने शेयरों बेच-सकती है उसे अथराइज्ड- केपिटल, / जितने रुपयों का पब्लिक-खरीदती-है उसे सब्सक्राइब्ड-केपिटल / और खरीदे शेयरों का जितना रुपया वह कम्पनी को दे / चुकती-है उसे पेड-अप-केपिटल कहते है।

कम्पनी के / प्रास्पेक्टस, आमदनी का जमाखर्च, बैलेंस-शीट तथा बोनस आदि /की रकम को देख-कर यह-कहा-जा-सकता-है/ कि लेन-देन के मामलों में कम्पनी की क्या हालत-है ।/ उसकी फाइनेन्शल कन्डीशन का बगैर पूरा हाल जाने हुए /रुपया न जमा करना चाहिये क्योंकि अक्सर ये कम्पनियाँ टूट/जाती-हैं और लिक्विडेशन मे ले-ली-जाती है । इन/ कम्पनियों की आमदनी पर इनकम-टैक्स, सुपर-टैक्स, और कभी कभी/ एक्सेस-प्राफिट टैक्स भी देना-पड़ता-है ।

जान-बीमा मेडिकल-एक्जामिनेशन / के पश्चात् किसी इंश्योरेंस कम्पनियों मे करा कर / लाइफ-पालसी ले-सकते-है उसके लिये प्रीमियम देना पडेगा । / १६०

अभ्यास—८०

[स्टाक-एक्सचेंज सम्बन्धी अभ्यास]

न्यूयार्क १६ दिसम्बर । यहाँ के शेयर मार्केटो में शेयर की / बिक्री की अधिकता के कारण आज ऐसी हलचल देखने मे आई जैसी सन् १६२६ के बाद कभी नहीं देखी-/गई-थी । बाजार खुलने के एक घंटे के अन्दर बाइस/लाख पचास हजार शेयर बिक गये और उनकी कीमत १०/डालर कम हो गई । इनमे आर्डिनरी-शेयर, प्रिफरेन्स-शेयर, रिडीमेबिल-/शेयर तथा फौडर्स-शेयर आदि सभी किस्म के शेयर थे ।/ डिबेंचर-होल्डर तथा शेयर-होल्डर अपने अपने डिबेंचरों, शेयर-वारन्ट / शेयर तथा शेयरों के प्रार्थना-पत्रों लिए हुए घुसे / पडते थे । जो शेयर-होल्डर नजर आता था वह बेचता-ही/नजर आता था । न वह यह देखता था कि/शेयर परपीचुअल-है या एक्स-डिवीडेन्ट-है, उसे तो बस / बेचने ही से मतलब था । ये लोग शेयर बेचने के / लिए इतने उत्सुक थे कि उनके चिल्लाहट के कारण बडा / ही हल्ला मचा और काम करने वाले क्लर्कों की नाक / में

दम-हो-गया। गत अगस्त तक जो कमरे / खाली- पड़े-रहते-थे उनमें इतनी भीड़ हो-गई-थी कि / लोगों को पाँव धरने के-लिए जगह मिलना कठिन / हो-गया-था। शेयर बेचने-वालों की उत्सुकता इसलिए थी कि प्रत्येक अपने शेयर का मूल्य घटने के पहले ही उसे/बेच-कर अपनी हानि दूसरे के मत्थे टालने के-लिए/उत्सुक था।

पाठकों को याद होगा कि सन् १६२६ में/भी न्यूयार्क की वालस्ट्रीट में शेयरों मे इसी-प्रकार/की हल-चल हुई थी, जिसके बाद कि ससार में/ आर्थिक संकट की लहर फैल-गई-थी, और सभी चीजों / का मूल्य एका-एक गिर-गया-था। इस साल भी बाजार / खुलने के पहले दलालों की भीड उसके बाहर खडी-हुई-थी/जो कि शेयरों के विक्री के आर्डर के बडल-के-बडल / लिए-हुए-थे। बाजार खुलते ही उसमें ऐसी / व्यवस्था फैल-गई कि मेरिटोरियम के-लिए सरकार से चिल्लाहट/होने लगी।

बहुत तो दिवाला निकल कर दिवालिया हो-गये।/ ३००

१.

२.

३.

४.

५.

६.

७.

८.

९.

१०.

११.

१२.

१३.

१४.

१५.

१६.

१७.

किस्म—कागज़ात

१.	कबूलियत	दस्तावेज़	मुख्तारनामा	वयनामा
२.	रेहन नामा	सरखत	किराया नामा	जमानत नामा
३	इकरार नामा	फारखती	हिबा नामा	वसीयत नामा
४	दखल नामा		वकालत नामा	हलफ नामा
				वारंट गिरफ्तारी
५	दरखास्त इनसालवेन्सी			सुलह नामा
	सार्टिफिकेट मेहनताना			इजाजत नामा
६.	जौजे	साकिन	मजकूर	अदम मौजूदगी
७.	पैरवी	सनद	अलमरकूम	हक-हकूक
८.	मिलकियत	मौसूफ	मुवाविज़ा	वारिसान
६.	कायम मुकाम	बैकामिल	नाजायज	बावजूद
१०	शिरकत	मदाखलत	मुनदरजे	मरहूना
११.	गैर मरहूना	मनकूला	गैर मनकूला	मकफूला
१२	इन्तकाम	बद-दयन्ती	जरिया	तकमीला
१३.	इन्तजाम	तसदीक	दस्तबरदार	मुतालिक
१४.	इजराय डिगरी	डिगरीदार	मुबलिग	मदियून
१५.	मोअरिखा	मिनमुकिर	तमस्सुख	मुआइना
१६	फरीकैन	वाजिबुल	मिनजानिब	अहलकार
१७.	कैफियत	तलबाना	वल्द	अर्जी दावा

अभ्यास—८१

अदालतों में जो आमतौर से चालू कागजात-हैं उनके आखीर / में ज्यादातर "नाम" का लफ्ज लगा रहता-है जैसे मुख्तारनामा, / बयनामा, रेहननामा, किरायानामा, जमानतनामा वगैरा । इकरारनामा, हिबनामा, दखलनामा, वकालतनामा भी / ऐसे ही कामजातों के नाम-हैं ।

अदालत-में जब कोई / बात हलफिया बयान-की-जाती-है तो वह जिस अरजी / में लिखी-जाती-है उसे हलफनामा कहते-हैं । मुख्तारनामा / और वकालत-नामा इस बात के सबूत हैं कि मुद्दई / या मुद्दालेह ने फलाँ वकील या मुख्तार को अपने मोकदमें / के लिए मोकर्रर किया-है ।

मकान या किसी चीज को / किराये पर लेने से किरायानामा या सरखत, किसी की जमानत / लेने पर जमानतनामा, किसी बात की शर्त-व-इकरार-करने/ पर इकरारनामा, किसी जायदाद-पर-कब्जा-दखल लेने-या-देने /पर दखल-नामा लिखा-जाता-है ।

इसी-तरह किसी चीज को/ कहीं गिरवीं या रेहन-रखने-पर रेहननामा, किसी चीज / को किसी-शर्तों-या शरायत पर बेचने या बय करने / को बयनामा, किसी शख्स को उसकी फरमाबरदारी व दूसरी खिदमतों/ के लिए बखुशी किसी चीज बख्स देने से हिबनामा / और मरते वक्त किसी चीज को अपने नाते व रिस्तेदारों / या दूसरे किसी फरमाबरदार नौकर में बाँटने मे वसीयतनामा लिखा/- जाता-है ।

जमींदार व किसानों के बीच जिन शर्तों पर/जमीन ली-या-दी-जाती-है उसका जिक्र पट्टा-कबूलियत / रहता है ।

किसी शख्स की डिग्री की अदायगी न-करने- /पर वारन्ट-गिरफ्तारी निकाला-जा-सकती-है । इस गिरफ्तार शख्स / यानी मदियून को दर-ख्वास्त-इनसालवेंसी देने का अख्तियार होता -है । इसके / लिये वकीलों को करना-पड़ता-है और वे अपनी सार्टिफिकेट- / मेहनताना कोर्ट में दायर करते-हैं ।

नीचे एक रेहननामा का / खाका दिया-जाता-है । इस दस्तावेज की तहार को देखिये/ ।

रेहनामा

मैं, मुसम्मात चन्दो देवी, जौजे देवी प्रसाद, वल्द लाला गुरदयाल / सिंह कौम कायस्थ साकिन मौजे रसूलपुर, जिला जौनपुर की हूँ । /

जो कि मेरे जिम्मे एक किता डिग्री तायदादी मुबलिग रुपया / ५४२) दुबे महाजन साकिन मौजा मैनपुर की अदालत मंडियाहू मुन्सिफी/ से हुई है कि जिसका रुपया बावजूद गुजार जाने किश्त/डिग्री के भी अब तक न अदा हुआ और अब / उसकी तैदाद मै-सूद के १०६१ ।।।≋) पहुँची-है और महाजन / डिग्रीयों के इजरा-कराने-पर मुस्तैद-हैं कि जिससे सरासर / ख्वारी हम लोगों की होगी और इसके सिवाय और भी चन्द / जरूरी खर्च पेश-हैं, इसलिये बाबू गोकुलचन्द साहब महाजन-व- / रईस शहर बनारस के पास हाजिर हो-कर अपना हिस्सा / २ आना ४ पाई मौजा रसूलपुर परगना मंडियाहू जिला / जौनपुर को मैडीह-व-डाबर सीर व-सायर व बागात /व पक्के कुआँ वगैरह हकूक जिमींदारी कि जिस-पर हम/ लोग बिना शिरकत किसी दूसरे के और बिना मदाखलत किसी-शख्स के/ काबिज-व-दाखिल हैं मकफूल करके १२००) बारह सौ रुपया कि जिसका आधा ६००) छः सौ रुपया होता है / कर्जा बहिसाब सूद

चौदह आने सैकड़े माहवारी के इस / तफसील से लिया कि १०६३॥=) वास्ते अदा करने डिग्री भीखा / दुबे डिग्रीदार के महाजन मौसूफ के पास छोड़ दिया कि / वह डिग्रियात नम्बरी ५५७ मर्कूमा १७ जुलाई सन् १८८८ई० / के नम्बरी ५६६ मर्कूमा ४ अगस्त सन् १८८८ ई० नम्बरी / ५४४ मर्कूमा १६ जुलाई सन् १८८८ ई० व नम्बरी ५४३ / मर्कूमा १६ जुलाई सन् १८८८ ई० को अदा-करके और / वसूली उसकी पुश्त डिग्रियात पर लिखा-कर वापस ले लेवें/ और एक सौ छ. रुपया एक आना नकद ले- / कर अपने खर्च मे लाये। अब कुछ भी जिम्मे महाजन / के बाकी नहीं। इसलिये यह दस्तावेज लिख कर इकरार करते हैं / व लिख देते-हैं कि सूद छमाही महाजन मौसूफ / को अदा-करके रसीद उसकी दस्तखती महाजन मौसूफ ले-लिया- / करेंगे और मीआद पाँच बरस मे यानी जेठी पूर्णमासी सन् , १३०१ फसली को असिल १२००) रुपया व जिस कदर सूद /अदा-से बाकी रह-जायगा एक मुश्त अदा व बेबाक / करके दस्तावेज को भरपाई लिखा-कर वापस ले-लेंगे सिवाय / इन दो सूरतो के कोई उज्र बाबत वसूली सूद या / असिल के काबिल मंजूरी अदालत न होगा अगर सूद छमाही / अदा न-हो तो बाद गुजरने छमाही के वह रुपया / भी असिल मे जोड कर उस पर सूद दर ॥=)। माहवारी के महाजन मौसूफ को अदा करेंगे और अगर दो-छमाही/ गुजर जाय और महाजन को रुपया अदा न हो-तो / महाजन को अख्तियार होगा कि बिना गुजरने मीआद मुन्दरजे / दस्तावेज के कुल रुपया असिल-मै-सूद नालिश करके हम / लोगों की जात-व-जायदाद मरहूना व गैर मरहूना व / मनकूला-व-गैर-मनकूला से वसूल कर लेवे और मिल्कियत / मकफूला हर-तरह-पर पाक-व-साफ व बे-खलिश / हैं कहीं दूसरी जगह रेहन-या-बय या किसी किस्म / से मुन्तकिल नहीं है अगर किसी किस्म का इन्तकाल जाहिर / होगा तो हम लोग पाबन्द मवाखिजा कानून ताजीरात-हिन्द के / होंगे और महाजन मौसूफ को अख्तियार वसूल कुल-रुपया असिल/- व-सूद का बिना इन्तजार

गुजारने मीआद के होगा और / महाजन मौसूफ के देन अदा करने तक जायदाद मकफूला / को कहीं रेहन या किसी किस्म का इन्तकाल / न करेंगे अगर करें तो झूठा व नाजायज़ ठहरे / अगर कुल रुपया असिल-मय-सूद अन्दर मीयाद के ही / अदा कर देवें तो महाजन को वाजिब होगा कि उसको / लेकर इलाके को फकरेहन-कर-दें और दस्तावेज वापस / कर दें और अगर वादा-पर कुल रुपया या थोड़ा/रुपया भी अदा होने से बकी रह-जाय तो महाजन / को अख्तियार होगा कि नालिश नम्बरी करके कुल रुपया अपना / हम लोगों को जात व नीलाम-जायजाद मकफूला-व-गैर-मकफूला/वा मनकूला-व-गैर-मनकूला से वसूल कर लें । इसमे हमको हमारे वारिसान कायम मुकामान को कोई उज्र न / होगा । आराजियान सीर जो इस दस्तावेज में रेहन होती हैं /उनके नम्बर इसके नीचे लिख-देते-हैं और यह भी / एकरार खास-करते-हैं कि बाद गुजर जाने मीआद के भी कुल मुतालबा वसूल होने तक सूद रूपये का ।।=)/ सैकडे माहवारी बिना उज्र अदा करेंगे और निस्बत सूद के किसी किस्म का उज्र न-करेंगे इसलिए यह दस्तावेज़ बतौर-/ रेहन-नामा के के लिख दिया कि वक्त पर काम आवे/व सनद-रहे फक़त ।

६४४

अभ्यास—८२

कुछ व्यवहारिक पत्र

(१)

इलाहाबाद

ता० २१ जनवरी १६३८

महाशय जी,

मैंने आपके 'स सार चक्र' नाम की पुस्तकों का विज्ञापन आज के 'लीडर' अखबार में देखा है। यदि ये पुस्तक आप २। में दे सकें तो कम से कम ५ पुस्तकें तुरन्त ही वी०पी० करके पोस्ट आफिस द्वारा भेजने- की कृपा करें। वी०पी० आते ही छुड़ा ली जायगी।

भवदीय

(२)

ससार चक्र कार्यालय,

मथुरा,।

ता० ५-२-३८

श्री महाशय जी,

आपका कृपा पत्र-मिला उत्तर-में-निवेदन है कि आप के आर्डर के अनुसार आज दिन 'स सार चक्र' नाम की पुस्तक की ५ प्रतिया डाक वी०पी० द्वारा भेज दी गई हैं। इनवाइस भेजी जा रही हैं। आशा है पुस्तकें पहुँचते ही आप उसे छुड़ा लेंगे।

भवदीय

—:०—

इनके अलावा नीचे के वाक्यांशों को लिखो— पत्रादि के व्यवहार में अधिक काम आते हैं।

१. श्रीमान्, मान्यवर, पूज्यवर, महामान्यवर, महोदय, महाशय, श्रद्धास्पद, आयुष्मान, चिरंजीव, प्रिय-महाशय।
२. आप का-दास, आपका आज्ञाकारी, भवदीय, आपका-प्रिय-मित्र, तुम्हारा-एक-मात्र, आपका-हितचिन्तक, कृपाकांक्षी, दर्शनाभिलाषी।
३. तुम्हारा पत्र-कल-शाम-की-डाक-से मिला।
४. कृपा-पत्र-मिला, आपका-पत्र-मिला, तुम्हारा-पत्र मिला,
५. पत्र-मिला, उत्तर-मे-निवेदन-है।
६. बहुत-दिनो-से आपका पत्र नहीं-आया क्या-कारण है ?
७. पत्र-मिला पढ़कर-हर्ष-हुआ।
८. यहाँ-सब-कुशल-है तुम्हारा-कुशलक्षेम-ईश्वर-से-चाहता-हूँ।
९. उत्तर शीघ्रातिशीघ्र भेजिए।
१०. उत्तर लौटती-डाक-से-भेजिए।
११. मैंने आपको कई-पत्र लिखे पर उत्तर-एक-का-भी-न-मिला।
१२. मुझे इस-बात-का-हार्दिक-दुःख-है कि मै आपके पत्रों का यथा-समय उत्तर-न-दे सका।
१३. योग्य-सेवा-को लिखियेगा।
१४. आपको यह-जान-कर-प्रसन्नता-होगी।
१५. परीक्षा मे उत्तीर्ण होने-के-लिये मैं आपको बधाई देता हूँ।
१६. आपको यह-सूचना देते-हुये-मुझे कष्ट-हो-रहा-है।
१७. आशा है ऐसा-लिखने-के-लिए आप-मुझे-क्षमा करेंगे।
१८. मेरे योग्य-सेवा-कार्य-सदैव-लिखते-रहियेगा।
१९. शेष-मिलने-पर, शेष-फिर कभी, आज-यहीं-तक।
२०. अंत में आपसे इतना-ही-निवेदन है।

१

२

३

४

५

६

७

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

नेताओं तथा नगर व प्रान्तों के नाम

१. महात्मा गाँधी महात्माजी जवाहरलाल नेहरू सुभाषचन्द्र बोस
२. मदनमोहन-मालवीय रवीन्द्रनाथ-टैगोर राजेन्द्रप्रसाद सरदार वल्लभ भाई पटेल
३ अब्दुल गफ्फार खाँ पुरुषोत्तमदास टंडन आचार्य नारेन्द्र देव अब्दुल कलाम आजाद
४. तेज बहादुर सप्रू चिंतामनी श्रीनिवास शास्त्री हृदय नाथ कुञ्जरू
५. गोविंद वल्लभ पंत श्रीकृष्ण राजगोपालाचार्य विश्वनाथदास
६. सत्यमूर्ति भूलाभाई देसाई न. बी. खरे बी जी. खेर
७. मोहम्मद अली जिन्ना शौकत अली भाई परमानन्द बैरिस्टर सावरकर

---

१. रायबहादुर रायसाहब राजा-साहब खाँ-बहादुर डाक्टर
२. माननीय श्री पंडित बाबू मौलाना
३. मिस्टर मिसेज मेसर्स सर राइट आनरेबिल
४. शेगाँव वर्धा इलाहाबाद कानपुर बनारस
५. कलकत्ता बम्बई मदरास लखनऊ लाहौर
६. देहली अलीगढ आगरा देहरादून नैनीताल
७. अजमेर पटना गया पेशावर अमृतसर
८. नागपुर बरेली मोगलसराय जबलपुर मुरादाबाद
९. संयुक्तप्रात मध्यप्रांत सेन्ट्रल-इंडिया मध्यप्रदेश पंजाब
१०. ओडिसा शिमला हैदराबाद मैसूर करांची
११. सिंध बङ्गाल बिहार फ्रांटियर-प्राविंस

नोट—किसी सज्जन तथा शहर के नाम आदि को संकेत लिपी में न लिखकर नागरी लिपि मे इशारे मात्र से लिख लेना चाहिए पर बहुत प्रचलित नेताओं तथा नगरो के नाम यथा नियम संकेत-लिपि ही मे लिखने मे सुविधा होगी। इनके अलावा और नये २ विभाग के प्रचलित शब्दों के संकेत स्वयं विद्यार्थीगण बनाकर अभ्यास कर सकते हैं।

अभ्यास—८३

कुछ दिन पहले श्री भूलाभाई-देसाई ने फेडरेशन के बाबत / राय-प्रकट-करते-हुए-कहा-है कि वर्तमान अन्तर्राष्टीय-परिस्थिति / को ध्यान-में रखते-हुये ब्रिटिश पार्लियामेण्ट हिन्दुस्तानियों की / इच्छा के खिलाफ फेडरेशन को जबरदस्ती नही लाद-सकती। इस / समय म भारतीय रजवाड़ों को देश की भलाई के-लिये / अपने आप फेडरेशन म शरीक होने से इन्कार-कर-देना /-चाहिए क्योंकि अब तक कांग्रेस इसका सर्वथा विरोध कर-रहा-है। नही-कहा-जा-सकता-कि फरवरी के प्रथम सप्ताह/में जो महत्वपूर्ण बैठक होगी उसमे कांग्रेस-वर्किंग-कमेटी-फेडरेशन/के-सम्बन्ध-मे किस नीति को अनुसरण करेगा।

इस अवसर-/पर पंडित-जवाहरलाल-नेहरू, मिसेज सरोजनी नायडू, भावी राष्ट्रपति / श्री सुभाष-चन्द्र-बोस, बाबू-राजेन्द्र-प्रसाद, सरदार-वल्लभ-भाई-पटेल, मौलाना-अबुल-कलाम-आजाद, खॉ-अब्दुल-गफ्फार-खॉ, आचार्य-कृपलानी, आचार्य /-नरेन्द्र-देव, स्वामीसहजानन्द-सरस्वती, श्री-जय प्रकाश-नारायण आदि / वार्धा मे सेठ जमुनालाल-बजाज के निवास-स्थान पर संभवत /३ तारीख तक पहुँच-जायगे। महात्मा-गांधी जी

भी इस समय सेगाँव से वर्धा आवेंगे। चूँकि इस बैठक का /एक मुख्य विषय 'फेडरेशन' होगा, इससे आशा-की-जाती-है/कि इसमें मद्रास के प्रधान मंत्री श्री राजगोपालाचार्य, माननीय गोविन्द-/वल्लभ-पन्त,श्री बाबू श्रीकृष्णसिंह, डाक्टर न० बी० खरे, श्री विश्व नाथ-दास, मिस्टर मोहन लाल सक्सेना, सेठ / गोविन्द-दास आदि मुख्य-मुख्य कांग्रेसी कार्य-कर्ता भी आमंत्रित/किये-जायँगे। खेद-है-कि भिन्न-भिन्न कारणों से श्री/मदनमोहन मालवीय, श्री सत्यमूर्ति, श्री बाबू पुरुषोत्तमदास-टण्डन, हृदयनाथ-कुँजरू/इसमें भाग न-ले-सकेंगे। २४५

(२)

(अ) मिस्टर मोहम्मद अली जिन्ना के भाषण का प्रत्युत्तर देते हुये/ एक कांग्रेसी प्रमुख नेता ने लिखा था कि राष्ट्र निर्माण के लिए आजकल भारतवर्ष को महात्माजी और पं० जवाहरलाल चाहिये/न कि भाई परमानन्द, बैरिस्टर सावरकर, मोहम्मद-अली-जिन्ना और / शौकत-अली।

(ब) दुख-का-विषय-है-कि तुच्छ मतभेद के कारण , राइट-आनरेबिल सर तेजबहादुर-सप्रू, डाक्टर सी-वाई-चिन्तामणि/, और श्रीनिवास-शास्त्री ऐसे मननशील और कुशल राजनीतिज्ञ कांग्रेस के/बाहर हैं।

(स) बम्बई और यू० पी० की सरकारों ने प्रस्ताव-,पास किया है कि में भविष्य किसी को रायबहादुर , , राजासाहब, रायसाहब, खान-बहादुर, खान-साहेब, सर इत्यादि के खिताब/न दिये जाँय। १०३

१ - २.

३ - ४

५

६

८

९ १०

११ १२

१३.

१४

१५ - १६

१७

१८

१९

२०

२१

२२

२३

२४ २५

२६ २७

२८

एक ही वर्ण से उच्चारण किये जाने वाले शब्दों के विभिन्न सङ्केत

१. स्त्री शत्र २. अनुसार नज़र

३ बारबार बराबर बारंबार

४. भूषण भाषण आभूषण भीषण

५. उपेक्षा पक्ष रक्षा अपेक्षा प्रतीक्षा प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष

६. बालक बालिका ७. कोतवाल कोतवाली

८. उपयुक्त उपर्युक्त उपरोक्त उपरान्त

९. हाकिम हुक्म हकीम १०. प्रात पूर्णत

११ अधिक धोका धक्का १२. छात्र क्षेत्र

१३. जमींदार जिम्मेदार ज़मानतदार

१४. अकसर कसर कसीर कसूर केसर

१५. इश्तहार इज़हार असेसर १६. स्टैम्प स्तम्भ

१७. विरोध विरुद्ध व्यर्थ

१८ पश्चात् पश्चिम पश्चात्ताप पाश्चात्य

१९. साहित्य सहायता सहित साहित्यिक

२०. मुल्क मुलाकात मालिक मालिका

२१. इनकार नौकर नौकरी नगर नागरिक

२२. शस्त्र शास्त्र सशस्त्र शास्त्रार्थ

२३. बजाय बियाज विजय वाजिब गैरवाजिब

२४ तत्पर तात्पर्य २५ निरबल आनरेबिल

२६. स्कूल शक्ल साइकिल २७ शहादत सहयोग

२८ युग योग्य अयोग्य योग्यता उपयोग

नोट—इसके अलावा अब ऐसे ही शब्द आवें जिसके पढ़ने में असुविधा हो तो विद्यार्थियों को चाहिये कि वे एक ही वर्णों से उच्चारण होने वाले शब्दों के अलग-अलग संकेतों को बनाका नोटकर लें और फिर उन्हीं संकेतों द्वारा उन शब्दों को लिखा करे। ऐसा करने से पढ़ने की कठिनाई दूर हो जायगी। ऐसे शब्दों का वृहत् सूची 'हिन्दी संकेत लिपि सार' नामक पुस्तक मे दी हुई है।

अभ्यास—८४

(अ) गत वर्ष गर्मी की छुट्टियों मे मैंने भारतव्यापी भ्रमण किया-/ था और बहुत से मुख्य मुख्य स्थानों को देखा। उनमें/से कुछ-ये है—बम्बई, कराची अजमेर, अलीगढ, लाहौर,/अमृतसर, नैनीताल, शिमला, पेशावर, देहरादून, दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद, मुगलसराय, बनारस,/पटना, कलकत्ता, जबलपुर, नागपुर, हैदराबाद, मैसूर, पूना, लखनऊ, कानपुर, बरैली,/ मुरादाबाद, अजंता और अलमौरा की गुफायें और मद्रास।

(ब) इस समय/११ प्रान्तों में से बम्बई-प्रान्त, सयुक्त-प्रांत, मध्य-प्रान्त, मद्रास-प्रान्त, बिहार-प्रान्त, उड़ीसा-प्रांन्त और फ्रान्टियर-प्राविन्सेस / यानी सीमाप्रान्त मे कांग्रेसी-मन्त्रि मण्डल बने हैं परन्तु कांग्रेस का/ बहुमत न-होने-से बाकी के चार प्रान्त यानी बगाल /पञ्जाब, आसाम और सिंध में गैर-कांग्रेसी मंत्रिमण्डल ही कायम-/ हुये है। ११२

अभ्यास – ८५

(अ) पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अस्थाई सरकार के उप-अध्यक्ष तथा / प्रधान-मन्त्री की हैसियत से जो भाषण ब्राडकास्ट-किया-है/उसमें देश-विदेश की अनेक समस्याओं का उल्लेख-किया-/गया-है और बतलाया-गया-है कि राष्ट्रीय-सरकार की उनके सम्बन्ध/में क्या-नीति-होगी। नेहरू जी अन्तर्राष्ट्रीय विषयों के/प्रकाण्डपडित हैं और नई सरकार के अन्तर्गत परराष्ट्र-मन्त्री भी- है / अतः यह उचित-ही-था कि अन्तर्राष्ट्रीय संगठन तथा/विश्व-शाति के सम्बन्ध मे वे स्पष्टरूप से स्वाधीन भारत/ का दृष्टिकोण प्रकट-कर-दें। उन्होंने घोषित-किया-है कि स्वतन्त्र/राष्ट्र की हैसियत से हम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेंगे, /हम अपनी स्वतत्र नीति ग्रहण करेंगे, किसी दूसरे राष्ट्र के/हाथ की कठपुतली होकर काम-नहीं-करेंगे। उन्होंने यह-भी/कहा-है-कि हम गुट बन्दी और दलबन्दी से अपने/को अलग-रक्खेंगे/ उस दलबन्दी से जिसके कारण अतीत में/ विश्व युद्ध हुए हैं और जो-पहले-से भी-बडे / पैमाने पर पुनः हमें विनाश की ओर ले-जा-सकती-है।/ शाति और स्वतंत्रता दोनों अविभाज्य-हैं। किसी एक देश के/लोगों को स्वतंत्रता से वंचित रखने से दूसरे देश की/स्वधीनता खतरे मे-पड-सकती-है और फिर संघर्ष एवं/युद्ध खड़ा हो-सकता-है। अतः स्वतंत्रता भारत सभी देशों/को स्वाधीन बनाने-का पक्ष-लेगा। नेहरू जी ने स्पष्ट/ शब्दों में घोषित-किया-है-कि हम परतंत्र देशों तथा/उपनिवेशों की स्वधीनता मे विशेषरूप-से-दिलचस्पी लेंगे। सभी जातियों / को जीवन में उन्नति करने के लिए समान सुविधायें/प्राप्त-होनी-चाहिये। जातीय/श्रेष्ठता के सिद्धान्त को भारत कभी / स्वीकार-नहीं-कर-सकता चाहे जिस रूप में वह लागू हो/किया-जाता हो। २६३

(ब) भारतवर्ष में अस्थाई राष्ट्रीय-सरकार यानी इन्ट्रीम-गवर्नमेंट की स्थापना-होते -ही/ और वैदेशिक विभाग नेहरूजी जैसे सर्वमान्य नेता के/ हाथों मे आते-ही हमारे देश ने संसार के अन्य / देशों से स्वतन्त्र सम्बन्ध

स्थापित करने की ओर-ध्यान-दिया-है।/ अब यह-आवश्यक-नहीं-है-कि भारत भी संसार / के किसी देश से ठीक वैसा ही सम्बन्ध-रक्खे जैसा / कि उसके और ब्रिटेन के बीच हो। भारत न केवल / ब्रिटेन और रूस से बल्कि ऐसे सभी देशों से मित्रता /पूर्ण सम्बन्ध-चाहता-है जो संसार में युद्ध और रक्तपात / नहीं बल्कि शांति और सन्तोष का साम्राज्य स्थापित होते/ देखना-चाहते-है ।

आज विश्वशांति के लिये यूरोप तथा अमेरिका के / राजनीतिज्ञ जिस दृष्टिकोण से प्रभावित-हैं उसमें तथा नेहरू-जी/ के दृष्टिकोण में महान अन्तर- है। नेहरू जी ने/ बता-दिया-है कि स्वाधीन भारत यूरप तथा अमेरिका के/वर्तमान राजनीतिज्ञों की कूटनीति सहन नहीं करेगा वह साम्राज्यशाही का/घोर विरोध करेगा और सच्चे अर्थों में विश्वशांति स्थापित-करने-के-लिये / दूसरे राष्ट्रों से मिल-कर-काम-करनेके-लिये-तैयार-होगा।/ वह ब्रिटेन, अमेरिका और रूस तीनों से / घनिष्ठता और मैत्री/ भाव बढाएगा लेकिन एशियाई देशों से – विशेषकर / पास पड़ोस के देशों से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित-करेगा। हमारा / ख्याल है कि अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के सम्बन्ध में/ पं० नेहरू ने भारत की ओर से जो दृष्टिकोण प्रकट-किया-है/ वह राष्ट्रवादी भारत का लोकमत प्रकट-करता-है और वह विश्वास-उत्पन्न-करता-है कि जिस समय भारत इस दृष्टिकोण को लेकर शांति सम्मेलन अथवा अन्य किसी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन/ में भाग लेगा तो दूसरे देशों के राजनीतिज्ञों पर/ उसका काफी प्रभाव पड़ेगा और वे मौजूदा रवैया छोड़ कर /सच्ची शांति स्थापित करने की दिशा में अग्रसर- होंगे। २७६

———

अभ्यास—८६

(अ) नेता जी श्री-सुभाषचन्द्र-बोस ने आजाद-हिंद-फौज या / इंडियन नेशनल आर्मी का निर्माण करके आजादी की जो तीव्र / लहर लहरा दी है वह केवल भारतवर्ष के लिए ही / नहीं बल्कि संसार की समस्त विजित-देशो की प्रजा में / नवीनतम स्फूर्ति और जागृति-पैदा-कर-रही-है । इसकी जितनी / भी-बडाई-की-जाय वह-कम-है । यह नई क्रांति / भारत के अन्दर बच्चों-बच्चों के मुँह पर जय-हिंद / नारा में गूँज-रही-है ।

इसके लिये आपने भारतवर्ष के बाहर यानी रूस, जर्मनी, जापान, इटली, चीन, श्याम, मलाया / और बर्मा के अन्दर कुछ चुने हुये देशभक्तो को लेकर सेनायें भी तैयार-की-है । जिनमे से मुख्यतः नवयुवको की सेनाओ के नाम सुभाष-ब्रिगेट, जवाहर-ब्रिगेट तथा नवयुवतियो की / सेनाओ के नाम झाँसी-की रानी-रेजिमेन्ट आदि रखा-गया- / है । इसके सचालक क्रमशः कैप्टन शाहनवाज खाँ, केप्टन सहगल तथा / महिलाओ की सेना का प्रधान-सेना-नेत्री कुमारी लक्ष्मी है / इन सब के कमाण्डर हमारे पूज्य 'नेता जी' है ।

अभी / हाल मे बृटिश सरकार ने इन लोगो के खिलाफ मुकदमा-भी चलाया-था । मगर इन लोगो को अटूट, देशभक्ति के / कारण उसे इन लोगो को बेदाग-छोडना-पड़ा । आज दिन / हमारी अखिल-भारतीय-कॉंग्रेस-कमेटी-भी आजाद-हिन्द-फौज को / भारतवर्ष के अन्दर वही स्थान देना-चाहती-है जो / कि इस समय अँग्रेजी फौज का है ।

अत. नेता जी / का यह सराहनीय कार्य भारतवर्ष तथा ससार के इतिहास में / स्वर्ण- अक्षरो से लिखा जायगा । जय हिंद ! २३७

(ब) नेता जी श्री-सुभाष-बोस के सम्बन्ध में इधर कुछ/ समय से अफवाहों और अटकलबाजियो का बाजार इतना-गरम-हो- / उठा-है कि शायद ही कोई दिन जाता-है जब / उनके बारे मे कोई-न-कोई नया समाचार प्रकाशित न- / होता-हो। उनकी मृत्यु के समाचार सही-हैं-या-नहीं ? / यह प्रश्न तो अब पोछे-पड-गया-है और जितनी बातें नई कही-जाती-है उनसे यही निष्कर्ष निकला-है-' कि नेता जी तो जीवित-हैं-ही। अब तो वे / कहाँ-हैं-और कब प्रकट होंगे यही आजकल की चर्चाओं / का मुख्य विषय बन-गया-है। कोई उन्हें अपने देश / मे ही, कोई चीन में और कोई सीमाप्रान्त से आगे / कबीलों के क्षेत्र में-बतलाता-है। इस प्रकार की अफवाहे / फैलाना नेता जी के रहस्यपूर्ण, साहसी और निर्भीक व्यक्तित्व के / अनुरूप ही-है और यदि इनसे हम किसी परिणाम-पर / पहुँचते-हैं तो वह केवल इतना-ही-है-कि श्री /सुभाष बोस के जीवित होने मे अब सन्देह की गुंजाइश- / नहीं-है और उनके स्वदेश मे प्रकट होने का समय अब निकट-आ-गया-है।

नेता जी का भारत से- / जाना उतना अलौकिक नहीं रह-जाता जितना कि अब उनका / प्रत्यक्ष होना रहस्यपूर्ण-है। १६४

अभ्यास — ८७

राष्ट्रभाषा हिंदी का स्वरूप वही-होगा जिसमें समस्त-भारतवर्ष / के निवासी सुगमता से अपने विचारों को व्यक्त-कर-सकेंगे जो / लोग यह-कहते-है-कि राष्ट्रभषा से संस्कृत शब्दों / का अधिक से अधिक बहिष्कार किया-जाना-चाहिये। वे कदाचित / यह बात भूल-जाते-है कि वर्तमान समय की अधिकाश / प्रातीय भाषाएँ संस्कृत से-ही-निकली-है और इसलिये

स्वभावत / उनमें सस्कृत के शब्द-बहुलता से-पाये-जाते-हैं। ऐसी / अवस्था में अधिकाश भारतवासियों के लिये अतर्प्रान्तीय भाषा के रूप / मे ऐसी ही भाषा अधिक ग्राह्य और सुविधाजनक होगी जिसमें / स स्कृत के शब्द काफी हों। हमें दुख के साथ कहना- / पड़ता-है कि जो-लोग बनावटी हिंदुस्तानी भाषा का निर्माण / करना-चाहते-हैं और इस बात-पर जोर देते-हैं / कि उनमें बोल चाल के सरल शब्दों का-ही प्रयोग हो / वे साम्प्रादायिकता के आधार पर राष्ट्र-भाषा की समस्य' हल- करना-चाहते-हैं। जैसे राजनीतिक क्षेत्र में अन्य अल्पसंख्यकों को / पीछे ढकेल कर केवल मुस्लिम-लीग को महत्व दिया गया-/है और उसके साथ समझौता करने का प्रयत्न किया जाता / है उसी तरह भाषा के क्षेत्र मे केवल उर्दू वालों, के साथ समझौता करने की आवश्यकता-समझी-जाती-है । अन्य/ प्रान्तीय भाषा-भाषियों कि-असुविधा-सुविधा-का उतना ख्याल नहीं / किया जाता जितना कि उर्दू-वालों का मुसलमान कैसी राष्ट्र भाषा / स्वीकार कर-सकगे इसी पर हिंदुस्तानी के सब हिमायती अपना ' ध्यान केन्द्रित-करते हे वे यह देखने का प्रयास नहीं -करते कि वे जैसी कृत्रिम भाषा बनाने का प्रयत्न-कर /-रहे-हैं, उसको समझने लिखने और बोलने मे अनेक प्रातो / की जनता को बडी कठनाई-होगी। उसे ग्रहण करना अधिकाश/भारतवासियों को / स्वीकार-न-होगा। अत सम्प्रदायिकता के आधार पर / राष्ट्र भाषा के लिये कृत्रिम हिंदुस्तानी भाषा का विकास करने / का प्रयत्न त्याग कर हिंदी को ही अन्तर्प्रान्तीय काम के / लिए अग्रसर-करना- चाहिये और उसे ही राष्ट्रभाषा के रूप / स्वीकार-करना-चाहिये ।

हिंदुस्तानी न तो कोई-भाषा-है / और न उसका कोई साहित्य है। गूढ विषयों को व्यक्त / करने की क्षमता हिंदुस्तानी मे नही आ सकती। विज्ञान, अर्थशास्त्र /तथा राजनीति आदि विषय पर जो ग्रन्थ लिखे जायेंगे उनमे/संस्कृत शब्दों का ही आश्रय लेना पडेगा। अत हिंदुस्तानी-के/विकाश का प्रयत्न करना शक्ति का अपव्यय करना होगा। उससे / राष्ट्रभाषा-की समस्या कभी हल नही-होगी। दो लिपियों का / सीखना अनिवार्य करना बच्चों पर आवश्यक रूप से एक भारी बोझा/लादना होगा। इससे बच्चो को शक्ति और समय का क्षय होगा / किसी एक अल्पसंख्यक सम्प्रदाय के तुष्टीकरण के / लिये उनकी अवैज्ञानिक लिपि लेकर देश भर के लोग पर/लादना कभी नहीं कहा-जा सकता। राष्ट्रीय दृष्टिकोण से / लिपि की समस्या का हल करने का मार्ग यह है कि राष्ट्रभाषा के लिये केवल वही एक लिपि स्वीकार/की जाय जो वैज्ञानिकता तथा सुगमता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ हो। चूँकि यह प्रमाणित हो चुका है कि देवनागरी अन्य / सभी लिपियो से अच्छी-है अत राष्ट्रभाषा के लिये उसी / का सर्वत्र प्रचार होना चाहिये। ४७५

जय हिन्दी ! जय देव नागरी !!

[इति]

सैद्धांतिक प्रश्नों की रूप रेखा

परिक्षार्थियो के सुविधा हेतु नीचे संकेत-लिपि के सिद्धातों के आधार पर कुछ प्रश्न दिये जा रहे हैं। परिक्षार्थियो को चहिये कि वे इनका अच्छी तरह अभ्यास करलें ताकि परीक्षा के समय किसी प्रकार की असुविधा न उठनी पडे।

शिक्षकों कों चाहिये कि वे इसी प्रकार के और भी प्रश्न विद्यार्थियों को अभ्यस्त करा दे ताकि विद्यार्थी-वर्ग इसका पूर पूरा लाभ उठा सकें।

प्रश्न

१ सकेत-लिपि से क्या मतलब समझते हो ? समझा कर लिखिये।

व्यंजन

२. सकेत-लिपि में व्यजनो के चिन्हों को किस आधार से निर्धारित किया गया है ? उदाहरण सहित उत्तर दीजिये।

३. व्यजनों को मिलते समय किन २ बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिये तथा उनके स्थान निर्धारित करने के क्या नियमादि हैं ? उदाहरण देकर लिखिये।

४ वक्र तथा सरल व्यंजन रेखाओं में ल, र, म तथा न, आदि के मिलने के क्या नियम हैं ? उदाहरण सहित उत्तर दीजिये।

स्वर

५ स्वर लगाने के क्या नियम हैं और उनके कौन २ से स्थान रेखाओं के विचार से नियत हैं ? उदाहरण सहित उत्तर दीजिये।

६. हलके बिन्दु तथा हलके डैस व मोटे बिन्दु तथा मोटे डैस के अन्तर को उदाहरण सहित समझा कर लिखो।

७. दो व्यंजनो के बीच स्वर लगाने का क्या नियम है ? उदाहरण देकर लिखो।

तवर्ग

८. तवर्ग के दांये बाये से क्या मतलब समझते हो ? उदाहरण सहित उत्तर दो।

९. निम्नलिखित व्यंजनों के बाद कौन सा तवर्ग प्रयोग होगा।

(१) चवर्ग, र (नी), स (बा), ह (ऊ० नी०), न, व, य, और ल (नी० ऊ०)

(२) कवर्ग, पवर्ग, य, र (ऊ), न, स (दा) और

(३) टवर्ग, तवर्ग और म-न

स, म, न, का प्रयोग

१० निम्न व्यंजनो के बाद कौन सा 'स' का प्रयोग होगा ?

(१) कवर्ग, तवर्ग (बा), य, व, स (बा), ह (नी० ऊ०), ल (नी० ऊ०) और न-म

२. टवर्ग, चवर्ग, पवर्ग, र (नी० ऊ०)

११ निम्न व्यंजनों के बाद कौन सा 'म-न' का प्रयोग होगा।

१. चवर्ग, टवर्ग, पवर्ग, तवर्ग (बा) य, व, ह (ऊ० नी०) और ल (नी० ऊ०)

२ तवर्ग (दा), स (दा० बा०), र (नी० ऊ०), कवर्ग तथा म-न।

धारा प्रवाह

१२. संकेत-लिपि के मूल तत्व "धारा प्रवाह तथा बिना रुकावट के लिखे जाना है" इनसे आप क्या मतलब समझते है ?

शब्द चिन्ह

१३ 'शब्द-चिन्ह' से आप क्या मतलब समझते है ? इनका संकेतलिपि में क्या महत्व है समझाकर लिखिये।

स-श-ज़ वृत

१४. 'स' वृत के सरल और वक्र रेखाओं मे मिलने के क्या नियम है ? उदाहरण दे कर लिखो।

१५. 'स' वृत के आरम्भ अन्त तथा बीच में प्रयोग होने पर मात्रायें तथा स्वर लगाने का क्या नियम है ? उदाहरण सहित लिखिये।

१६. यदि आरम्भ म श्र आ, और अन्त में ई की मात्रा आवे तो 'स' वृत के प्रयोग का क्या नियम है, उदाहरण सहित उत्तर दीजिये।

१७. किन-किन परिस्थितियों मे 'स' वृत न लगाकर पूरा लिखा जाता है ?

सर्वनाम

१८. सर्वनाम से क्या समझते हो तथा इनको किन चिन्हो का आधार मान कर निर्मित किया-गया है ?

त - न - र तथा ल के आंकडे

१९. 'त' आकडे के प्रयोग से क्या मतलब समझते हो ? इनका कहाँ २ पर तथा क्या प्रयोग होता है ? उदाहरण दे कर लिखो।

२०. 'न' आकड़े के प्रयोग से क्या मतलब समझते हो ? इनका कहाँ २ पर तथा क्यो प्रयोग होता है ? उदाहरण सहित उत्तर दो।

२१ 'र' आकड़े के प्रयोग से क्या मतलब समझते हो ? इनका कहाँ २ क्यों प्रयोग होता है ? उदाहरण सहित उत्तर दो।

२२. 'ल' आकडे के प्रयोग से क्या मतलब समझते हो ? इनका कहाँ २ पर तथा क्यो प्रयोग होता है ? उदाहरण सहित उत्तर दो।

२३ त – न – र – ल आकडों के अन्तर को उदाहरण सहित समझा कर लिखो।

२४. त – न – र – आकडों मे स्वर तथा मात्रा आदि लगाने का क्या नियम है ? उदाहारण सहित स्पष्ट करो।

२५. स्थ – स्त – तथा दार – धार या त्र के आकडे के अन्तर का समझा कर लिखो।

२६. 'म्प–म्ब' आदि के प्रयोग होने पर किस नियम का पालन किया जायगा उदाहरण सहित लिखिये।

र–ल के ऊपर नीचे का प्रयोग

२७ 'र' नीचे या ऊपर का प्रयोग होगा जब कि

१ 'र' अकेला व्यजन हो, २ 'र' के पहले कोई वृत या आकड़ा न हो ३. 'म न' के पहले तथा ४ अगर 'र' पहिला अक्षर है और स्वर पहिले हो। उदाहरण सहित लिखिये।

२८ उदाहरण सहित लिखो कि 'ल' ऊपर या नीचे का प्रयोग होगा जब कि

(१) 'ल' किसी शब्द मे पहला अक्षर हो,
(२) 'ल' किसी शब्द मे अंतिम अक्षर हो,
(३) 'ल' किसी शब्द मे मध्य में आया हो।

प-ब-ज और ह के आंकड़े

२६ प, ब, ज और ह के आकडे के सम्बन्ध में जो कुछ जानते तो उदाहरण सहित समझा कर लिखो।

द्वि-त्रि-ध्वनिक मांत्राएं

३० द्विध्वनिक तथा त्रिध्वनिक मात्राओं से क्या मतलब समझते हो समझा कर उदाहरण सहित लिखो।

अर्द्ध व्यन्जन

३१ अगर किसी व्यजन को उसकी साधारण लम्बाई का आधा कर दिया जाय तो उसका क्या मतलब निकलता है? उदाहरण सहित समझा कर लिखो।

दुगने व्यन्जन

३२ अगर किसी व्यंजन को उसकी साधारण लम्बाई का दुगना कर दिया तो उसका क्या मतलब होगा उदाहरण सहित समझा कर लिखो।

३३ अगर 'न को मोटा कर उसको साधारण लम्बाई का दुगना कर दिया जाय तो उसमे क्या लगा हुआ पढा जायगा? उदाहरण दो।

व और य आंकडे

३४. व और य के आकडे का सविस्त वर्णन उदाहरण दे कर करो।

षण छण और शन

३५ षण–छण-शन के आकड़े के प्रयोग को समझा कर लिखो।

स्वर लोप करने के नियम

३६ स्वर लोप करने के नियम' से क्या मतलब समझते हो? उदाहरण सहित उत्तर दो।

कटे हुये व्यन्जन

३७. अगर किसी शब्द में कटे हुये व्यन्जन का प्रयोग आदि या अन्त में होता है तो बिना कटे काम चल जाता है ? प्रमाणित करो।

क्रिया

३८. सकर्मक तथा अकर्मक क्रियायें कौन सी है तथा उनके लिखने का क्या नियमादि है ? उदाहरण सहित लिखिये।

३९. क्रियाओं के भूतकाल, वर्तमान तथा भविष्यत काल के लिखने के क्या नियमादि हैं उदाहरण दे कर लिखो।

४०. क्रियाओं मे 'हूँगा' 'हो रहा है' तथा 'ता' के प्रयोग को उदाहरण दे कर लिखो।

४१. क्रियाओं को अगर 'ड, र, क, प, ल' तथा 'पस (वृत)' से काट दिया जाय या उसके पास लिखा दिया जाय तब कौन सा शब्द और जुडा हुआ पढा जायगा ? उदाहरण सहित लिखो।

संधि

४२. संधि के क्या नियम हैं उदाहरण सहित लिखो।

संख्या वाचक संकेत

४३. निम्नलिखित अंकों को संकेत लिपि मे अंकित करिये। दूसरा, चौथा, आठवा, दोनो, सातो, दुगना, छ सौ, सात हजार आठ लाख, पाच करोड, तीन अरब, दस हजार, दस लाख, दस करोड, दस अरब, दस खरब आदि।

विराम

४४. अर्ध विराम, दोहराने का चिन्ह, बातचीत के डैस का चिन्ह, पूर्ण विराम आदि का चिन्ह लिखने के क्या नियम है ? उदाहरण देकर लिखो

वाक्यांश

४५. वाक्याश बनाने के लिए किन किन नियमों का पालन किया गया है ? उदाहरण देकर लिखो।

वर्णाक्षरों से काटना

४६ शब्दों का वर्णाक्षरों मे काटने का क्या मतलब समझते हो कम से कम चार उदाहरण प्रस्तुत करो।

जुट शब्द

४७. 'जुट शब्द' से क्या मतलब समझते हो कम से कम चार उदाहरण प्रस्तुत करो।

पुनः शीघ्र-लिपि लेखकों से

यह पहले ही आरम्भ मे पृष्ठ १४ मे दिये हुये पाठ 'विद्यार्थियों से निवेदन' के अन्तर्गत बताया जा चुका है कि एक कुशल शीघ्र-लिपि-लेखक बनने के लिये किन किन बातो का होना आवश्यक है। लेकिन यहाँ पुन' कुछ और विशेप आदेश लिखे जा रहे है जो कि कुशल शीघ्रलिपि लेखक बनने मे विशेष सहायक है इनका ध्यान पूर्वक अवलोकन करना चाहिये।

१. आरम्भ से ही नोटबुक पर लिखकर अभ्यास करना चाहिये तथा लेखनी को बहुत जोरसे नही पकडना चाहिये। बदन का बोझ कभी भी कापी या टेबिल पर नही डालना चाहिये।

२ प्रतिदिन निश्चित समय पर निश्चित अवधि तक अभ्यास अवश्य करना चाहिये। बीच बीच मे अतर देकर किया गया अभ्यास कभी भी लाभप्रद नही होता। कम से कम दो घटा प्रति-दिन समय अवश्य दिया जाना चाहिये।

३ आरम्भ से ही संकेत-लिपि की रेखाओं का अभ्यास संभाल कर करना चाहिये। आरम्भ मे विगडी हुई रेखा फिर कभी नही सुधरेगी और गति मे लिखते समय बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। बिगडी हुई रेखाओ के कारण संकेत शुद्ध नहीं बन पाते अत इनको पुन नागरी लिपि मे अनुवाद करने मे बडी दिक्कत होती है। स्वच्छता पर भी विशेष ध्यान देना चहिये।

४ रेखाओं तथा संकेतो को लिखते समय हमेशा नियमों के पालन का, धारा प्रवाह का तथा सुचारुता का ध्यान अवश्य रखना चाहिये। रेखाओ की लम्बाई, छोटाई, पतली,

मोटी तथा वृतो एवं आकड़ो के छोटे बड़े आदि पर भी विशेष ध्यान देना चाहिये। अन्यथा इससे सदैव हानि होने का डर रहता है तथा संकेत अशुद्ध होजाते हैं जो कि अनुवाद करने मे भ्रम पैदा करते है। संकेत अनावश्यक रूप से बड़े भी न बने कारण इनसे जगह व समय ज्यादा लगता है। संकेत को जहाँ तक हो सके मिला कर पास पास लिखना चाहिये।

५. शब्द-चिन्हो, संक्षिप्त-चिन्हो, सर्वनामो, वक्याशो तथा एक ही वर्ण से उच्चारित होने वाले विभिन्न संकेतों आदि को अच्छी तरह से आजिह्व कर लना चाहिये। जिसकी लेखनी से जितनी जल्दी और अधिक यह निसृत होगा उतना ही अधिक सफल लेखक वह बन सकेगा।

६ अभ्यासो को तो इतना अधिक सिद्धहस्थ करना चाहिये कि वक्ता के मुख से वक्तृता निकलते ही बिना सोचे ही लिख जाना चाहिये अन्यथा वक्ता बहुत दूर निकल जावेगा तथा फिर उसे पकड़ना बहुत ही कठिन है। छूटी हुई वक्तृता फिर अपूर्ण ही रह जावेगी। वक्तृता लिखते समय एकाग्र चित होकर लिखना चाहिये। वक्ता के आवाज तथा उच्चारण पर विशेष ध्यान देना चाहिये। अगर किसी विशेष विषय की वक्तृता लिखनी हो तो पहले उस विषय के आवश्यक शब्दो का अभ्यास कर लिया जावे तो और भी अच्छा होगा।

७. गति बढ़ाने का नियम —

उपरोक्त जितने भी नियम दिये गये है वे सब गति बढ़ाने मे बहुत ही सहायक हैं तथा •गति भी काफी बढ़ती है लेकिन निम्न

प्रकार मे अाभ्यास करने पर गति मे विशेष वृद्धि होगी तथा लेखक एक कुशल शीघ्र लिपि लेखक बन सकेगा।

"पुस्तक मे दिये हुये अभ्यासो का खूब अच्छी तरह से लिखकर मनन करना चाहिये। हर एक अभ्यास को कम से कम १०—१० बार बोलवा कर लिखना चाहिये। बोलवाने का नियम यह होना चाहिये कि पहली बार अभ्यास एक निश्चित गति से, जिससे कि आप आसानी लिख सके, बोलवा कर लिखें। ऐसा करने पर जिन शब्दो के संकेतों पर हाथ जरा भी रुके उसे लिख कर याद कर लेवे। पुन उसी अभ्यास को उसी गति मे बोलवा कर लिखे। अब की ऐसा करने से किसी भी संकेत पर हाथ नही रुकेगा। पुन' इसे अनुवाद कर के बोली हुई वक्तृता से मिलानकर लेवे। पुन' तीसरी, बार चौथी बार आदि ऊपर बताये हुये नियम के अनुसार बोलवाते जावे और हर बार बोलने की गति मे वृद्धि कम से कम ५-५ शब्द प्रति मिनट की लगातार कराते जावे। इस तरह १०-१२-बार अभ्यास अवश्य करें बीच बीच मे जिन सकेतो पर हाथ रुके उन्हे अवश्य लिख कर याद करते जावे। गति अवश्य बढ़ेगी। जब पुस्तक मे दिये हुये अभ्यास समाप्त हो जावे तो बाहर से किसी भी हिन्दी की सरल पुस्तक अथवा अखवार से ऊपर दिये गये नियमो के आधार पर बराबर अभ्यास करते जावे। किसी भी अभ्यास को उतनी बार अवश्य कर लेना चाहिये जब तक कि वह गति के साथ बिना किसी हिचक के लिखा जा सके। इनका अनुवाद

भी अवश्य कर लेना चाहिये जिससे जो कुछ भी अशुद्धियाँ हो वे सुधारी जा सके ऐसा करने से गति मे विशेष वृद्धि होगी ।'

इसी बीच आम सभाओ आदि मे जाकर वहां पर दिये गये भाषणो आदि को भी लिखना चाहिये इससे सभाओं आदि के भाषणों को लिखने की आदत पड़ेगी तथा हिचक भी छूटती जावेगी ।

नं० ८

उपरोक्त नम्बर को लिखते हुये जो पाठक अपना नाम और पूरा पता लिख भेजेंगे उनका नाम अपने यहाँ के रजिस्टर मे अंकित कर लिया जायगा और फिर इस सांकेतिक-लिपि की कठिनाइयों के सम्बन्ध मे उनका कोई भी पत्र आने पर उत्तर शीघ्र ही दिया जायगा। उत्तर के लिए उनको जवाबी लिफाफा या पोस्टकार्ड अवश्य भेजना होगा। जो सज्जन घर पर आकर पूछना या समझना चाहेंगे उनको बराबर बिना किसी प्रकार का शुल्क लिए समझाया या बताया जायगा।

आविष्कर्त्ता

पुस्तक मिलने का पता :—

श्री विष्णु आर्ट प्रेस,

ऋषिकुटी, जीरो रोड,

इलाहाबाद—३

मुद्रक—दि इलाहाबाद ब्लाक वर्क्स लि०, जीरोरोड, इलाहाबाद।